पंचायतों द्वारा सच्चा लोकतंत्र

भारत के सच्चे लोकतंत्र में ग्राम ही आधारभूत इकाई होगा। पंचायतें तो जनता की सेवा के लिए रहेंगी ही। यदि एक गाँव भी पंचायतराज, जिसे अंग्रेजी में 'रिपब्लिक' कहते है, स्थापित करना चाहेगा, तो उसे कोई रोक नहीं सकता। २० व्यक्ति केन्द्र में बैठकर सच्चे लोकतंत्र को संचालित नहीं कर सकते। उसका संचालन तो नीचे से प्रत्येक ग्राम की जनता द्वारा ही करना होगा।

हरिजन, १८-१-४८

मैं तो कहूँगा कि यदि गाँव नष्ट होता है, तो भारत भी नष्ट होकर रहेगा। ऐसी हालत में भारत असली भारत नहीं रह जायगा। दुनिया में वह अपना दायित्व नहीं निभा सकेगा। गाँव का पुनरुद्धार उसी हालत में संभव है, जब उसका तनिक भी शोषण न हो। बड़े पैमाने के औद्योगीकरण के कारण जब प्रतिस्पर्धा और बाजार की समस्याएँ उत्पन्न होगी, उस हालत में निश्चय ही ग्रामीणों का सक्रिय अथवा निष्क्रिय शोषण होकर रहेगा। इसलिए हमारे सारे प्रयत्न ग्रामों को इस तरह आत्मनिर्भर बनाने पर केन्द्रित होने चाहिए, जिससे वे मुख्यतः उपयोग के लिए ही उत्पादन करें। अगर ग्रामोद्योग की यह विशेषता सुरक्षित रहे, तो ग्रामीणों द्वारा ऐसे आधुनिक यंत्रों और औज़ारों के प्रयोग पर कोई एतराज नहीं होना चाहिए, जिन्हे वे स्वयं बना सकते हों और जिनका प्रयोग करने में वे समर्थ हों। एतराज सिर्फ यह है कि यंत्रों का प्रयोग दूसरों के शोषण के लिए नहीं होना चाहिए।

हरिजन, २९-८-'३६

—गांधीजी

विनय

पूज्य विनोवाजी की उत्तर-प्रदेश की पद-यात्रा में भूदान-यज्ञ-आरोहण की सम्भावनाओ की आशाकिरण प्रथम मगरोठ ने दिखायी। तव से इसकी ओर देखने का लोगो का दृष्टिकोण सशय से ऊपर उठने लगा, कुछ अनुकूल भी हो चला। उत्कल मे इसकी परिणति कोरापुट जिले ने कर दिखायी। पर वह ठहरा आदिवासी, वनवासी, भोला-भाला, प्राथमिक समाजवृत्तिवाला, दरिद्री, वेकार जमीन का क्षेत्र। विनोवाजी घृतिपूर्वक वढते ही गये। मदुराई जिले की आधुनिकतम शिक्षित जनता ने जव अपनी साल में तीन फसलोवाली उर्वरा कीमती भूमि ग्राम-समूह दान मे देना शुरू किया और विनोवाजी के न जाते हुए भी जव महाराष्ट्र की चट्टान जैसी तर्क-प्रधान वुद्धिवादी पृष्ठ-भूमि में एक पूरा महाल (थाना) समर्पण हुआ, तव से भूदान की एक तरह पूर्णाहुति ही मानी गयी। महाल या थाना-दान ही क्यो, अव तो तिरुमगलम् ने तालुका-दान का सकल्प कर लिया। जव तालुका-दान की वात आयी, तव उसमें से नगर कैसे छूट जाय? आज तो शहर वुद्धि के, वैभव के और सत्ता के केन्द्र है। क्या शहराती अग्रसोची न होगे? क्या उनमें दूरदर्शिता नही है? शोपित, पीडित, उपेक्षित, दलित, तिरस्कृत मानव-महासागर अव चुप वैठने-वाला नही है। तमनिद्रा से वह उठ रहा है और उसने भारत के अगुवाओ के सामने दो मार्ग रख दिये है साम्ययोग और साम्यवाद। भारत की प्रकृति के अनुकूल पहला है और उसीको अपनाने में कल्याण है। थोडे ही दिनो पहले विनोवाजी ने केरल मे प्रवेश किया है, जहाँ की जनता ने दूसरे प्रयोग को मौका दिया है। अव तो सर्वस्व-समर्पण का सवाल है। पर उसमें हानि कहाँ?

कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ का एक गीत याद आ रहा है। भिखारी भीख माँगने को प्रस्तुत है। क्षणभर में दूर से एक दिव्य विभूति आ रही है। गरीव के दिल में आशा की उमग वढती जाती है। वह महान् निकट आ पहुँचा। स्वर्गीय प्रभा से उसने उस गरीव को आलोकित किया। गरीव 'भिक्षा देहि'

की वृत्ति में था। इतने ही में उस पुरुष ने कहा, "मेरे लिए कुछ लाये हो ? लाये हो, तो दे दो" माँगनेवाले ने अपनी जीर्ण पोटली कमर से उतारकर एक दाना दे ही दिया। दिये विना उससे रहा कैसे जाता ? शाम को जव घर आकर भिखारी ने अपनी पोटली (पुतडी) उँडेली, तो क्या देखता है ? दाने का स्थान सुवर्ण-कणिका ने लिया है। अव वह पछताकर कहता है, यदि मैंने सर्वस्व-समर्पण किया होता !

भारत में सुदामा और शवरी ने नैवेद्य चढाया। महावीर और गौतम ने राज्यत्याग किया। हरिश्चन्द्र और मयूरध्वज, शिवि और दधीचि, कर्ण और वलि ने सर्वस्व-समर्पण का उदाहरण रखा। 'रघुवश' में राजा रघु के दान का वर्णन कविकुलगुरु कालिदास ने किया है। "सर्वस्व देकर राजा रघु प्रासाद के वाहर वृक्ष के तले मृत्तिका-पात्र में वना भोजन पत्तल पर पा रहा है।" महाकवि माघ ने दान देकर सर्वस्व लुटाया। इसका उसे दुःख न था, जितना कि उस अवस्था मे आनेवाले असहाय को सहायता दे न सका, इसकी पीडा। राजा और रक, महाजन और मजदूर, ब्राह्मण-शूद्र तक, मानव से दानव तक, क्या स्त्री क्या पुरुष, नर, वानर, किन्नर, यक्ष, राक्षस, आर्य, दस्यु नागरिक, ग्रामीण वा वनवासी सवके अनुपम उदाहरण हमारी सस्कृति को सुशोभित करते हैं और **"मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येव"** हमारी गति अप्रतिहत करते हैं।

यह केवल दान, त्याग या समर्पण की वात नही। हमारी समाज-रचना की ही वह खूवी थी कि हमारी उज्ज्वल परपरा हजारो वर्षों के प्रत्याघात मे जर्जर होकर भी जीवित है। उसे अव प्राणवान्, तेजस्वी वनाना है। यही युगपुरुष की पुकार है।

प्रख्यात लेखक 'टॅवरनियर' ने लिखा था कि भारत की ग्राम-पचायतो ने वहाँ के कुश (काँस) घास के समान भारतीय सस्कृति और जन-मानस मे अपनी जडे गहरी जमायी हैं। साम्राज्य आते और जाते रहे। कुछ क्षण के लिए वे झुकी भी, कभी कटी भी। पर दूसरे क्षण उनका अपना सिर ऊँचा ही उठता रहा।

डॉ० एनीबेसेंट ने लिखा है कि ईस्ट इंडिया कम्पनी के जमाने में बगाल मे हर चार सौ जन-सख्या के पीछे एक स्कूल था। दस हजार वर्षो से ज्ञान तथा कला की परम्परा इस देश में चली आ रही है।

न राज्य नैव राजासीत् न दण्डो नैव दाण्डिक'।
धर्मेणैव प्रजा सर्वा हि रक्षन्ति स्म परस्परम्॥

—तब न कोई राजा था, न राज्य, न दण्ड, न सजा देनेवाला। प्रजा धर्म से ही परस्पर का, एक दूसरे का रक्षण कर लेती थी।

तुलसीदासजी ने लिखा है

'दण्ड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज।
जीतिय मनहि सुनिअ अस रामचन्द्र के राज॥"

दण्ड, लकडी केवल यतियो के लिए स्थूल आधार थी यानी रामराज्य में सजा रह नहीं गयी थी।

अथर्ववेद के प्रख्यात दो उदधरण और ऋग्वेद का एक उद्धरण, जो यहाँ दिये जा रहे है, उनसे हमारे आदर्श की कल्पना स्पष्ट हो जाती है

यत्ते मध्य पृथिवि यच्च नभ्य यास्त ऊर्जस्तन्व सवभूवु।
तासु नो धेह्यभि न. पवस्व माता भूमि पुत्रोऽह पृथिव्या॥—अथर्ववेद

—हे मातृभूमि! तेरे पवित्र शरीर के अन्तरतम, मध्य तथा बाह्य भाग से जो वस्तुएँ उत्पन्न होती है, उनसे तू हमे समृद्ध कर। तू हमारी जननी है और हम तेरे पुत्र है। हमे पवित्र बनाकर रख।

जन बिभ्रती बहुधा विवाचस नाना धर्माण पृथिवी यथैकसम्।
सहस्र धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती॥—अथर्ववेद

—तू अनेक भाषाभाषियो, अनेक मतमतान्तरो को माननेवाले हमें एक परिवार में रहनेवाले सुहृदजनो की भांति धारण करती है। तू दुधारू गाय जैसी हमारे लिए ऐश्वय की सहस्र-धाराएँ प्रवाहित कर।

स्वस्ति पथामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता स गमेमहि॥—ऋग्वेद ५।५१।१५

—कल्याणप्रद मार्ग पर हम चलते रहे, सूर्य-चन्द्र के समान वार-वार दान करनेवाले, अहिंसक तथा ज्ञानी का साथ हमें मिले।

अन्त में पूज्य विनोवाजी के शब्दो में ही ग्रामदान के वारे में कल्पना रख देना उचित होगा :

"हम अपने हृदय की वात कहेंगे। जमीन और संपत्ति, शक्ति और वुद्धि का मालिक परमेश्वर है, उनकी वृद्धि का कारण समाज है। हम सव तो उसके सेवक है। हरएक को उसके पेट के लिए जितना जरूरी है, उतना ही मिलना चाहिए। मालकियत का अधिकार किसीको नहीं। भूदान-यज्ञ की यह अन्तिम वात है। ग्रामदान की यह वात वड़ी क्रान्तिकारी सावित होनेवाली है।

"लोग समझते है कि हर चीज सरकार ही करेगी। यह विलकुल गलत विचार है। लोकसत्ता में लोगो को अलग रखा जाय, तो सरकार क्या चीज है? इसलिए गांव जाग जायँ और अपना भला-वुरा करने की सत्ता किसी को न दें। लोग गांव-गांव में स्वराज्य वनायें। एक वनो और नेक वनो।

"परिवार में जितना हो,उतना वांटकर खा लेते है और सव मिलकर उत्पन्न वढाते है। क्योकि परिवार जिन्दा समाज है। कुटुम्व में प्रेम है और प्रेम ही मनुष्य का प्राण है। जो नियम परिवार को, वही गांव को और देश को।

"दुनिया में दुःख है, दरिद्रता है और भुखमरी भी। इन सवका उत्तर नहीं मिलता, तो शान्ति कैसे रहेगी? छोटे-छोटे लोगो को अपनी ताकत का भान होना चाहिए। वह तव होगा, जव आप एक दूसरे की चिन्ता करना शुरू कर दें। उससे नैतिक ताकत वनेगी। फिर हम श्रीमानो पर भी असर डाल सकेंगे। उनको प्रेम से समझा सकेंगे। यह हमारा रास्ता है। समाज के लिए गरीव अपने श्रम का एक हिस्सा देंगे, तो एक वड़ी पुण्यशक्ति निर्माण होगी। वह उनकी तपस्या होगी। त्याग और तपस्या से आपकी ताकत वनेगी।

"यह सारा भगवान् का रूप है। जो सामने वैठे है, वे चैतन्य है। वही वास्तव में चिदवरम् है, हम उनको भूल गये है। भगवान् का प्रेम ही

रूप है। जिसके सिर से पसीने की गंगा बहती है वही सच्चा ईशभक्त है। यह सारा धर्मकार्य है—धारणात् धर्मः। वह सबको धारण करनेवाला है। पर इसके साथ अर्थ भी है। धर्म के साथ अर्थ होना कोई पाप नहीं। विष्णु के साथ लक्ष्मी का होना या शिव के साथ शक्ति का होना या गणेश के साथ सरस्वती का होना कोई पाप है क्या? उससे तो दोनो गुण आ गये। खाने में मीठा और देखने में सुन्दर। केवल ऊपर-ऊपर देखने से काम नहीं चलेगा। आप गहराई में जाइये। इसी दृष्टि से आप इस आन्दोलन को ओर देखिये।

"भारत में आत्मज्ञान की परम्परा है ही और विज्ञान का पूरा लाभ हम सर्वोदय-विचार में लेते हैं। लोग पूछते है, क्या ग्रामदान में पुराने औजार चलेंगे? ग्रामदान क्या कोई पुरानी चीज है? उसके साथ नये-नये औजार जुड़ेंगे।

"लोगो में आत्म-विश्वास नहीं। कहते हैं, यह कलियुग है। कलियुग में महात्मा गांधी जैसे सत्पुरुष हो गये और त्रेता में रावण जैसा राक्षस। मनु कहते हैं कि कलि में लोग नारायण-परायण होंगे। वेद कहता है 'अय मे हस्तो भगवान्! कराग्रे वसते लक्ष्मी। प्रभाते करदर्शनम्। अय मे भगवत्तर। यह मेरा हाथ भगवान् ही है, इसके अग्र में लक्ष्मी है। प्रात उसीका दर्शन करना चाहिए। वह तो नियति से, तकदीर से भी बढ़कर है।

"लोग पूछते हैं, आपके कार्यकर्ता कहां है? अब समय थोडा बचा है। यह काम कैसे पूरा होगा? हम कहते है कि हमारे ३६ करोड कार्यकर्ता हैं। ये जो मूर्तियां यहां बैठी हैं, उन्हें हम भगवान् की मूर्ति समझते हैं। यह काम पूरा होगा जरूर। क्योंकि यह भगवान् की इच्छा है। जैसे मृग नक्षत्र आता है, तो एक दिन में बारिश से हिन्दुस्तान की कुल जमीन तर हो जाती है। एक ही दिन में दीपावली पर घर-घर में प्रकाश होता है। एक ही दिन गांव-गांव होली जलती है। उसी तरह गांव-गांव में भूदान का पैगाम पहुंचा दीजिये, तो आप देखेंगे कि एक ही दिन में कुल गांवो की जमीन का बँटवारा हो सकता है। "जागिये रघुनाथ कुँवर"।

"ग्रामदान की घटना दुनिया के इतिहास में अद्‌भुत गिनी जायगी। इसमें किसी प्रकार का दवाव नहीं है। इससे दुनिया में शान्ति की स्थापना हो जायगी। यह विश्वशान्ति के लिए वोट है। विश्वशान्ति स्थापित करने में वह मददगार होता है। एटम-हाइड्रोजन वम से भी ज्यादा शान्ति ग्रामदान में है। ग्रामदान वरदान है।

"आपने बहुत ही पवित्र कार्य किया है। आपको मेरे भक्तिभाव से प्रणाम।"

उपर्युक्त विवेचन से खयाल मे आयेगा कि:

१. भारत की एक आध्यात्मिक परपरा है, जिसमें मानव त्याग, प्रेम, करुणा और अद्वैत (अभेद) भावना को महत्त्व देता है। वह आत्मौपम्य वुद्धि को परम मानता है। वह जानता है कि जगत् मे जो कुछ है, वह सव ईश्वर का है। अपना कुछ भी नही – न धरती, न सपत्ति, न शक्ति, न वुद्धि। अत विश्वपुरुष को अर्पण करके ही उससे जो मिले, उसे भोगना है।

२ परिवार मे एक-दूसरे का खयाल और चिन्ता की जाती है, इसीलिए उसमें आनन्द की अनुभूति होती है। पर वह आज सीमित है "मैं और मेरे" तक। उसे "वसुधैव कुटुम्वकम्" तक ले जाना है और उसका मुख्य कदम ग्रामदान है।

३. ग्रामदान में केवल धर्म की वात नही है, उसमें अर्थ भी है। अर्थात् गाँव की आर्थिक उन्नति भी उसमे निहित है। इतना ही नही, उसमें आधुनिकतम विज्ञान के लिए अवश्य स्थान है, वशर्ते कि विज्ञान चन्द व्यक्तियों के हाथ में शोषण का साधन न वने। वह सारी जनता की भलाई का पहले ध्यान रखे। विज्ञान मानव के लिए है, न कि मानव विज्ञान के लिए। मानवता विज्ञान से श्रेष्ठ है।

४ ग्रामदान इससे भी आगे वढता है। वह आत्मनिर्भर होना चाहता है। क्या उसकी जीविका, क्या उसका प्रवन्ध, वह दूसरे के हाथ मे अपने को अपने गांव को देना न चाहेगा। न वह किसी पर अपना अधिकार चलायेगा। शासन और कांचन-निरपेक्षता उसका प्रयत्न होगा।

५ इस तरह वह दुनिया से भय और हिंसा को हटाकर विश्वशान्ति के ध्येय की ओर कदम बढायेगा।

यह सब हमारी प्राचीन परम्परा में था और अब भी होकर रहेगा। क्योंकि यह जमाने की माँग है, युगपुरुष की पुकार है और ईश्वर चाहता है। आइये, हम इस क्रान्ति-वर्ष में इसे सफल बनायें।

काशी
मई-दिवस, १९५७

—दादाभाई नाईक

अनुक्रम



ग्राम-दान

स्वराज्य तो मिला, पर लोग परतन्त्र : १ :

कोरापुट जिले की जनता ने भू-दान का बहुत स्वागत किया है, इसलिए हमने इस जिले में अपनी यात्रा दो महीने और बढायी है। यहाँ पर अब तक तेरह हजार दाताओ से अस्सी हजार एकड जमीन मिली है। यह कोई छोटी बात नही है। लेकिन हम चाहते है कि इस जिले से एक लाख दान-पत्र और चार लाख एकड जमीन हासिल हो। हमने हिसाब लगाकर देखा है कि यहाँ पर सवा लाख लोगो के पास जमीन है। अगर हमसे पूछा जाय, तो हम अपने हृदय की बात कहेंगे कि सवा लाख दान-पत्र मिलने चाहिए। लेकिन यह तो लोगो की इच्छा-शक्ति और सद्भावना पर निर्भर है। हम जानते है कि एक निश्चित मुद्दत के भीतर सब लोगो के पास पहुँचना मुश्किल हो जाता है, इसलिए हमने एक लाख दानपत्र का इष्टाक सामने रखा है।

भूदान का अन्तिम कदम

यहाँ पर हमें दो सौ से ज्यादा पूरे गाँव मिले है। यह इस बात की निशानी है कि इस जिले के लोगो के हृदय में हमारी बात पहुँच रही है और उनके दिलो को उससे समाधान होता है। भू-दान-आदोलन की यह एक विशेष बात है कि इसमें से समग्र ग्रामदान आरम्भ हुआ है। भू-दान-आन्दोलन का यह अन्तिम कदम है। उसका पहला कदम था, गाँव में कोई भी भूमिहीन नही रहना चाहिए और अन्तिम कदम यह है कि गाँव में कोई भी भूमि-मालिक न रहना चाहिए। जमीन और सम्पत्ति का मालिक परमेश्वर है। हम सब तो उसके सेवक है। परमेश्वर ने जो जमीन और संपत्ति दी है तथा और भी जो अपार देनें दी हैं, वे सबके लिए है। अगर

हम अपनी मालकियत बनाते हैं, तो ईश्वर की जगह लेते हैं। इसलिए हमें मालकियत छोडकर सेवकपन लेना चाहिए। हरएक को उसके पेट के लिए जितना जरूरी है, उतना मिलना ही चाहिए, उसका यह अधिकार है। परन्तु मालकियत का अधिकार किसीको नही है। भूदान-यज्ञ की यह अन्तिम बात है। हम देख रहे हैं कि ग्रामदान की यह बात बडी क्रान्तिकारी साबित होनेवाली है।

नागरिकों का कर्तव्य

हमें रोज गाँव-के-गाँव मिल रहे हैं। इस सम्बन्ध में नागरिको का भी बडा कर्तव्य है। आप नागरिक है, इसलिए आपको समझना चाहिए कि आपके जिले में एक बडा कर्तव्य है। आपको यह भी समझना चाहिए कि जब आपके जिले में एक बडा आन्दोलन चल रहा है और छोटे-छोटे भाई त्याग कर रहे हैं, तो नागरिको को भी उनके कन्धे-से-कन्धा लगाकर त्याग करना चाहिए। त्याग कडवी चीज नही है, बल्कि बडी मीठी चीज है। जिसने उसका स्वाद चखा है, वह उसकी मिठास को जानता है। हमने तो उसका स्वाद खूब चखा है।

अगर आप सबकी सेवा करें और सबकी चिन्ता करें, तो सब आपकी चिन्ता करेंगे। आज करोडो लोग अपने-अपने स्वार्थ के लिए चिंतित है और वे सोचते हैं कि हम अपने स्वार्थ के लिए सोचेंगे, तभी स्वार्थ सधेगा। लेकिन तुलसीदासजी ने इससे बिलकुल उल्टा कहा है और हमारा अनुभव भी वैसा ही है। उन्होंने कहा है, "परहित बस जिन्हके मनमाहीं, तिन कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं।" जिसके मन में परहित बसा हुआ है, उसको इस दुनिया में कोई भी चीज दुर्लभ नही है, उसे हर चीज मिल सकती है। समझने की बात है कि अगर हम समाज को भर-भर के देंगे, तो भी आखिर दो ही हाथो से देंगे, सर्वस्व देंगे तो भी दो ही हाथो से देंगे। इसलिए वह भी बहुत ज्यादा नही होगा। लेकिन जब हम उसके बदले में कुछ पायेंगे, तो लाखो हाथो से पायेंगे। जो दो हाथो से देता है, वह अनन्त हाथो से पाता है। लेकिन जो अपने एक हाथ से भी नही देता, वह अपने एक हाथ से दूसरे हाथ को काटता है।

अगर हमें त्याग का मौका मिलता है, तो उससे वढकर इस नर-देह में दूसरा कोई भाग्य नही हो सकता। मानव-जन्म में त्याग का मौका मिलता है, इसीलिए मानव-जन्म का महत्त्व गाया गया है। गाँव-गाँव में त्याग हो रहा है, तो आप-जैसे शहरवालो को भी इसमें योग देना चाहिए। आपको सपत्ति-दान के जरिये त्याग करने का मौका प्राप्त हो रहा है। हम चाहते हैं कि हर कोई अपनी सपत्ति का छठा हिस्सा समाज के लिए जिन्दगी भर देता रहे। जैसे मसाले से भोजन का स्वाद वढता है, वैसे ही त्याग से भोग मधुर होता है। त्याग से वढकर अधिक मीठा मसाला कोई नही। हम तो चाहते हैं कि हर घर में हमारी वैंक वने। सपत्ति-दाता हमारे निर्देश के अनुसार दान का पैसा खर्च करेंगे। मैं तो चाहता हूँ कि सिर्फ शहरवाले ही नही, गाँव के लोग भी अपने अनाज का एक हिस्सा गाँव के लिए हर साल देते रहें। अभी गाँव-गाँव में जमीन वँट रही है, तो शहर के लोग वीज-दान, वैल-जोडी का दान और कूपदान दे सकते है। हिन्दुस्तान का हर व्यक्ति अगर यह व्रत लेता है कि अपनी सपत्ति का एक हिस्सा अपने परिवार के वाहर, समाज के लिए खर्च करना है, तो हिन्दुस्तान की सूरत वदल जायगी।

युग हमें नहीं, हम युग को वनाते हैं

कोरापुट में दो सौ से अधिक गाँवो के लोगो ने अपनी जमीन की मालकियत छोड़ दी है। एक गाँव में हमने जमीन का पुनर्वितरण किया था, तो जिस मनुष्य के पास पहले चौवीस एकड जमीन थी, उसे बँटवारे के वाद साढे तीन एकड़ मिली। उसने वडे प्रेम से वह साढे तीन एकड का प्रमाण-पत्र ले लिया। उसी गाँव के एक भूमिहीन भाई को बँटवारे में पाँच एकड जमीन मिली, क्योकि उसके घर में ज्यादा व्यक्ति थे। यह घटना इसी कलियुग की घटना है, सत्ययुग की नही। युग तो अपने मन का होता है। युग तो हम जैसा वनाना चाहते हैं, वैसा वनता है। कलियुग कहलानेवाले इस युग में गाधीजी जैसे महापुरुप हुए और त्रेतायुग में रावण जैसा राक्षस हुआ। इसलिए युग हमें नही वनाता, हम ही युग को वनाते हैं। एक भाई हमसे कह रहे थे कि यह कलियुग चल रहा है, इसमें क्या काम हो सकता है? हमने उनको जवाव दिया कि आप

तो शास्त्र देखकर ही कह रहे हैं कि यह कलियुग है। लेकिन ह
में पढ़ा है कि कलियुग के लोग नारायण-परायण होते हैं। उनक
दास के भागवत का एक वाक्य भी सुनाया, जिसमें कहा गया है कि
के लोग कलियुग में जन्म लेना चाहते हैं, क्योंकि कलियुग में भक्ति व
है। इसलिए यह पापी युग नहीं है, बल्कि नारायण-परायण युग
मानते है कि हमारा जीवन धन्य है, क्योंकि हम इस युग में जन्मे हैं।
जीवन में सैकडो सतो का सहवास पाया है। हिन्दुस्तान में अस
इसी युग में पैदा हुए हैं। जिनका नाम दुनिया में मशहूर है, केवल
पुरुष नही है। महापुरुष तो रत्न की भांति गांव-गांव में छिपे हुए
के अदर असख्य हीरे होते है। उनमें से कुछ ही हीरे बाहर निकल
चमक उठते है। हम मानते है कि जिन लोगो ने जमीन की मालकि
बँटवारे में बहुत थोडी जमीन स्वीकार की है, वे महापुरुष हैं। उ
गाथा गाने के लिए हम घूम रहे हैं।

ग्रामदान के चार मुख्य काम

इस जिले के ग्रामदानी गांवो में हमें चार काम करने होगे

१ जब जमीन बँटेगी, तब किसानो को जमीन की पूर्ति में औ
देनी होगी।

२ खेती की पूर्तिस्वरूप ग्रामोद्योग खडे करने होंगे। हम
पर बहुत जोर देते है। १९१६ से लेकर १९४८ तक यानी ३२ सा
ग्रामोद्योग का ही काम किया है। गाधीजी के जाने के बाद बाबा घू
लेकिन अगर गाधीजी होते, तो आज वे ही घूमते होते और बाबा अप
में ही लगा हुआ रहता। हमने बत्तीस साल तक जो काम किया है, उ
के लिए हमने यह काम शुरू नहीं किया है। हमने बहुत परिश्रम
है कि ग्रामोद्योग का काम जमीन के बँटवारे के बिना नहीं फल-फ
अब जब कि पूरे गांव-के-गांव मिल रहे हैं, तब उन गांवो के

३ हमें गाँव-गाँव में तालीम शुरू करनी होगी। हमारी तालीम ग्रामोद्योग प्रधान, आध्यात्मिक और व्यावहारिक होगी। तालीम के जरिये रामायण, भगवत्गीता आदि पुस्तकें गाँव-गाँव में पहुँचानी होगी। गाँववालो को उद्योग का ज्ञान भी देना होगा, ताकि वे उद्योगो मे प्रवीण वनें। इस प्रकार की नयी तालीम हम चलाना चाहते हैं।

४ गाँव-गाँव में आरोग्य की योजना शीघ्रता से करनी होगी। इसके वाद कई काम करने होगे। लेकिन ये चार मुख्य काम है। नागरिको को इसमें योग देना चाहिए।

मालिक जनता, सेवक सरकार

स्वराज्य-प्राप्ति के वाद यहाँ के लोग परतन्त्र हो गये है। वे समझते है कि हर चीज सरकार ही करेगी। यह विलकुल गलत विचार है। इससे ज्यादा भयानक विचार दूसरा कोई नही है। सरकार वाल्टी है और जनता कुआँ। कुएँ के पानी का एक छोटा-सा हिस्सा वाल्टी में जाता है। उसी तरह जनता की शक्ति का एक अत्यन्त अल्प हिस्सा सरकार के पास होता है। लेकिन इन दिनो एक वडा भ्रम फैला हुआ है कि वाल्टी में ही ज्यादा पानी आता है। वस्तुत सरकार की शक्ति शून्य-जैसी है और जनता की शक्ति एक के अक जैसी है। एक और शून्य, दोनो मिलकर दस वनते है। इसी तरह जनता और सरकार, दोनो की शक्ति मिलकर वहुत वडी शक्ति पैदा होती है, इसमें कोई सन्देह नही है। लेकिन अगर दोनो का अलग-अलग तौल करेंगे, तो जनता की शक्ति एक के जितनी है और सरकार की शून्य जितनी, यह मालूम होगा। लोक-सत्ता मे लोगो को अलग रखा जाय, तो सरकार क्या चीज़ है? सरकार तो आपके चुने हुए नौकरो से वनती है। कोई अगर यह कहे कि उसकी शक्ति उसके नौकरो में है, तो वह पशु कहा जायगा। लोगो को यह महसूस होना चाहिए कि हमने कारोवार चलाने के लिए ये नौकर रखे है। परन्तु हमारे दिमाग से हमारी सूचना के अनुसार काम होना चाहिए। इन दिनो 'वेलफेअर स्टेट' के नाम पर नौकर ही योजना करते हैं। योजना तो मालिको को करनी चाहिए और नौकरों को उसे

अमल में लाने का काम करना चाहिए। हर गाँव के लोगो को अपनी बुद्धि से ग्राम-योजना बनानी चाहिए। गाँव में किसीके बीमार पडने पर क्या आप स्वास्थ्य-मत्री को तार देंगे? ग्राम-आरोग्य की योजना तो गाँवो में ही होनी चाहिए। फिर सरकार से पूरक मदद माँगनी चाहिए।

तालीम स्वतन्त्र रहनी चाहिए

सर्वोदय का यह मूल विचार है कि अधिकाश काम जनशक्ति के द्वारा ही किये जायँ। जहाँ जन-शक्ति से आसानी से काम न होता हो, वहाँ सरकार से थोडी मदद ली जा सकती है। आजकल 'वेलफेअर स्टेट' के नाम पर सारी तालीम सरकार के हाथ मे होती है और उसका परिणाम यह होता है कि जहाँ पर फासिस्ट सरकार है, वहाँ पर कुल स्कूलो के सब बच्चो को फासिज्म की तालीम दी जाती है। जहाँ कम्युनिस्ट सरकार है, वहाँ पर देश के सब स्कूलो में कम्युनिज्म की तालीम दी जाती है। आज अमेरिका के छोटे-छोटे बच्चो को सिखाया जाता है कि ये ऐटम और हाइड्रोजन बम सुदर्शनचक्र और गदा जैसे है—जिस तरह भक्त भगवान् की महिमा गाते है कि 'हे भगवन्, तेरे हाथ में सुदर्शन-चक्र और गदा है, तो हमे डर क्यो होगा? तू ही हमारी रक्षा करनेवाला है।' हर बच्चे को इस भ्रमपूर्ण विचार का इजेक्शन हर रोज दिया जाता है और उसीके आधार पर सत्तावाले अपना अधिकार कायम रखते है। इसीलिए हम कहते है कि तालीम लोगो के हाथ मे रहनी चाहिए। सरकार मदद कर सकती है, परन्तु सरकार के हाथ मे उसके नियमन का अधिकार नही रहना चाहिए। जिस तरह आज माना गया है कि न्याय-विभाग स्वतन्त्र रहना चाहिए, उस पर सरकार का कोई अधिकार नही रहना चाहिए, उसी तरह तालीम का इतजाम भी लोक-शक्ति के जरिये होना चाहिए। पुराने जमाने में क्या मजाल थी कि कोई राजा किसी ऋषि के आश्रम मे जाकर वहाँ किस प्रकार की तालीम देनी चाहिए, इस बारे में आज्ञा दे। राजा तो आश्रम में ज्ञान पाने के लिए जाता था।

महाराजा दुष्यन्त की एक कहानी है। वे अत्यन्त लोकप्रिय थे। एक दफा वे शिकार के लिए निकले। उन दिनो राजा लोग हिरनो का शिकार करने

थे, क्योंकि हिरण लाखो की सख्या में थे और फसल को नष्ट करते थे। इसलिए राजा लोग हिरणो का शिकार करना अपना कर्तव्य समझते थे। दुष्यन्त शिकार करते-करते कण्व मुनि के आश्रम मे पहुँचे। वहाँ के हिरण का शिकार करने के लिए उन्होने धनुप ताना। इतने मे आश्रम का एक छोटा-सा लडका कहता है, **"आश्रममृगो अयम् न हन्तव्यो न हन्तव्यो"**—यह आश्रम-मृग है, इसे आप नही मार सकते। यह है भारत की सस्कृति, जहाँ पर आश्रम का एक छोटा-सा वच्चा यह हिम्मत रखता है कि राजा के सामने जाकर उसे रोके। यह चीज़ हम फिर से लाना चाहते है। इसीलिए तालीम लोगो के हाथ में होनी चाहिए।

लोग अब भी परतन्त्र

जितने काम सरकार के हाथ से निकलेंगे और लोगो के हाथ में पहुँचेगे, उतनी ही अहिंसा पनपेगी और राजसत्ता क्षीण होते-होते आखिर में खतम हो जायगी। इसीलिए हम इस काम मे लगे हुए है। कुछ लोग हमे सुनाते है कि यह काम तो सरकार के जरिये हो सकता है। हम कहते है कि अगर यह काम सरकार के जरिये होता है, तो आपको रोकता कौन है ? आप सरकार के जरिये यह काम करवा लीजिये। मै आपसे पूछना चाहता हूँ कि आपने इन आठ सालो मे कितनी जमीन बाँटी है ? हमने तो कही-कही देखा है कि सरकार की तरफ से जो जमीन बँटती है, वह वहाँ पर नीलाम होती है। हम टीका नही करना चाहते। हम जानते है कि सरकार ही उत्तरोत्तर हमारे विचार के लिए अनुकूल हो रही है। लेकिन हम यह कहना चाहते है कि कुछ काम ऐसे होते है, जो सरकार के जरिये हो ही नही सकते। कानून के जरिये जमीन छीनकर उसका वँटवारा किया जा सकता है, परन्तु मालिको के हृदय को जोड़ा नही जा सकता, वल्कि उल्टा उनके हृदय को तोडा जाता है। भगवान् कृष्ण की महिमा यह थी कि वे चित्तहर थे, चित्त को चुरानेवाले थे। सरकार और कुछ चुरा सकती है, परन्तु चित्त को चुराने का काम वह नही कर सकती।

हम शून्य की मदद लेना चाहते है। परन्तु उसे शून्य के नाते ही रखना

चाहते हैं। जहाँ पर जन-शक्ति और सरकार, दोनों के मिलने से काम होता है, वहाँ पर एक बड़ी शक्ति पैदा होती है। इसलिए आप हमसे यह मत कहिये कि भू-दान का काम सरकार कर सकती है। कल आप यह भी कहेंगे कि आपके बच्चे की रक्षा करने का काम और बीमारी में उसकी दवा करने का काम भी सरकार ही करेगी। आजकल लोग इतने दीन बन गये हैं कि हर बात में कानून ही चाहते हैं। शादी की उम्र तय करनी हो, अपने अछूत भाइयों पर प्यार करना हो, तो सरकार से कानून बनाने के लिए कहते हैं। इस तरह लोग हर बात में लाचारी महसूस करते हैं और कहते हैं कि सरकार ही ये सारे काम कर सकती है। इसीलिए हमने कहा था कि जब से देश स्वतन्त्र हुआ है, तब से हमारे लोग परतन्त्र ही अधिक हुए हैं। जब अंग्रेजों का राज्य था, तब बिहार में भूकम्प हुआ था। उस समय हिन्दुस्तान भर के लोग मदद में दौड़ गये थे। उन्होंने सरकार की राह नहीं देखी थी। अंग्रेजों के राज्य में जब गुजरात में बाढ़ आयी थी, तो लोग मदद में दौड़े गये थे। इससे सरकार शर्मिंदा हुई और उसे मदद में पहुँचना पड़ा। लेकिन इन आजादी के दिनों में हमने क्या दृश्य देखा? पिछले साल इन्हीं चातुर्मास के महीनों में हम बिहार में बाढ़-पीड़ित प्रदेश में घूम रहे थे। बिहार के इतिहास में इतनी बड़ी बाढ़ कभी नहीं आयी थी। उसी प्रदेश में बारिश के दिनों में घूमने का हमें मौका मिला। हमने वहाँ पर देखा कि सीतामढ़ी शहर के इर्द-गिर्द चारों ओर पानी फैला हुआ था। लेकिन शहर के लोग रात को सिनेमा देखने जाते थे। क्या उनको इतना भी नहीं सूझता था कि चन्द दिनों तक सिनेमा देखना बंद करके बचा हुआ पैसा बाढ़-पीड़ित लोगों के लिए दिया जाय? लेकिन वे लोग तो समझते थे कि गाँव को मदद पहुँचाना सरकार का काम है। इसीको हम परवशता, पराधीनता कहते हैं। यह मत समझिए कि अंग्रेजों का राज्य था, तो पराधीनता थी और अब अपने लोगों का राज्य आया है, तो स्वाधीनता हो गयी है।

अपना मूल्य पहचानेगा और निर्भय होकर अपना कर्तव्य करेगा, वही देश आजाद माना जायगा। जिस देश का बच्चा-बच्चा यह कहेगा कि मै इस देश का सम्राट् हूँ, वह देश आजाद है। सरकार क्या चीज है? हमने ही पाँच साल के लिए उसे चुनकर दिया है। अगर वे लोग अच्छी नौकरी करते हैं, तो हम उन्हे दुबारा काम देंगे और नही करते है, तो दूसरे नौकर रखेंगे। आपको यह नही समझना चाहिए कि जैसे पहले अंग्रेजो का, मुगलो का या मराठो का राज्य था, वैसे अब कांग्रेस का राज्य आया है। हम लोगो मे शक्ति जाग्रत करना चाहते है, भावना निर्माण करना चाहते है कि यह राज्य आपका है इसीलिए हम चाहते हैं कि भूमि का औरसपत्ति का बँटवारा जनशक्ति के जरिये हो। इसवास्ते हम यह चाहते है कि उससे लोगो को आत्म-शक्ति का भान हो। आत्मा में अनन्त शक्ति भरी हुई है। एक चेतन आत्मा प्रकट होती है, तो सारी दुनिया पर असर कर सकती है। यह सारी सृष्टि जड़ है और मै चेतन हूँ, उसका साक्षी हूँ, मै उसको आकार देनेवाला हूँ। जिस तरह कुम्हार समझता है कि मिट्टी तो मेरे हाथ में एक साधन है, उसे मै चाहे जैसा आकार दे सकता हूँ, उसी तरह हम सृष्टि को आकार देनेवाले है। यह जो आत्मश्रद्धा है, आत्म-निष्ठा है, आत्म-बल है, उसका भान सब लोगो को हम कराना चाहते हैं।

हम चाहते है कि गाँव-गाँव के लोग इकट्ठा होकर अपने गाँव का स्वराज्य बनायें, गाँव की जमीन का बँटवारा करें और अपने गाँव में बाहर से कौनसा माल आना चाहिए, और कौनसा नही आना चाहिए, यह तय करें और फिर उसके अनुसार चलें। इस तरह गाँव एक किला बने। हमें यह सब करना है। इसीका आरम्भ ग्रामदान से हुआ है।

कोरापुट (उत्कल)

२१-७-'५५

के बाद गाँव में ही फैसला होना चाहिए और उस पर अपील नहीं होनी चाहिए। ऐसा करने पर ही गाँव को सच्ची आजादी मिलेगी। फिर देहलीवाले कहेंगे कि बाहर से आक्रमण हो तो रक्षा के लिए सेना चाहिए, देश में रेल चाहिए आदि के इंतजाम के लिए थोडा टैक्स वसूल करेंगे, वह देना होगा, परन्तु उसमें भी आप कह सकेंगे कि हमारे गाँव का कारोबार हम सँभालते हैं, तो हमारे टैक्स का उपयोग हमारे गाँव में ही क्यो न किया जाय ? फिर सरकार कहेगी कि रुपये मे से पन्द्रह आना आप रखिये और एक आना हमको दीजिये। इस तरह गाँव की सत्ता आपके हाथ मे आयेगी, तभी देश बचेगा। यही सर्वोदय का प्रयत्न है। ग्राम-दान इसीलिए है। थोडी जमीन लेकर बाँटना उसका उद्देश्य नहीं है। व्यक्तिगत मालकियत को खतम करना ही उसका उद्देश्य है।

दुःख की जड मालकियत

लोग पूछते हैं कि व्यक्तिगत मालकियत नहीं होगी, तो कैसे चलेगा ? व्यक्तिगत मालकियत मिटेगी, तो व्यक्तिगत रोना भी मिट जायेगा। सब मिलकर काम करेंगे, तो रोयेंगे क्यो ? आज तो हरएक किसान के पीछे एक-एक साहूकार लगा है, किसान रोता रहता है और बाकी के लोग सुनते रहते हैं। व्यक्तिगत मालकियत है, इसलिए व्यक्तिगत रोना है। व्यक्तिगत मालकियत मिटने पर रोना पडा, तो सारा गाँव रोयेगा और सारे गाँव के रोने का मौका आना आसान बात नहीं है। सब मिलकर काम करते हैं, तो हँसने का ही मौका आता है, रोने का कम आता है। मालकियत मिटेगी, तो सब दुःख मिटेंगे। आप लोगो ने मालकियत पकड रखी है याने दुःख को पकड रखा है। अगर दुःख मिटाना चाहते हो, तो मालकियत मिटा दो।

ग्रामदान में आप कुछ खोयेंगे नहीं। ५-१० या ५० एकड जमीन का मालिक २,००० एकड जमीन का, याने सारे गाँव की जमीन का मालिक हो जायेगा। उसमें कोई कुछ खोयेगा नहीं, बहुत कुछ पायेगा। एक छोटे-से परिवार को तो जो आया सो पीसना था। अब वह परिवार बडा हो गया, तो उसे तकलीफ न होगी। यह ग्रामदान का अर्थ है, इसलिए बाबा ग्रामदान माँगता है।

नलमराम्पम् (कोइम्बतूर)
२-१०-'५६

स्वराज्य के बाद दो रास्ते : ३ :

आज हमें खुशी हो रही है कि हम अपने भाई व्यकटाचलपतिजी के गाँव में आ पहुँचे है। जो काम हम कर रहे हैं, वह हमारा ही नही है, उनका भी है। स्वराज्य-प्राप्ति के आन्दोलन मे हमने भी कुछ हिस्सा ले लिया और उन्होने भी लिया। स्वराज्य-आन्दोलन में तो हजारो लोगो ने भाग लिया। स्वराज्य-प्राप्ति के वाद व्यकटाचलपति और उनके साथियो के मन में ग्रामराज की धुन रही। वही भावना हमारी भी थी। इसलिए हम दोनो पूरे अर्थ मे सहोदर हो गये। एक उदर मे से जिनका जन्म होता है, उन्हे सहोदर कहते हैं। एक विचार में से जिनका जन्म हुआ है, वे अधिक नजदीक के सहोदर हुए। स्वराज्य-आन्दोलन मे हजारो नही, वल्कि लाखो लोगो ने भाग लिया। परन्तु जिन्होने भाग लिया, वे सब एक विचार के लोग नही थे। वह तो एक निषेधक विचार था कि अग्रेजी सत्ता यहाँ न रहे। क्या रहेगा, इस वारे में उन लोगो ने सोचा नही था। जिन लाखो लोगो ने स्वराज्य-आन्दोलन में भाग लिया था, जिन्होने विचार किया था, उनके विचार अलग-अलग थे। अग्रेजी सत्ता के कारण हिन्दुस्तान की जनता दवी हुई है, उसमे से उसे छुडाना चाहिए—इतनी वात सव लोग जानते थे। परन्तु जाति-भेद का काफी दवाव हिन्दुस्तान में था। आज भी है। गाँवो पर शहरो का, शहरो पर परदेशो का आर्थिक दवाव है, यत्रोद्योग का ग्रामोद्योग पर असर है। अव उस जाति-भेद को मिटाना है, ग्रामीणो की सत्ता गाँवो पर स्थापित करनी है, लोकनीति वनानी है। शासन से मुक्ति पानी है। ये सारे विचार स्वराज्य के आन्दोलन मे जिन्होने भाग लिया था, उनको मालूम नही और मजूर भी नही था, इसलिए स्वराज्य के आन्दोलन मे जिन्होने हिस्सा लिया, वे इतने सहोदर नही हैं। उन्होने एक साथ काम जरूर किया, इसलिए वे सहयोगी हुए। लेकिन काशी तक साथ गये, फिर वहाँ से एक ने कहा कि हमको अयोध्या जाना है। दूसरे ने कहा, हमको मथुरा जाना है। काशी के वाद दोनो की राह अलग-अलग

की कल्पना मे नही आये। जो एक ही विचार के उदर मे से पैदा हुए सहोदर थे, वे लोग इस आन्दोलन मे आये।

हमारी खूबी

यह करीव-करीव पागलो की जमात है। जो जमात छोटी होती है, चाहे उसके पास अक्ल भी हो, तो भी वह दुनिया मे पागलो की जमात मानी जाती है। आप लोग जानते है कि यह दिन वहुमत के सत्ता के दिन है। ग्रामराज्य-वाले हम लोग आज तक विलकुल ही अल्पमत मे थे। जो सच्चे पागल होते है, उनमे एक-न-एक खूवी होती है। उनका जव समाज को स्पर्श होता है, तो वे समाज को पागल वनने की दीक्षा देते है। हमने समाज को ग्रामराज की दीक्षा देने के लिए भूदान-आन्दोलन शुरु किया। उसी विचार से व्यकटाचल-पति सरकार में दाखिल हुए है। दीखने मे तो ऐसा दीखता हे कि दोनो के रास्ते विलकुल विपरीत दिशा मे जाते है, लेकिन पृथ्वी गोल है, इसलिए उलटे रास्ते जाने पर भी दोनो इकट्ठे हो सकते है। अव हम दोनो इकट्ठे हुए ह। उनकी भी यही इच्छा है कि ग्रामदान हो और गामराज्य चले। इस काम मे सरकार के जरिये भी कुछ मदद हो सकती है, सिर्फ उतने से लाभ के कारण वे वहाँ नही है। उस स्थान को छोडने के लिए वे किसी भी क्षण राजी है। ऊपर-ऊपर से ऐसा दीख सकता है कि हम दोनो अलग-अलग स्थान मे है, लेकिन सचमुच दोनो मे से कोई अलग स्थान में नही है।

रामचन्द्र जगल में भटकते थे, किसी शहर मे प्रवेश भी नही करते थे। अपनी माता की आज्ञा का वे अक्षरश पालन करते थे। गुह और सुग्रीव ने उन्हें अपने नगर मे आने के लिए कहा, तो 'ना' कह दिया और नगर के वाहर ही रहे। दूसरी ओर भरत नगर मे ही रहे। ऊपर-ऊपर से दोनो के काम उल्टे दीखते है। रामचन्द्र ने राज्य छोडा, भरत को राज्य चलाना पडा। ये जगल में रहे और वे नगर में रहे। लेकिन जो तपस्या रामचन्द्र ने जगल में की, वही भरत ने अयोध्या मे की।

बहुत खुशी की बात है कि तमिलनाड का वातावरण अनुकूल हो रहा है। जो लोग एक-दूसरे के अनुकूल नहीं है, जिनका एक-दूसरे के साथ झगडा है, वे भी ग्रामदान और भूदान के साथ अनुकूल [illegible]।

हमारा रास्ता सबके लिए खुला है

एक उत्तम झरना है। उस पर गाय आती है। प्रेम से पानी पीकर शान्त होती है और चली जाती है। थोडी देर बाद प्यासा शेर आता है, पानी पी लेता है। गाय की शेर के साथ नही बनती, और शेर की गाय के साथ नही बनती है। लेकिन दोनो को पानी प्रिय है।

लोग पूछते है कि बाबा ने यह क्या कीमिया की कि सब लोग भूदान के अनुकूल हो जाते है। जो लोग बाबा को अनूकुल नही बनाना चाहते, वे बाबा के नजदीक ही नही आते। वे डरते है। वे समझते है कि बाबा के नजदीक जायेंगे, तो अनुकूल ही बनना पडेगा, क्योकि यह विचार ही मीठा है। गुड मीठा है, तो उस पर चीटियाँ आयेगी ही। मक्खियाँ भी आयेंगी और बच्चा भी गुड खाने को लपकता है। इसलिए ये लोग हमारे पास आते ही नही और आते है तो टिकते नही। 'हाँ, जी' करके चले जाते है। हमारे पास कोई सत्ता तो है नही, न हम उनको कोई सीट देनेवाले है। परन्तु हमारे पास आते है, तो अनुकूल हो जाते है, क्योकि यह विचार पानी के समान जीवनदायी है। इस विचार को कोई इनकार नही कर सकता।

अर्थशास्त्रज्ञ कबूल करते है कि सारा गाँव अगर एक हो जायगा, तो अत्यन्त उत्तम रीति से गाँव सुव्यवस्थित होगा।

समाज-शास्त्रज्ञ कहते है कि ग्रामदान बहुत अच्छा है। उससे जाति-भेद मिटने मे बहुत मदद होती है। कोरापुट में ग्रामदान के कारण जाति के भेद मिट रहे है, प्रेम बढ रहा है। जाति-भेद ही नही, धर्म-भेद भी मिट रहा है। जाति-सुधार, समाज-सुधार ग्रामदान से होता है।

राजनैतिक विचारवाले तो ग्रामदान पर लट्टू ही है। वे कहते है कि हर गाँव एक-एक युनिट हो जायगा, तो स्वराज्य की बडी भारी ताकत बनेगी। गाँवो मे शान्ति रखने मे कोई मुश्किल नही होगी। गाँव के लिए कोई योजना करना भी आसान होगा, गाँववालो की अक्ल का पूरा उपयोग होगा। गाँव-गाँव मे राज्य होगा, तो गाँव-गाँव मे अच्छे शासक तैयार होगे।

जो समस्या गांव की, वही देश की

बीच में पडित नेहरू कुछ समय के लिए प्रधान मत्री और काग्रेस के अध्यक्ष पद से अलग होना चाहते थे। वे थोडा चिन्तन करना, जरा दिमाग ताजा करना चाहते थे। कुछ समय के लिए बोझ हटे, ऐसा वे चाहते थे। परन्तु यह सुनते ही सब लोग घवडा गये। लेकिन इसमें घवडाने की क्या बात थी? अगर गाँव-गाँव में स्वराज्य चलता है, तो गाँव-गाँव में से अच्छे-अच्छे मुख्य-प्रधान और शासक निकलते। जो गाँव के कारोबार में करना होता है, वही विस्तार से देश के कारोवार में करना होता है। अभी तो ग्राम-कार्य ही नही चलता। उसको सोचनेवाले लोग भी नही है। इसलिए देश मे राज्य-कर्ता बहुत ही अल्प सख्या में रह गये। अगर गाँव-गाँव में ऐसी सुन्दर सस्था चले, तो असेम्बली और पार्लमेंट में कोई समस्या खडी होते ही ग्रामराज के जरिये उसका हल मिल सकता है। राह दिखाने के लिए वे गाँववालो से आकर कहें, "जमीन की बहुत बडी समस्या है, जमीन की मालकियत बनी है, अलग-अलग टुकडे पड गये हैं। हम आपका गाँव देखना चाहते है।"

"देखो न। हमने यहाँ कैसे सारा एक कर दिया है।"

"अरे, हमारे सामने हिन्दू-मुसलमान के झगडे की बहुत वडी समस्या है। उन झगडो का क्या हल है?"

"जरा आओ हमारे गाँव में और देखो सब कितने प्रेम से रहते हैं? सब लोग मिल-जुलकर काम करते है और प्रार्थना में भी एक साथ वैठते हैं। यह नमूना ही आप ले लें।"

जो समस्या गाँव में होती है, वही वडे पैमाने पर देश में होती है। गाँव-गाँव मे अगर ग्रामदान और ग्रामराज्य होगा, तो राजनीति का चिन्तन करनेवाले तो वडे खुश होगे कि इससे वडी ताकत पैदा होगी।

शिक्षणशास्त्रज्ञ तो ग्रामराज्य पर बेहद खुश है। कहते हैं, ग्रामराज्य हो जायगा, तो सब वच्चो की तालीम की समस्या जल्दी ही हल हो जायगी। आज तो चद लोगो के पास वडी-वडी जमीनें है। वे खुद काश्त नही करेंगे उनके वच्चे भी कर्मशून्य तालीम पायेंगे। भूमिहीनो के वच्चे स्कूल में

नही जा सकेंगे। इसलिए वे ज्ञान-शून्य कर्म किया करेंगे। ग्रामदान से सब को जमीन मिलती है, इस वास्ते सबके बच्चे ज्ञान पायेंगे, सबके बच्चे काम करेंगे। इसलिए तालीम वालो को तो ग्रामदान का विचार अत्यन्त प्रिय है।

धार्मिक विचारवाले लोग तो ग्रामदान के विचार से नाचते हैं। वे कहते हैं कि 'मैं—मेरा' मिटा दो—यह हम चिल्लाते रहे, लेकिन कोई सुनता नही। हम 'तिरुवाचकम्, तिरुकुरल, तिरुवायमुलि' गाते हैं, लेकिन सुनता कौन है? कहते हैं कि "मैं—मेरा' मिटाने की बात तो सन्यासी की है, हम तो ससारी हैं। ग्रामदान से 'मैं—मेरा' मिट गया और 'हम—हमारा' आ गया। धर्म का, शास्त्रकारो का काम हो गया। हजारो उपनिषदो से जो नही हुआ था, वह इस जीवन की योजना से बन गया।

क्या यह न्याय है?

"ला एण्ड आर्डर" वाले, दुनिया भर के इतजाम करनेवाले कहते हैं कि ग्रामदान हो जाय, तो हमारा इतजाम बहुत ही अच्छा हो जाय। बेचारे गरीब मनुष्य को दिन में काम नही मिलता और घर में बाल-बच्चे भूखो मरते हैं, तो रात को काम करता है। लेकिन उस पर कोर्ट में केस चलाकर जेल में डालते हैं। जेल में उसकी १४ घटे की नीद, दो दफा बराबर खाना, वजन कम न हो, इसका बराबर इतजाम होता है। सजा तो वास्तव में उसके घर-वालो को होती है, क्योकि कमानेवाला घर में वह एक ही था। यह क्या कोई न्याय है? क्या यह ला-आर्डर है? और क्या इससे समाज में शान्ति की स्थापना होगी?

फिर बढाओ पुलिस और फौज की सख्या। पडोसी देश यह देखकर घबडाता है और अपनी फौज बढाता है। उसे देखकर यह भी अपनी सख्या बढाता है। इससे देश मे गरीबो का इतजाम ही नही हो सकता। इसलिए ला एण्ड आर्डर का कुल का कुल मसला ग्रामदान से हल हो जाता है।

बाबा सरकार को बचा रहा है

कुछ लोग कहते हैं कि भूदान के लिए सरकार अनुकूल हो गयी है। शायद

सरकार बाबा को बचा लेगी। अरे, बाबा सरकार को बचा रहा है। यह समझने की बात है। सरकार के कानून मे जो लिखा है, उससे बिलकुल विरुद्ध बात हो रही है। लेकिन सरकार कबूल कर रही है कि हरएक का जमीन पर अधिकार है। व्यक्तिगत मालकियत एक पवित्र वस्तु है, उसकी रक्षा के लिए पार्लमेंट में सविधान बना है। उसके बचाव के लिए सरकार, सेना, कोर्ट सब कुछ है। परन्तु क्या सरकारी कानून में यह लिखा है कि खानगी मालकियत गलत, जमीन की मालकियत पाप है? लेकिन बाबा इसका प्रचार कर रहा है, तो सरकार कहती है कि हाँ, भाई अच्छा काम हो रहा है। अब कौन किसको बचा रहा है? सरकार बाबा को बचा रही है, कि बाबा सरकार को बचा रहा है? यह ठीक ही हो रहा है। इसलिए ग्रामदान हो रहा है। इस वास्ते सरकार जो ला-आर्डर के पीछे खर्च कर रही है, वह सबका सब बाबा को मिलना चाहिए। ला और आडर का गुप्त काम हो रहा है। इसलिए इतजाम करनेवाले सब लोग, जो दुनिया का अच्छा इतजाम चाहते है, सब ग्रामदान से खुश हैं।

चोर के डर से व्याख्यान छोड़ना पड़ा!

फिर नाराज कौन है? इतने सारे लोगो को यह विचार कबूल है। कहते हैं कि जिनके पास जमीन, सम्पत्ति है, उनको जरा विरोध मालूम हो रहा है। उनको विरोध करने का कोई कारण नही है। उनका इसमें कोई नुकसान नही है। जिस काम में सारी दुनिया का भला है, उस काम में उनका भला है। आज तो उनकी उनके बेटो के साथ भी नही बनती। इधर तो सारे गाँव के साथ उनकी बनेगी। उधर तो उनको रात मे चोरो का डर रहता है। आन्ध्र में हमारी एक सभा में दो-चार बडे लोग आना चाहते थे। फिर भी नही आ सके। क्योंकि उनको डर था कि वे ही अगर सभा में आ जायें, तो घर की रक्षा कौन करे! दिन मे चोरी करना चोर के लिए आसान होगा, क्योंकि रात में अन्धकार में काम करना पडता है। चोर के डर से बाबा का व्याख्यान छोडना पडा, यह क्या कोई सुख है?

ग्रामदान का सोता सूखने न पाए

हमारा एक मित्र था। उसका वजन २५० रतल था। वह मेरे साथ जेल में था। उसका वडा भयानक हाल हो गया था। मैंने उससे कहा कि डरो मत, जेल का खाना तुम्हारे लिए अनुकूल नही हो रहा है। मैंने जेलर से कह दिया कि मैं उसका वजन कम करना चाहता हूँ। इसलिए ५० तोला ज्वार के बदले दूध आवश्यक है। वह भी दो-चार रतल नही, आधा रतल और आधा तोला शक्कर। इससे पाँच महीने मे ५० पौंड वजन घट गया। जो आदमी चल नही सकता था, वह अव दौडने लगा। दिन भर में दो पाव दूध और स्वाद के लिए शक्कर। इसी तरह वडे-वडे जमीदारो को सौ-सौ एकड जमीन रखने की क्या जरूरत है। सात एकड रखकर वाकी गाँव को दे दे और खुद काम करने लगे, तो आयु वढेगी। इसलिए उन पर हमारी यह कृपा है कि हम जमीन की आसक्ति कम करते है। इसमें उनका कोई नुकसान नही है। यह वात जँच जाती है, इसीलिए वडे-वडे लोगो ने काफी जमीन दी है। अव तो यहाँ तालुकादान, जिलादान होने की वात चल रही है। तो, व्यकटाचलपतिजीका गाँव तो होना ही चाहिए। एक वहुत ही वड़े आन्दोलन का आरम्भ तमिलनाड में हो चुका है। दस-दस महीने हम यहाँ खोदते रहे। अव जरा पानी आया है। लेकिन और भी गहरा खोदना होगा, नही तो यह झरना इतना छोटा है कि गर्मी में सूख सकता है। हम आशा करते हैं कि ये सारे भाई इस खोद-काम में प्रवीण होने के लिए प्रयत्न करेंगे।

गोपीनायकम्पट्टी (मदुरा)
२१-३-'५७

लोक-क्रांति का आधार लोक-सम्मति : ४ :

सातत्य-योग

अभी एक वहुत वडे जिले की यात्रा समाप्त करके इस जिले मे हमारा प्रवेश हुआ है। दोनो जिलो के कुछ लोग इकट्ठा हुए हैं। एक स्नेह में से दूसरे स्नेह में हमारा प्रवेश हो रहा है। हमें पूरी उम्मीद है कि जो महाभाग्य

हमने कोयम्बतूर जिले में छोडी है, वह यहाँ काम करती रहेगी और योजना भी ऐसी है कि आगे करीब साढे तीन-चार ही महीने के बाद हमारी तमिलनाड की यात्रा-समाप्ति के समय फिर से इस जिले में हमारे पाँच-छ दिन बीतेंगे। हम उम्मीद करते हैं कि इस जिलेवाले विश्राम नही लेंगे, बल्कि आज से ही कार्य को जारी रखेंगे। कोई भी गृहिणी, जब रसोई करनी होती है, तो चूल्हा को ठडा नही पडने देती। जो लोग वातावरण को ठडा पडने देते है, और सोचते है कि फिर हम काम करेंगे, वे कर्मयोग का रहस्य नही जानते। कर्मयोग का रहस्य, उसका प्राणतत्त्व है—सातत्ययोग। यह हमने उत्कल में देखा। उत्कल के लोगो ने जिस दिन हमें आन्ध्र के लिए विदा किया, उसी दिन से फौरन वहाँ के गोपबाबू वगैरह कार्यकर्ता काम करने के लिए देहातो में चले गये और वहाँ पर कार्य जारी रहा, जो अभी भी जारी है। हमने जितने ग्रामदान लेकर उस प्रदेश को छोडा था, उससे दुगुने ग्रामदान अब वहाँ हुए है। ६०० ग्रामदान की सख्या ११०० से ऊपर पहुँच गयी है। यह सातत्योग का परिणाम है। सात ययोग की मिसाल अगर देनी है, तो हम अपनी ही देंगे। ४० साल पहले हमने एक विचार लेकर घर छोडा था। उसी विचार पर हम लगातार चले है और हमे ऐसा एक भी दिन याद नही है, जब कि हमें उस विचार का विस्मरण हुआ हो। इसलिए हमें यही अनुभव आया कि हमारी सद्वासना की विरोधी शक्ति दुनिया मे है ही नही, बल्कि हमारी सद्भावना को मदद करनेवाली शक्ति दुनिया में जाग्रत है। सूर्यनारायण हाजिर ही है, लेकिन हमने अगर अपना दरवाजा नही खोला, तो प्रकाश अन्दर नही आयेगा। जरा दरवाजा खोलते ही प्रकाश अन्दर आ जायेगा। दुनिया में एक ऐसी शक्ति काम कर रही है जो न निद्रा जानती है, न आलस्य। वह सतत् काम करती ही रहती है। अगर भक्त उसकी मदद लेने के लिए तैयार हो, तो उसे मदद मिलती है। हमे आशा है कि कोयम्बतूर जिले के कार्यकर्ता कर्मयोग के इस रहस्य का सगोपन करेंगे।

निर्माण-कार्य की बुनियाद

भूदान के काम की पूर्णता ग्रामदान मे होती है। लेकिन जहाँ ग्रामदान हो गया, वहाँ सर्वोदय-निर्माण-कार्य का आरम्भ हो ही जाता है। बिना भूदान

के और ग्रामदान के ग्राम-निर्माण-कार्य के प्रयोग हमने ३०-३२ साल तक किये हैं। उनमें हमें यश नहीं मिला। हमारी कोशिश मे किसी भी प्रकार की कसर रही हो, ऐसा हमें मालूम नहीं। उसमे कमी यही थी कि उस कार्य की बुनियाद भूमि मे नहीं थी। हम स्वराज्य-प्राप्ति के पहले की बात कर रहे हैं। जहाँ सारा देश ही दूसरो के हाथ में था, वहाँ कैसे ग्रामदान होता और कैसे भूदान होता ? इसलिए यह चीज उस जमाने में हो नहीं सकती थी। उसके बिना हम जो काम करते थे, वे बिना बुनियाद के होते थे, यह हमने अच्छी तरह से परख लिया। इसलिए जब से भूदान की युक्ति हाथ आयी है, तब से हम दूसरे सब काम छोडकर इसी मे लगे हैं। अब ध्यान मे आता है कि भूदान के बाद ग्रामदान होता है, तो निर्माण-कार्य के लिए दुनिया बिलकुल खुल जाती है। बिना भूदान के और ग्रामदान के आज भी जो निर्माण-कार्य के प्रयोग कर रहे हैं, उनका निर्माण-कार्य खतरे में है। हम यह सब अपने अनुभव से कह रहे हैं। हम कोई प्रचारक (प्रोपेगैंडिस्ट) नहीं हैं। प्रचारक ऐसे नहीं होते हैं कि जवानी के तीस साल निर्माण-कार्य में बिताकर बुढापे मे प्रचार के लिए निकलें। वे तो जवानी मे ही निकलते हैं। यह सारा हम इसलिए कह रहे हैं कि निर्माण-कार्य को हम बुनियाद देना चाहते हैं। निर्माण-कार्य के लिए बुनियाद या तो सरकारी कानून से हो सकती है या जनता की सम्मति से हो सकती है। सरकार अगर कानून से गाँव की जमीन एक करे और बाहर की चीजे गाँव में आने से रोके, तब कुछ काम हो सकता है। उसमें लोकशक्ति विकसित नहीं होगी, लोक-कार्य होगा। लेकिन सरकार अगर वह नहीं करती और हम यो ही बिना भूदान के और ग्रामदान के निर्माण-कार्य में लगते हैं, तो न लोकशक्ति विकसित होती है, न लोकाकार्य बनता है। इसके मानी यह नहीं कि उससे कुछ भी सेवा नहीं बनती है, कुछ न कुछ तो सेवा जरूर होती है, परन्तु जिसे हम सर्वोदय-कार्य कहते हैं, वह निष्पक्ष नहीं होता। सर्वोदय-कार्य के लिए या तो लोक-सम्मति का आधार चाहिए या सरकार का आधार चाहिए। सर्वोदय-कार्य इन दो तरीको से हो सकेगा परन्तु सर्वोदय क्रान्ति एक ही तरीके से हो सकती है, वह केवल लोकशक्ति के आधार से ही होगी। उसमें कानून की कोई मदद नहीं हो सकती है।

लोककार्य का आधार : जन-सम्मति

आज की सरकार पुरानी समाज-रचना पर खडी है। उस समाज-रचना में फर्क किये बिना, जितनी सेवा वह कर सकती है, करती है। हमने सुना कि जहाँ कुमारप्पाजी बैठे हैं, उसके नजदीक एक राइसमिल खुली है। अब इसको क्या किया जाय? मैंने यह मिसाल इसलिए दी कि आज की सरकार सेवा तो करना चाहती है, परन्तु पुरानी समाज-रचना पर ही करना चाहती है। सोशल पैटर्न आफ सोसाइटी (समाजवादी रचना) का नाम तो लिया जाता है, परन्तु समाजवाद के दुनिया में इतने अर्थ हैं कि उस अर्थ को पूंजीवादी भी हजम कर लेंगे। हिटलर का राज्य भी एक समाजवादी राज्य था। उसका उन्होंने बहुत अच्छा नाम रखा था—नेशनल सोशलिस्ट स्टेट। इस तरह डबल इंजिन लगाया था। तिस पर भी दुनिया के नाश के सिवा उससे और कुछ नही हुआ और उसका खुद भी नाश हो गया। इसलिए पुराना ढाँचा बदलने की शक्ति, इच्छा होते हुए भी, आज की सरकार में दीखती नही। इसमें उनका दोष नही है। शायद मैं भी वहाँ जाता, तो मुझसे भी यह काम नही बनता। यह बात अलग है कि कोई मनुष्य बदले, तो थोडा-सा बदल होता है। परन्तु सम्भव है कि आज जिस हालत में अपना देश है, उस हालत में सरकार के जरिये यह कार्य होना कठिन है। हाँ, कोई दूसरा मनुष्य होता, तो इतनी तो मर्यादा रखता कि कुमारप्पा के सामने मिल न खोलते हुए, उनसे ३०-४० मील दूरी पर खोलता। मेरा मतलब यह नही कि आज जो व्यक्ति राज्य चला रहे हैं, उनका दोष दिखा रहा हूँ। मैं चुनाव के प्रचार के लिए नही निकला हूँ, मैं तो एक विचार-प्रचार के लिए निकला हूँ। लेकिन आज की सरकार के जरिये समाज-रचना की बुनियाद बदलने का काम नही होगा, ऐसा दीखता है। इसलिए अब जनशक्ति और जन-सम्मति के आधार से ही काम करना होगा। मैंने अभी कहा कि सरकार की पूरी मदद हो, तो भी लोक-क्रान्ति नही हो सकती, लोककार्य बन सकता है। हम लोककार्य और लोक-क्रान्ति, दोनो करना चाहते हैं। उसके लिए जन-सम्मति का आधार चाहिए। वह आधार हमें ग्रामदान से मिलता है। उसके बाद ग्राम-राज्य की योजना करना आसान हो जाता है।

विज्ञान के लिए सर्वोदय ही प्राणवायु

सर्वोदय-विचार मनुष्य-शुद्धि की तरफ ध्यान देते हुए साथ-साथ उनकी रचना की ओर भी ध्यान देता है। हृदय में शुद्ध भक्तिभाव का स्नेह भरा हो, समाज-रचना शान्तिमय हो, कुल वातावरण शान्त हो। बाहर शान्तिमय रचना और अन्दर भक्तिमय हृदय, दोनो मिलकर जीवन बनता है। हम समझते है कि ऐसा दुहरा प्रयत्न करने के लिए भारत का स्वभाव ज्यादा अनुकूल है। अन्त शुद्धि के लिए भारत मे काफी प्रयत्न किये गये, फिर भी वे कम पडे। भारत में दोनो प्रयत्न हुए हैं। आन्तरिक शुद्धि पर ज्यादा हुआ है और यह उचित ही है। बाहरी शुद्धि के लिए भी प्रयत्न किये गये है, परन्तु वे भी अपूर्ण साबित हुए। विज्ञान के जमाने में जो प्रयोग हुए, उनके मुकाबले में वे टिक नही सके। हमें फिर से वह प्रयत्न करना है। हम समझते है कि ये दोनो प्रयत्न यूरोप से हमारे देश में ज्यादा हुए हैं। दोहरे प्रयत्न के लिए भारत का वातावरण अब अनुकूल हुआ है। भारत में आत्मज्ञान की परम्परा है ही और विज्ञान का पूरा लाभ सर्वोदय-विचार मे हम लेते है। सर्वोदय से बढकर विज्ञान के लिए अनुकूल कोई विचार नही है। क्योकि सर्वोदय के बिना विज्ञान बढता चला जायेगा, तो व्यक्ति को महत्त्व देता जायगा और उसके जरिये समाज को खत्म करेगा। स्वार्थी लोगो के हाथ में, स्वार्थी गुटो के हाथ मे सत्ता रहेगी, यह विज्ञान का परिणाम होगा। विज्ञान का विस्तार पूँजीपतियो ने बहुत किया है, लेकिन उससे लाभ नही होता है, उससे झगडे बढते है। यह विज्ञान का दोष नही है। विज्ञान चद लोगो की शक्ति बना रहे, इसमें दोष है।

विज्ञान लोक-जीवन के लिए होना चाहिए। आम लोगो के जीवन के लिए जिस चीज का शोध जरूरी है, उसमें वैज्ञानिक को लगना चाहिए हिन्दुस्तान मे इतना मलेरिया है, कैसे हटेगा ? उसमें विज्ञान जोर लगाये भारतीय लोगो के उत्पादन के औजार बिलकुल कमजोर है, इसलिए छोटे-छोटे औजार अच्छे बनाये जायँ। आज तो विज्ञान छोटे-छोटे औजारो को देखता ही नही है। बडी-बडी मशीने बनती है, वे चद लोगो के हाथो मे

करनी चाहिए। जैसे अम्बर चरखा निकला है, वैसे छोटे-छोटे औजार अपने हाथ से इस्तेमाल कर सकते हैं, लेकिन वे अच्छे हो। इस तरह विज्ञान की दृष्टि जब सर्वोदय के साथ जुड जायेगी, तब विज्ञान समर्थ होगा। इसलिए विज्ञान के लिए सर्वोदय ही प्राणवायु है।

लोग पूछते हैं कि 'आपके ग्रामदान में तो बिलकुल पुराने औजार चलेंगे'। क्यो, ग्रामदान मे पुराने औजार क्यो चलेंगे ? ग्रामदान कोई पुरानी चीज है क्या ? वह तो बिलकुल आधुनिक विज्ञान के जमाने में उत्तम अर्थशास्त्र माना जायेगा। ग्रामदान निकलने के बाद विज्ञान का घमण्ड करनेवाले सारे अर्थशास्त्र चुप हो गये। अब वे बाबा के खिलाफ कुछ नही बोलते। पहले कहते थे कि आध्यात्मिक दृष्टि से और नैतिक दृष्टि से भूदान ठीक है, परन्तु जब से ग्रामदान हाथ में आया, तब से कहते है कि हाँ भाई, यह सर्वोत्तम आधुनिकतम अर्थशास्त्र है। उसके साथ नये-नये औजार जुड जायेंगे, इसलिए ग्राम-राज्य के गाँव पुराने जमाने के गाँव नही होंगे। पुराने जमाने का आध्यात्मिक ज्ञान उसके साथ होगा और आज के जमाने का विज्ञान उसके साथ होगा। हमारा हृदय प्राचीन सस्कृति का बना हुआ रहेगा और हमारी बुद्धि आधुनिक विज्ञान से भरी हुई रहेगी। इस तरह दोनो का योग करके सर्वोदय-योजना ग्रामदान के गाँव में चलेगी। हम आशा करते हैं कि आज का गाँव भी ऐसा गाँव बनेगा।

कंदप्पकोडनवलसु (मदुरा)

१४-११-'५६

ज्ञान-कला और ग्राम-संस्था : ५ :

प्राचीन काल में ज्ञान-कला और ग्राम-सस्था

सारे अक्षर एक अकार में है। परमेश्वर इसके मूल में भी है। इसलिए परमेश्वर को अकार की सज्ञा दी गयी। यह भी दिख रहा है कि वह समाज शिक्षित था, जिसके सामने यह उपमा दी गयी। उपमा वही दी जाती है, जिसका जीवन

के साथ सम्बन्ध हो, जो बात लोगो के मन में बैठ गयी हो। ये सारे आत्मा जितनी भिन्न देहो में दीख पडते हैं, वे ताने में बाना और बाने में ताना की तरह एक-दूसरे में ओत-प्रोत है। जिस समाज में घर-घर बुनने का काम चलता हो, उसी समाज में यह उपमा दी जायगी। यह बुनने की उपमा, अक्षरो की उपमा, खेती की उपमा प्राचीन ग्रथो में दिखाई पडती है। उसका अर्थ स्पष्ट है कि जितना व्यापक प्रचार खेती और बुनाई के काम का था, उतना ही व्यापक प्रचार विद्या का था।

ऋग्वेद मे भी वर्णन आता है कि ज्ञानी किस तरह बनता है। जो बडी फजर उठकर गुरु के पास बैठकर उनके शिक्षण के अनुसार पठन करेगा, उसको ज्ञान प्राप्त होगा, सोनेवालो को नही।

अनुब्रुवाणां अध्येति न स्वपन,
यो जागार तमृच कामयन्ते;
यो जागाव तमु सामानि यन्ति,
यो जागार तमय सोन आह तवाहमस्मि सख्येन्योकाः ॥

जो जागेगा, उसके पीछे-पीछे वेद जायेगा, सामवेद भी जायेगा। उसको अध्ययन भी नही करना पडेगा। वेद ही उसके पास आयेगा। लेकिन उसको जागना पडेगा।

यह ऐसा देश है, जहाँ दस हजार साल से ज्ञान की परम्परा चली आई है, इस देश ने चीन में बुद्ध के जरिये ज्ञान पहुँचाया है। चीन और जापान में यही से ज्ञान का प्रकाश गया है। वही भारत आज अशिक्षित है!

यह भारत की बहुत बडी विशेषता थी कि यहाँ गाँव-गाँव में ग्राम-सस्था थी। हमारी वह ग्राम-सस्था आज टूट गयी है। उसका भी उल्लेख ऋग्वेद में आता है। भगवान् से प्रार्थना करते हुए ऋषि कहता है कि "यथा शमसद्-द्विपदे चतुष्पदे, विश्व पुष्टम् ग्रामे अस्मिनमातुरम्।" हमारे गाँव मे सभी निरोग हो। जैसे गाय शाम को गाँव मे वापस आती है, वैसे ही हे भगवन्, हम तुम्हारी शरण में आते हैं। इस तरह सारी कल्पना ऋग्वेद में है। गाँव की आवश्यकता की चीजें गाँव में ही पैदा होती थी। व्यक्तिगत मालकियत

नही थी। सव मिलकर काम करते थे। वढई को मजदूरी नही मिलती थी। हर घर से उसको अनाज का थोडा-थोडा हिस्सा मिलता था। किसी घर मे ज्यादा काम हो या किसी घर में कम काम हो, तो भी उसको निश्चित हिस्सा दिया ही जाता था। इसी तरह से वैद्य, शिक्षक, और दूसरे कारीगरो की योजना थी। याने आज की भापा में वोलना हो, तो कहेंगे कि वह एक प्रकार की सेवा मानी जाती थी। तमिलनाड से काश्मीर तक हमारे गाँवो की यही योजना थी। वह सारी ग्राम-सस्था टूट गयी, क्योंकि गाँवो के धधे खतम कर दिये गये। वे ऐसे ही खतम नही हुए, खतम करने की योजना से वे खतम किये गय। अभी सेलम का जिला-गजट पढा। उसमें लिखा था कि वहाँ के वुनकरो का धवा धीरे-धीरे टूटता गया। सस्कृत भापा में सेलम का अर्थ ही कपडा होता है। कुचेलन (सुदामा) याने खराव कपडेवाला। सेलम जिले में करघो को विजली से चलाने की वात अभी चल रही थी। याने हजारो साल से जो हाथ की कला चली आ रही है, उसको तोडने की वात। जिस विद्या को सीखने के लिए राज्य को कुछ खर्च नही करना पडा, उस विद्या को खतम करने के लिए पैसे खर्च किये जा रहे है।

जीवन की समस्या

आज देहात के धधे टूट गये है। जमीन की मालकियत भी धीरे-धीरे उनके हाथ से चद लोगो के हाथ में चली गयी है। इसके साथ हर गॉव में एक-एक शाला थी, वह भी टूट गयी है। डा० एनीवेसण्ट ने एक किताव में लिखा है कि ईस्ट इडिया कम्पनी के जमाने मे वगाल मे हर ४०० जन-सख्या के पीछे एक स्कूल था। मतलव हर गाँव मे शिक्षा की योजना ग्राम-सभा की तरफ से थी। उसमें सभी लोग थोडा-सा पढ लेते थे। आज जैसी आठ-दस साल की पढाई नही होती थी। यह ठीक है, लेकिन पढना-लिखना सीख लिया, चद अच्छी-अच्छी कविताएँ कठ कर ली, तैरना, पेड पर चढना, घोडे पर सवारी करना—यह सव उस जमाने का ज्ञान था। वाकी विद्या काम करते-करते हासिल की जाती थी। गाँव में धधे मौजूद थे, इसलिए उन-उन धधो की विद्या

तो काम करते-करते ही आ जाती थी। यह पाँच हजार साल पहले की बात है। मैं आपको उपनिषद के जमाने में ले जा रहा हूँ। राजा के राज्य का वर्णन है। **"नमे स्तेनो जनपदे न मद्यपः न अनाहितानिः न अविद्वान् न स्वैरी, स्वैरिणी कुतः।"** मेरे राज्य में न चोर है, न कजूस है, न कोई शराब पीनेवाला है, भगवान् की पूजा न करता हो, ऐसा एक भी शख्स नही है। पढा-लिखा न हो, ऐसा एक भी मनुष्य नही है। पुरुष दुराचारी नही है, तो स्त्रियाँ दुराचारिणी कैसे होगी ? दुनिया के सारे दुराचार की जिम्मेवारी पुरुष पर डाली। राज्य के सबध में लिखा है कि मेरे राज्य में कोई अपढ़ नही है। अगर यह माना जाय कि यह व्यर्थ का गौरव-गान है, तो बात अलग है। चाहे वह व्यर्थ का ही गौरव-गान हो, फिर भी वह आदर्श राज्य था, ऐसा तो मानना ही होगा। इस तरह जहाँ सभी लोगो को विद्या हासिल थी, उस देश में चद लोगो को ऊँची शिक्षा और बाकी बहुत ज्यादा लोगो को बिलकुल शिक्षा नही, यह हालत हो गयी। यही पूंजीवादी समाज-रचना है। चद लोग इतने महा विद्वान् कि वे तमिल भाषा में बोल ही नही सकते, अग्रेजी में ही बोल सकते है और दूसरे लोग ऐसे है कि तमिल भी पूरी नही पढ सकते। खेतो में जो तमिल चलती वह चलेगी। एक बाजू यह तमिल और दूसरे बाजू अग्रेजी। एक ओर विद्या के पूंजीपति और दूसरे ओर बिलकुल विद्याहीन। जैसे एक बाजू बडे-बडे सपत्तिधारी और दूसरी बाजू कुछ भी खाना नही पानेवाले लोग। इस तरह समाज के दो टुकडे हो गये। हिन्दुस्तान का इससे बहुत बडा नुकसान हुआ। इसे दुरुस्त करने का काम करना होगा। यह पहचानना चाहिए और जीवन की समस्या क्या है, इसे समझना चाहिए। टूटी हुई ग्राम-सस्था को खडी करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। आप लोग सोचेंगे, तो ध्यान मे आयेगा कि भूदान, गामदान, नयी तालीम ये सारी चीजे गाँव को खड़ी कर सकती है। इसी को 'सर्वोदय' कहते है।

वेदारण्यम (तंजौर)
३-२-'५७

मानव की मूलभूत आकांक्षा

बचपन के बाद जवानी, जवानी के बाद बुढापा और फिर मृत्यु! एक पीढी के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी! इस तरह मानव समाज का प्रवाह सतत प्रवाहित हो रहा है। दुनिया मे मानव-समाज ही नही है। चीटियो, मक्खियो, जानवरो और परिन्दो का भी समाज है। कुछ प्राणी मिलजुलकर काम करते हुए दिखाई देते है, तो कुछ अलग-अलग। चीटियाँ और मधु-मक्खियाँ मिलजुलकर काम करती हुई दिखाई देती हैं। मधु-मक्खियाँ अपना घर बहुत सुन्दर बनाती हैं। उनमें एक रानी मक्खी होती है। उसके पीछे बाकी मक्खियाँ चलती हैं। उनका एक अपना समाज होता है और अपनी समाज-व्यवस्था होती है। मनुष्यो का भी एक ऐसा ही समाज बना है। परन्तु मनुष्य अपने को अन्य सभी प्राणियो से दूसरी श्रेणी मे रखता है। किसी मनुष्य का घोडा बहुत सुख मे रहता है और दूसरा कोई अन्य मनुष्य अत्यन्त दुखी है। क्या वह दुखी मनुष्य सुखी घोडा होना पसन्द करेगा? उसके सामने अगर यही विचार रखा जाय कि तू अत्यन्त दुखी मनुष्य रहना पसन्द करेगा या सुखी-सतुष्ट परिन्दा या जानवर होना पसन्द करेगा, तो वह दुखी मनुष्य ही रहना पसन्द करेगा। अपनी तुलना ही वह दूसरे प्राणी से नही करता। अपने को वह बिल्कुल अलग श्रेणी मे रखता है। अगर उससे पूछा जाय कि तेरी क्या श्रेणी है, दूसरे प्राणियो से तू अपने को क्यो भिन्न मानता है, दूसरे प्राणियो मे भी तेरे जैसे ही जन्म, मृत्यु, खान, पान आदि होते है, तो तुझमें और अन्य प्राणियो में क्या फर्क रहा, तो हर कोई शायद इसका जवाब न दे सकेगा। यदि शब्दों से इसका जवाब न दे सके, तो भी अन्तर में उसका जवाब उसके पास है। मानव में एक मूलभूत आकांक्षा होती है। सिर्फ खाने-पीने से ही उसको जीवन मे सन्तोष नही मिलता। यह बात सही है कि उसको भी खाना-पीना चाहिए। इसके बिना उसकी देह नही टिक सकेगी। परन्तु खाना-पीना मिल गया तो मनुष्य सन्तुष्ट हो जाता है, ऐसा नही है। उसके बाल-बच्चे भी हैं।

लेकिन उतने से भी उसको सन्तोप नही। उसका सन्तोष और किसी चीज में है।

श्रीमानो के घर में पचासो प्रकार का भोजन मौजूद है। फिर भी वे कहते है कि आज हम नही खायेंगे। भूख नही है, इसलिए नही वल्कि वे कहते है कि आज शिवरात्रि है, इसलिए न खाना अच्छा है। हम नही समझते कि कोई भी प्राणी इस तरह घर में खाना मौजूद हो और भूख लगी हो, तो भी शिवरात्रि के खयाल से खाना छोडता होगा। हाँ, शेरो की शिवरात्रि उस दिन होती होगी, जिस दिन उसको शिकार नही मिलता होगा। मनुष्यो में कोई शिवरात्रि करेगा, कुछ लोग रोजा रखेंगे। इस तरह देह को नही खिलानेवाला यह एक अजीव प्राणी है। कुछ लोग तो लगातार उपवास करते दिखाई पडते है। यह सारा इसलिए करते है कि वे अपने को देह से अलग देखना चाहते है। यह शरीर एक चोला है, हम इससे भिन्न है, ऐसा अनुभव मनुष्य लेना चाहता है। मैंने यह ऊपर का कपडा पहना है, लेकिन घर पर जाते ही उसको हम फेंक देंगे। लेकिन वडी उमर में हम विल्कुल नगे नही होते। हमको याद है कि वचपन में जव हमको धोती पहनने को कहा जाता था, तव हमने पहन तो ली थी, लेकिन घर जाते ही सारे कपडे निकाल देने की इच्छा होती थी। सिर्फ लगोटी लगा कर घर में रहते थे। आनन्द मिलता था। यह शरीर भी एक चोला है, और हमने यह कपडे पहन लिए है। परन्तु यह हमारा रूप नही है। हमारा रूप अलग है। इस देह के सुख-दुख से हमारा सुख-दुख अलग है। हर कोई अपने ढग से यह कोशिश करता है कि इस देह से वह अपने को अलग अनुभव करे। जिस क्षण वह अपने को देह से अलग पाता है, उस क्षण वह आत्म-सन्तोप और आत्म-समाधान का अनुभव करता है। कोई भोजन करने वैठा है, सामने थाली परोसी है, पेट में भूख भी है, लेकिन इतने में कोई भूखा अतिथि आ गया तो परोसी हुई थाली अतिथि को दे देने और स्वय फाका करने मे वड़ा आनन्द होता है। लेकिन उस आनन्द से भी मूल्यवान आनन्द वह है जो उसे खुद फाका करके अतिथि को खिलाने से मिलता है।

सेवा का आनन्द

इस दह से जो चीज अलग है, वह हमारा रूप है। लोग धर्म के लिए

देश के लिए, खुशी से फाँसी पर चढते हैं। उनको उसी में आनन्द मिलता है कि इस देह से भिन्न अपना अनुभव कर लिया। यह समझ लीजिए कि इस तरह मनुष्य सोचता नही है। परन्तु विना सोचे ऐसा होता रहता है। जितने अश में इस देह को भूल जाते हैं, उतने अश में हमको आनन्द मिलता है। आपको खिलाने के लिए हमने अपनी देह की परवाह नही की, तो हमको वडा आनन्द मिल गया। माँ को बच्चे की सेवा में आनन्द मिलता है। वह बहुत तकलीफ उठाती है। रात-रात भर जागती है। उसे उसमें आनन्द मिलता है, क्योकि बच्चे की सेवा मे वह अपने को भूल जाती है।

हमारे साथ लोग पैदल चलते हैं। ३–४ मील भी नही चल सकने वाले १०–१२ मील यात्रा करते हैं। कहते है, कोई तकलीफ ही नही हुई, क्योकि बाबा के साथ ऐसी बातें चली कि बहुत आनन्द हुआ। याने वे अपनी देह को भूल गये। राह चलते समय यदि साथ में कोई साथी रहता है, तो चलने में आनन्द आता है, नही तो तकलीफ होती है, क्योकि अकेले में देह याद आती है। कहते हैं कि सत्पुरुष और सन्त पुरुपो को वडा आनन्द होता है। क्योकि वे अपनी देह को ही भूल गये होते हैं। बाबा का व्याख्यान आपको बडा अच्छा लग रहा है, आप खुश हैं, समय इतनी जल्दी व्यतीत हो गया कि पता नही चला, क्योकि आप अपनी देह को भूल गये थे। व्याख्यान सुनने के कारण, व्याख्यान देने के कारण, चाहे लडके की सेवा करने के कारण, देश के लिए चिन्तन करने के कारण, चाहे वेदाध्ययन में, चाहे गाढ निद्रा लेने के कारण, जिस किसी भी कारण से आप अपनी देह को भूल जाओगे तो आनन्द होगा। यह मनुष्य का स्वभाव है। इसलिए अपनी देह की चिन्ता न करते हुए सारे समाज की चिन्ता करने की आदत पड जाय, तो मनुष्य को चौबीसो घटे सुख ही सुख है। आप कहेंगे कि फिर हमारे शरीर की चिन्ता कौन करेगा ? इतना याद रखो कि तुम अपने शरीर की चिन्ता शुरू करोगे, तो दुखी होगे। लेकिन अपने शरीर की चिन्ता कम करोगे तो दुखी नही होगे। अपनी चिन्ता में यदि लगे तो फौरन दुख शुरू हो जायगा। जैसे बच्चे शरीर को खिलाने-पिलाने की भी चिन्ता नहीं करते ह, क्योकि उनके शरीर की चिन्ता करनेवाली माँ है, इसलिए तुम दूसरे की चिन्ता करो और दूसरे तुम्हारी चिन्ता करें। उसीमें दोनो को

आनन्द है। इस तरह दोनो के खाने-पीने का इन्तजाम हो जायेगा। दोनो के सुखी होने की युक्ति सध जायगी। अगर हम अपनी चिन्ता करते है, तो दोनो दुखी होते हैं। लेकिन अगर एक दूसरे की चिन्ता करते हैं, तो दोनो सुखी होते हैं। तो हमें समाज सुखी वनने की युक्ति मिल गयी।

जिस घर मे शादी होगी उस घर की एक कौडी भी खर्च नही होगी। सारा गाँव—थोडा-थोडा अपना हिस्सा दे देगा। जव दूसरे के घर में शादी होगी तव यह भी अपना हिस्सा देगा। एक घर मे शादी होगी तो गाँव के हर एक घर में आनद मनाया जायेगा।

आज तो किसान को रात भर जागना पडता है, क्योकि उसको डर है कि पडोसी के वैल खेत चर न जाँय। पडोसी भी उसी चिंता मे जागता रहता है। सारा गाँव मिलकर उसका इतजाम करे। किसी एक मनुष्य को जागने के लिए कहा जाय, तो सारा गाँव शाति से सो सकेगा। परंतु आज तो एक दूसरे में विश्वास ही नही है। अपनी रोज की आवश्यक चीजें खुद वना लें, एक दूसरे की चिंता करे, इसका नाम है ग्रामदान। सुखी होने का रास्ता ही यही है कि हम दूसरे की चिंता करें।

सव लोग कहते है कि वावा वडा त्यागी है। अरे, वावा तो वडा भोगी है। वावा सोता है, तो कोई आसपास शब्द नही करते हैं: अरे, वावा सो गया है, वोलना नही चाहिए। वावा के लिए खाने पीने की योजना दूसरे लोग ही करते है। वावा को रहने के लिए रोज नये घर आप ही देते हैं। वडे-वडे श्रीमानो को वहुत हुआ तो १०-१५ वगलें होगे। लेकिन वावा को तो ३६५ दिन के लिए ३६५ नये घर हैं। रोज नये-नये घर। सुखी होने का यही रास्ता है। तुलसीदास ने लिखा है, '**परहित बस जिन्हके मनमाँहीं**, तिन्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाही।' जिसके मन में परहित ही की भावना है, उसके लिए इस दुनिया में कुछ भी दुर्लभ नही है। वशिष्ठ के पास कामधेनु थी। वह अपने घर मे कुछ भी चीज नही रखता था। जव कभी उसे किसी चीज की जरूरत होती थी, कामधेनु के पास जाता था। मुझे शक्कर चाहिए रे–"लो,

खाना शुरू करो।" शक्कर मिल जाती थी। "मुझे सोना है रे," तुर
के लिए पलग हाजिर। आज यह कामधेनु है—"परहितबुद्धि"। यह
अगर आपको मिल जाय, तो सभी चीजे आवश्यकनानुसार मिल ज

नेरकुप्पै (रामनाड)
१८-२-'५७

गांव-भलाई की तीन बातें

सत्ता की राजनीति

स्वराज्य के पहले जेल में जाना पडता था, लाठी खानी पडती थी
करना पडता था। उन दिनो निष्काम, नि स्वार्थ सेवा की आदत ल
पडी थी। पर स्वराज्य-प्राप्ति के बाद सत्ता की राजनीति चल
भिन्न-भिन्न राजनैतिक पक्षो में सत्ता की राजनीति ही रही, सेवा कम
वैसे सत्ता किसलिए चाहते है ? तो कहते है, सेवा के लिए, नाम
का लेते है, परन्तु सत्ता चाहते हैं। चुनाव में एक स्थान के लिए
उम्मीदवार खडे होते हैं। सचमुच उनमें सेवा की भावना होती औ
में ऐसे एक के बदले दस लोग आये होते, तो देश सचमुच उन्नत होता
के कार्य-क्षेत्र हिन्दुस्तान में बहुत से पडे हैं। महा-रोगियो की सेवा क
टी बी वालो की सेवा करनी है, हरिजनो की सेवा करनी है। वे
कितने दु खी हैं। भूमिहीनो की सेवा करनी है। उनमें भी असख्य दु
पडे है। उधर बगाल और पजाब में शरणार्थियो का मसला है, बहुत ब
का काम पडा है। पर उसके लिए कोई नही मिलता। असेम्बली के
दस खडे होते हैं। वहाँ जाकर सेवा करेंगे, यह नाम तो लेते है।

नाम लेते हैं, यह भी ठीक है, क्योकि आखिर सेवा करनी पडेगी,
उस सेवा के क्षेत्र से भी हटना होगा। परन्तु यह सब सेवा के लिए नही
के लिए करते है। उनमें परस्पर द्वेष होता है। चुनाव में हजारो क
गाँव-गाँव होते है। उनमें क्या चलता है ? एक दूसरे के बारे में द्वेप

है। एक-दूसरे को गाली देते हैं। अपनी स्तुति और दूसरो की निन्दा, यही चलता है। अगर यह सारा निष्काम सेवा के लिए होता, तो ये गाली-गलौज, द्वेष किसलिए ? तो यह कोई शुद्ध सेवा का लक्षण नही है। परन्तु परमेश्वर ने यह भूदान ऐसी चीज पैदा की है कि उसके कारण निष्काम, नि स्वार्थ सेवक पैदा हुए हैं। देश का तभी उद्धार होगा, जव गाँव की, देश की, समाज की, निष्काम सेवा करनेवाले लोग सर्वत्र निकलेंगे।

खाने के लिए सेवा नही, सेवा के लिए ही खाना

यह सारा जो ग्रामदान-आन्दोलन चला है, वह क्या है ? लोगो को अपना जीवन निष्काम वनाने की यह प्रेरणा है। आज हर किसान काम तो करता है, पर किसलिए करता है ? तो वह कहता है पेट के लिए। ग्रामदान वाले गाँव में भी किसान काम करेगा। उससे पूछा जायेगा कि तू किसलिए काम करता है ?, तो वह यह नही कहेगा कि पेट के लिये काम कर रहा हूँ। वह कहेगा कि गाँव के लिए काम कर रहा हूँ। पेट के लिए खाना तो चाहिए। घोडे से काम लेते हैं तो उसको भी खाना खिलाना पडता है, ताकि वह काम कर सके। वैसे यह शरीर घोडा है, काम के लिए है। वह काम के लिए खायेगा। वावा गाँव-गाँव घूमता है। लोगो को विचार समझाता है, तो उसने अपना खाना छोडा है क्या ? वह तो रोज खाता है। वावा से पूछा जाय कि तू किसलिए घूमता है, तो वावा यह नही कहेगा कि वह खाना के लिए घूम रहा है, यद्यपि वह रोज खाता है, और गाँव के लोग खिलाते हैं। आस-पास के लोग उसकी चिन्ता करते हैं। पर वावा खाने के लिए नही घूमता, घूमने के लिए खाता है। आज किसान की क्या हालत है? खाने के लिए काम करता है। लेकिन गामदानी गाँव में किसान काम के लिए खायेगा, सेवा के लिए खायेगा, उद्देश्य होगा कि हमें सेवा करनी है। तो सेवा के लिए ही वह खायेगा। देखो कितना फर्क पडता है दोनो मे। खाने के लिए काम करता है और सेवा के लिए खाता है। दोनो शख्स खाते हैं, दोनो सेवा चाहते हैं। एक खाने के लिए सेवा करता है, दूसरा सेवा के लिए खाता है।

गाँव के टुकड़े न हो

तो ग्रामदानी गाँवो में और दूसरे गाँवो में यही फर्क पड़ेगा। कुल जमीन गाँव की, सब मिलकर गाँव की सेवा करेंगे। किसी की भी मदद में जायेंगे। हम सारे भाई-भाई है। परमेश्वर के सामने सब समान हैं। हमारे गाँव के टुकडे नही होने चाहिए। पाँचो पाडवो के समान सारा गाँव रहे। पाडव जगल में घूमते थे, लेकिन शत्रु को भारी होते थे, क्योकि वे एक हुए थे। उनके बीच मतभेद नही होता था, यह बात नही। हर एक के विचार हर समय एक नही होते थे। फिर भी वे सब अपने वडे भाई को मानते थे। उनकी हार कभी नही हुई। इसलिए गाँव के लोगो को पाडवो की तरह एक होकर रहना है।

अभी दो बातें हमने आप के सामने रक्खी। एक सेवा करने के लिए सत्ता रहे। कुल गाँव की सेवा हमें करनी है। ग्रामदान बनेगा, तो सब सेवक बन सकते है। सबकी भावना होगी कि गाँव की सेवा करनी है। निष्काम सेवा की सेना बन जायगी। दूसरी बात यह है कि गाँव के टुकडे नही होने चाहिए। ये दो बातें होगी तो गाँव की उन्नति होगी। इन दो बातो पर आप को सोचना चाहिए।

भाइयो, आज के जमाने को पहचान कर उस पर सोचना चाहिए। पहले पुराने जमाने में ५० मील पर क्या हो रहा है, इसका पता नही चलता था। आज सारी दुनिया का सम्बन्ध नजदीक आ गया है, और फैल गया है। विज्ञान के कारण सारी दुनियाँ नजदीक आ गयी है। पुरानी जिन्दगी की जो पद्धति थी, वह आज नही चलेगी। पुराने जमाने में अपने-अपने परिवार अलग-अलग रखते थे। पर आज की हालत में जो समाज अलग रहेगा, वह टिक नही सकेगा। जहाँ छोटे-छोटे राष्ट्र नही टिकते, वहाँ छोटे-छोटे समाज कैसे टिक सकेंगे? आज के जमाने की माँग है कि ग्रामदान होना चाहिए।

केवल स्वच्छ, निर्मल कल्याण की बात आपके सामने हमने रक्खी है। इसमें हमारा किसी प्रकार का स्वार्थ नही है। न हमारा कोई पक्ष है, न हम वोट माँगने आये हैं। हम यह भी नही कहते कि हमको चुनो। हमको भगवान ने चुना है। उसने कहा कि जाओ, घूमो गाँव-गाँव। तुम्हारे खाने-पीने की चिन्ता मै करूँगा। इस वास्ते हम आप की उन्नति की, कल्याण की बातें

कहने आये है। इसमे हमें कोई शक नही कि हिन्दुस्तान मे ग्रामदान होकर ही रहेगा और इसमें भी शक नही कि हिन्दुस्तान में ऐसा कोई पक्ष नही है, जो ग्रामदान पसद नही करता। इससे किसी का बुद्धि-भेद नही है। आप को जो भला लगे, वह आप कर सकते हैं। जो शुद्ध विचार था, वह हमने आप के सामने रख दिया है। हमने जो कहा, वह थोडे मे फिर से बता देते हैं— (१) निष्काम सेवा अवश्य होनी चाहिए, (२) किसी कारण भी गाँव के टुकडे नही होने चाहिए और (३) जमीन पर किसी की व्यक्तिगत मालकियत नही होनी चाहिए। इन तीन बातो मे गाँव का भला है। ऐसा हमारा विश्वास है।

अप्पाकराई (मदुरा)
५-३-'५७

सर्वोदय के चार सिद्धान्त

किसी के मन मे यह भ्रम नही होना चाहिए कि सर्वोदय मे मनुष्यो को ज्यादा काम करना पडेगा। औजारो में जितने सुधार हो सकते हैं, उतने करने के लिए सर्वोदय राजी है। उसे इतना ही कहना है कि वे साधन किसान के हाथ में होने चाहिए। अच्छे साधन देने के निमित्त से किसान के हाथ से साधन छीनना और दूसरो के हाथ मे देना गलत है। आप को रास्ते बनाने है, परन्तु एक दफा रास्ते बना लिए, तो ५—७ साल में पूरे हिन्दुस्तान मे रास्ते बन जायेगे। क्या वह कोई उत्पादक काम है ? जो उत्पादक काम होता है, वह कायम रहने के लिए मनुष्य के पास रहता है। इसलिए लोगो के हाथ मे धधे होने चाहिए। गाँव में जो कच्चा माल होता है, उसका पक्का माल गाँव मे ही बनाना लोगो के लिए सबसे बडा उद्योग (इम्पलायमेन्ट) है। उसके बदले गाँव के कच्चे माल का पक्का माल शहर के कारखाने मे बनायेगे, तो गाँववालो के के पास धधे नही रहेगे। गाँव के बच्चो को मक्खन नही मिलेगा। परिणाम यह होगा कि वे बच्चे कमजोर बनेगे। आगे की आप की खेती भी कमजोर हो जायगी, जिससे सारा देश कमजोर बनेगा। इस वास्ते हमे इसमे सजग रहना चाहिए। सर्वोदय विचार यह मानता है कि गाँव के औजारो मे सुधार हो,

पुराने औजार सतत चलते रहें, यह ठीक नही है। उनमें सुधार होना जरूरी है, पर गाँव में ही हो। गाँव के कच्चे माल का पक्का माल गाँव में ही बने और गाँववाले जो चीजें इस्तेमाल करते हैं, उतनी करके बाकी की बची हुई चीजें ही बेची जाँय। गाँव में दूध, मक्खन, फल, तरकारी आदि खूब चाहिए। गाँव में दो साल के लिए पर्य्याप्त अनाज हो। गाँव के सब उद्योग गाँव में होने चाहिए। यह सर्वोदय का प्रथम विचार है।

सर्वोदय का दूसरा विचार यह है कि गाँव के लोगो को भूमि मिलनी चाहिए, नही तो गाँव में ही दो वर्ग हो जायेंगे। फिर ग्रामो में शहरो के खिलाफ खडे होने की शक्ति नही रहेगी, आपस मे लडने में ही सारी शक्ति खतम हो जायगी। शहरो का गाँवो पर हमला होगा जिसका प्रतिकार करना गाँवो के लिए असम्भव होगा। क्योकि गाँव में प्रेम नही रहेगा, झगडे रहेंगे, जिससे गाँव वालो का भला नही होगा। इसलिए जमीन पर सबका अधिकार मान कर सबको जमीन देनी चाहिए।

सर्वोदय का तीसरा सिद्धान्त यह है कि गाँव मे हर बच्चे को तालीम देनी चाहिए। वह तालीम ऐसी नही होगी कि जिसमें ज्ञान और कर्म अलग-अलग हो। आज तो बच्चे को पढना-लिखना आ गया तो काम के प्रति उसमें नफरत पैदा होती है। इसमें ग्राम के लिए भी खतरा है और देश के लिए भी। इसलिए गाँव में पराक्रमी तालीम मिलनी चाहिए, ऐसी तालीम कि जिसमें विद्या के साथ-साथ उत्पादन बढ़ा सकें। फिर देश के लोग पराक्रमी और ज्ञान-सम्पन्न होंगे।

सर्वोदय का चौथा सिद्धान्त यह है कि गाँव में किसी प्रकार का जातिभेद का ख्याल नही होना चाहिए। ये जातियाँ इसलिए बनी कि काम बँटे हुए थे, उसमे किसी प्रकार का ऊँच नीच भेद नही होना चाहिए। प्रेम में कमी न होनी चाहिए, किसी भी सार्वजनिक काम में जाति का ख्याल नही होना चाहिए, सब लोग परमेश्वर की सन्तान है, इसका सतत भान होना चाहिए।

पीलमेडु (कोइम्बतूर)
१-१०-'५७

चैतन्य वही जो चिदम्बरम्   : ८ :

सच्चा ईश्वर-भक्त

धूप सबके लिए है, इसलिए तो मैंने आप सब लोगो को धूप में बुलाया। धूप से डरोगे तो खेती कैसे करोगे ? अभी धूप ज्यादा कहाँ है, धूप ज्यादा तो बारह बजे के बाद होती है, इस प्रदेश में तो धूप कम है। धूप का मजा तो उत्तरभारत मे पलामू जिला या नागपुर मे है। यहाँ तो मामूली धूप है। इतनी धूप भी नही मिलेगी, तो बच्चे नाजुक और कमजोर बन जायेंगे। वे खेती नही कर सकेंगे। हाथ मे खेती पकडे रखेंगे और काश्त करने की ताकत नही होगी, तो हर गाँव दु खी हो जायगा। धूप बडा भारी खाना है। धूप नहीं मिली तो फसल नही बढेगी, पेड नही बढेंगे, हड्डी मजबूत नही होगी। इस लिए धूप खूब खानी चाहिए। लेकिन वह मुँह से नही खायी जाती, हाथ-पाँव-छाती से-बदन से खायी जाती है। अगर खूब धूप खाओगे तो, शरीर से गंगा, कृष्णा, कावेरी आदि बडी-बडी नदियाँ बहेगी। जहाँ पाँच नदी बहती है वह बडा पवित्र स्थान है। जो लोग धूप मे मेहनत करते है, जिनके शरीर से, जटा से नदियाँ बहती हैं, वह "शिवमेरुमाण" है। शिव भगवान् के क्या लक्षण है ? उनकी जटा से गगा नदी बहती है, घर के अन्दर बैठ रहेंगे, तो जटा में से नदी बहेगी ? इसलिए जो खूब पसीना बहाकर रोटी खायगा, वह सच्चा शिवभक्त है। बालो में से पानी गिरना चाहिये, तेल नही। पानी-अन्दरवाला पसीना निकलना चाहिए। हरएक को खेत में काम करना चाहिए। लेकिन बडे लोग शिवमेरुमाण के शिवमेरुमाण है। घर में रहते हैं, पेट में भूख नही लगती है, पसीना बहता नही है, क्योकि गगा-कावेरी सूख गयी है। अगर नदियाँ सूख जायेंगी तो फसल बढेगी ? घर मे बैठे रहोगे, तो नदी सूख जायेगी। शरीर में से अपर-भवानी, लोअर-भवानी और भवानी की केनाल्स बहेंगी, तब तो फसल आयेगी। इसलिए किसी के पास ज्यादा जमीन नही होनी चाहिए, ताकि वे घर में बैठे रहें। भारती ने गाया है कि "कापी निलम् वेणुम्"

यानी सवा एकड से ज्यादा जमीन नही होनी चाहिए। लेकिन ज्यादा जमीन होती है, तो वे घर में बैठे रहेंगे, नौकरो से खेती करायेंगे। परन्तु बडे जमीन्दारो को भी धूप में आना पडता है, क्योकि मजदूरो की देखरेख करनी पडती है। अगर वे देखरेख नही करेंगे तो मालिको की भी कावेरी सूख जायेगी और मजदूरो की भी सूख जायेगी। क्योकि मालिक घर में बैठे रहेंगे, तो मजदूर काम नही करेंगे, जैसे बैल के पीछे कोई देखरेख करेगा तभी वह काम करेगा, वैसे ही मालिक ने मजदूरो को बैल बना दिया और खुद हाथी बन गये। फिर खेती में फसल भी नही आती है। इसलिए हरएक के पास जमीन होगी, तो हरएक व्यक्ति उस पर मेहनत करेगा, जमीन में खूब पसीना बहायेगा और दिन भर काम करेगा, तो रात में सिनेमा देखने भी नही जायगा। वह यही देखेगा कि बिस्तर कहाँ है। बिस्तर मिलते ही वह सो जायेगा और परलोक मे चला जायेगा। सुबह पाँच बजे ब्रह्मलोक में आजायेगा और तैयारी करके खेत मे जायेगा। जब गाँव मे प्रेम रहेगा, तो झगडा नही रहेगा, बीमारी नही रहेगी। बीमारी गयी तो डाक्टर भी गये, और झगडे गये तो वकील भी गये। लोगो के पैसे चूसनेवाले बेकारो को हमने ही बढाया और हम खुद बेकार बने। परिणाम स्वरूप हिन्दुस्तान मे रोग, झगडे भी खूब बढ गये और फसल कम हो गयी। उसका उपाय पहचानो। यह सारा (तीरुवुरम् है) भगवान् का रूप है। इसलिए हरएक की पूरी पूजा होनी चाहिए। जो सामने बैठे है, वही चिदम्बरम् है, वे कोविल (मदिर) है। हरएक मदिर में पूजा होनी चाहिए। जो चैतन्य है, वही चिदम्बरम् है, पत्थर चिदम्बरम् नही है, वह अचित् है। जिसमें चित् है वही चिदम्बरम् है। जो वास्तव में चिदम्बरम् है, उनको हम भूल गये है। सब मदिरो की पूजा अच्छी होनी चाहिए। सतो ने यह भी कह रक्खा है "चित्तये कोविल।" एक भाई एक पुराने मदिर की दुरुस्ती करने की चिन्ता करते थे, पैसा नही था। हमने उनको कहा कि पहले आप इस (हृदय) मदिर की दुरुस्ती की चिन्ता कीजिए। उसके बाद वह मदिर दुरुस्त हो जायगा। भगवान की प्रार्थना खुली हवा में भी हो सकती है। भूमिहीन, दरिद्र, ये सब देवता है। उन सबकी पूजा अच्छी तरह होनी चाहिए।

शिवभगवान् का प्रेम ही रूप है। "अनबे शिवम्" लेकिन जब भगवान्

के हृदय में प्रेम नही रह गया, तव शिव भगवान् रुद्र भगवान् वन जाते है और कालरा जैसे रोग, अज्ञान, भूख आदि भेजते है। ये त्रिशूल है, रुद्र भगवान के तीन शूल हैं। जव शिव के भक्त ढोग करते है, प्रेम नही करते है, तव रुद्र वनते हैं वे।

भूदान मे हम कोई नई वात नही कह रहे है। आप के गाँव में जो मदिर गिर चुके हैं, गिर रहे हैं, जो वीमार हैं, दुखी हैं, अज्ञानी हैं, उनको जरा दुरुस्त करो, यही वात भूदान कह रहा है।

शिव जैसे श्रमिक बनें

शिव भगवान् की पूजा के लिए फूल चाहिए, लेकिन शिव भगवान् एक दो फूल से सतुष्ट नही होते हैं। उनको लाखो चाहिए। शिव भगवान् हमेशा लक्ष की वात करते है। उनको हमेशा लक्षदान चाहिए। उनको सहस्रदान से सतोष नही है, क्योकि दुनियाँ में लाखो लोग है। उन सवकी सेवा करनी है। इसलिए पूरी पूजा करो, लेकिन यहाँ के कार्यकर्ता भीख माँगते है। भीख माँगने की कोई जरूरत नही है। उनके दरवाजे पर जाकर समझा दो कि आप के दरवाजे पर शिवमेरुमाण आये है, दे दो। तुम्हारी भक्ति की परीक्षा हो रही है। हमारा रूप तुम ले लो, खुले शरीर से वैठना शुरु करो। ज्यादा मत पहनो। शिवभगवान् शर्ट पहनते थे क्या? मेहनत करते है, तो पसीना वहता है। खेतो में साँपो के वीच काम करना है। शिवभगवान भी एक साँप गले मे रखते है। याने वे खेत मे जाकर काम करते थे। वे कालेज में जाकर वैठते थे क्या? कालेज मे तो डरपोक लडके रहते है। खेतो मे तो रोजमर्रा साँपो से सावधान रहना पडता है। शिवमेरुमाण मोटर या हवाई जहाज में नही वैठते है। रामेश्वरम् से हवाई जहाज में वैठे और कैलाश में उतर गए। वे तो वैल पर वैठते थे, क्योकि वे किसान के देवता है। यह भी कवि ने लिखा है कि "तेन्नाडुड्डनें शिवम्।" शिव भगवान हमारे देश का स्वामी है, वह किसान है, उसका वैल के साथ सम्बन्ध आता है। किसान के शरीर मे भी गगा वहती है और खेतो में साँपो से भी सम्बन्ध आता है। शाम को चन्द्र दीखता है तव शहरवाले सिनेमा देखने जाते है, लेकिन किसानो को शाम को वैलो को चराने

के लिए जाना चाहिए। वहाँ सुन्दर चन्द्र दीख पड़ेगा। वह शिव भगवान किसान के, कुदरत के देवता हैं।

कणकुक्राय (कोयम्बतूर)
१३-९-'५६

ग्राम-धर्म : ९ :

गाँव छोटे-छोटे बने हैं, प्रेम के लिए बने हैं और कदीम जमाने से बसे हुए हैं। किसी एक घर में कोई चीज बनती है, तो दूसरे घर में मालूम हो जाता है। किसी घर में कोई बीमार हुआ, तो सारे गाँव को मालूम हो जाता है। किसी घर में लड़का पैदा हुआ, सारे गाँव को मालूम हो गया। इसलिए गाँव में एक दूसरे का अच्छा परिचय रहता है, प्रेम रहता है।

पुराना रिवाज मत छोड़िये

इसलिए गाँववाले जब हमारे सामने आते हैं, तो उनको हम पहली बात यह सुनाते हैं कि मिलजुलकर काम करने का अपना जो पुराना रिवाज था, उसको मत छोड़िये। अपने गाँव में पहले यही था कि गाँव में अच्छी फसल होगी, सब बाँट करके खायेंगे। बढ़ई हर किसान के घर में, जो काम मिलता था, करता था। उसको कोई नाप करके काम नही दिया जाता था और न नाप कर पैसा ही दिया जाता था। साल भर में जो फसल आती, उसमें से उचित हिस्सा किसान उस बढई को दे देता। जिस साल ज्यादा फसल आती, उस साल बढई को भी ज्यादा मिल जाता और जिस साल फसल घट जाती, उस साल बढई को भी कम मिलता। लेकिन वह चीज तो गाँववालो ने छोड़नी शुरू कर दी। इसलिए अब बढई भी पैसा माँगता है, बुनकर भी पैसा माँगता है, चमार भी पैसा माँगता है, तेली भी पैसा माँगता है। पैसा गाँव में बनता नही। पैसा बनता है शहरो में। नासिक के छापाखाने में जो पैसा बनता है, वह पैसा 'हमको चाहिये, हमको चाहिये' ऐसा गाँववाले कहते हैं।

पैसे के पास प्रेम नहीं टिकता

पैसे का क्या उपयोग ? पैसा न खाया जाता है, न पिया जाता है, न ओढ़ा जाता है। लेकिन लोग कहते है कि एक पैसा हाथ में आ जाय, तो वस सारी दुनिया हाथ में आ गयी, भगवान् भी हमारे हाथ में आ गया। फिर वह तेली कहता है कि चमार का जूता महँगा मालूम होता है, मै नही खरीदूंगा, मै शहर का जूता खरीदूंगा। मोची कहता है कि तुम्हारा तेल मै नही खरीदूंगा, मैं तो मिल का तेल खरीदूंगा। तुम्हारा तेल मुझे महँगा पडता है और दोनो वुनकर से कहेंगे कि तुम्हारा कपडा हमें महँगा पडता है, इसलिए हम तो मिल का कपडा पहनेंगे। वुनकर कहता है कि तुम्हारा तेल और तुम्हारा जूता हम नही ले सकते, हमें महँगा मालूम होता है, हम तो शहर का लेंगे। फिर तो गाँव का धधा खतम हो गया। सिर्फ खेती का काम रहा और कुछ रहा ही नही। खेती में क्या काम है, चार-छ महीने काम मिला, वाकी दिनो के लिए काम नही है। यदि वारिश कम हुई, तो उतने दिनो का भी काम नही।

हम गाँववालो को समझाते हैं कि भाइयो, अव आप जाग जाइये और जरा अपने गाँव का अभिमान रखिये, ग्राम-धर्म समझिये।

भगवान् की भक्ति में नाम लेते है, और वीडी-सिगरेट भी नही छोड सकते। ये सारी वुराइयाँ और व्यसन अगर गाँव में आ जायेंगे, तो गाँव विल्कुल वर्वाद हो जायेंगे, क्योकि उनसे गाँववालो की सेहत खराव होगी।

रामचन्द्रपुर (उत्कल)
१७-२-'५५

युग-धर्म का संदेश : १० :

हमने यह वात भी लोगो के सामने रखी थी कि गाँववाले ही यह तय करे और कुल-के-कुल गाँव दान में दें, क्योकि हमारा आखिरी उद्देश्य ग्रामराज्य है। गाँव मे गाँववालो का राज्य चलेगा और गाँव की कुल जमीन गाँव की होगी। गाँव का सारा समाज अपने को एक परिवार समझेगा। जैसे एक कुटुम्व

में, एक परिवार में इन्तजाम होता है, वैसे ही गाँव का इन्तजाम हो। जैसे परिवार में हर मनुष्य को तालीम मिलती हे, हर मनुष्य को अच्छा उद्योग मिले ऐसी चिन्ता रखते है, हरएक मनुष्य को खाना, पीना, कपडा-लत्ता मुहेय्या हो ऐसी चिन्ता रखते हैं, उसी प्रकार गॉव की भी व्यवस्था हो। जैसे कुटुम्व में यह नही सोचा जाता कि जिसने जितना कमाया, उतना ही खाने का उसको अधिकार है, वल्कि जितनी जिसे जरूरत हे, उसे उतना ही मिलता है।

एक ही दिन में काम पूरा

लोग हमसे पूछते हैं, आपके कार्यकर्त्ता कहॉ है ? अव समय थोडा बचा है, यह काम कैसे होगा, आप के कर्मी कितने हैं ? हम कहते है कि हमारे छत्तीस करोड कर्मी हैं। ये जो यहॉ मूर्तियॉ वैठी हैं हमारे सामने,उन्हे हम भगवान् की मूर्ति समझते हैं। उनकी भक्ति करना ही अपना धर्म समझते है, कर्तव्य समझते है। यह तो हमारा भक्ति मार्ग है कि हम हर रोज गॉव-गॉव मे घूमते है और भगवान् का सदेश सवके सामने रखते है कि भाइयो, परस्पर प्रेम करो और जमीन और सम्पत्ति को वॉट करके ही भोग करो। इतना कहते है और रात को वडे आराम के साथ परमेश्वर की गोद मे सोते है, कोई चिन्ता नही है। लोग पूछते है कि सत्तावन तक भूमि-क्रान्ति का काम पूरा करना है, यह सदेश आपने दिया है, पर समय थोडा वचा है, काम किस तरह होगा ? तो हम कहते है कि काम किस तरह होगा, यह हम नही जानते। लेकिन यह पूरा जरूर होगा, क्योकि यह भगवान् की इच्छा है। जैसे मृग-आर्द्रा नक्षत्र आता है और वारिश होती है, तो एक ही दिन में हिन्दुस्तान की कुल जमीन तर हो जाती है, कोई ज्यादा समय नही लगता। क्योकि वारिश होती है, तो हर जगह होती है। उसी तरह से भूदान का पैगाम सव गॉव मे पहुँचा दीजिये, तो आप देखेगे कि एक ही दिन मे कुल गाँवो मे जमीन का वॅटवारा हो सकता है।

तुलसीदास का काम

हम गांव-गॉव जाते है, जमीन भी मिलती है, वटवारा भी होता है, यह सव लोगो को समझाने का तरीका मात्र है। इससे और कुछ नही होता।

तुलसीदासजी का काम इतना ही है कि रामजी को वे जगायें, "जागिये रघुनाथ कुंवर" इस तरह गा-गा के रामजी को जगायें। एक दफा रामजी जग गये, तो तुलसीदासजी का काम पूरा हो जाता है। फिर सारा काम रामजी ही करेंगे। हम तो सबके हृदय में जो रामजी विराजमान हैं, उनको जगाने का काम करते हैं। वे जग जायें तो फिर कोई चिन्ता नहीं रहेगी।

हर एक को यह चिन्ता हो कि मेरे पास ज्यादा सम्पत्ति हो गयी है, तो उसे शीघ्र बाँट देना चाहिए। आज भी लोग यह करते हैं कि घर मे सम्पत्ति ज्यादा हो गयी, तो उसे घर मे रखना खतरनाक समझते है, इसलिए बैंक में रख देते है। जैसे कलकत्ता के बैंक हैं, बम्बई के है, पटना के है। उसमे रख देते है। घर में जितनी जरूरत है, उतनी ही रखते है। परन्तु हम कहते ह कि कलकत्ते के बैंक में आप क्यो रखते है? आप के ही गाँव मे बैंक है, वहाँ क्यो नही रखते? लोग पूछते है कि जब हमें जरूरत होती है, तब बैंक से वापस मिलता है। हम कहेंगे कि इस बैंक मे भी वापस मिलेगा। जब आप के पास ज्यादा सम्पत्ति आ जाय, तो आप गाँव-परिवार को दे दीजिये और गाँव के पास सम्पत्ति ज्यादा आयेगी, तो वह भी आप को समय पर दे देगा।

कराचुली (उत्कल)

२६-४-५५

जिन्दा-समाज का लक्षण : ११ :

ग्रामदान वरदान है

ग्रामदान की बात से लोगो को नाहक डराया जाता है। जिसके पास पचास एकड जमीन है, उसमे हम कहते है कि अपनी सारी जमीन गाँव को दे दो और फिर गाँव की तरफ से जो कुछ पाँच-सात एकड जमीन मिले, वह ले लो। इसमे आपका क्या नुकसान होगा? आप पाँच एकड से ज्यादा जमीन की काश्त खुद तो कर नहीं सकते है। आज भी आप पैंतालीस एकड़ जमीन की काश्त मजदूरो से करवाते है। अगर मजदूरो को पूरी मजदूरी दी जाय, तब तो आपके लिए कुछ बचेगा नही। आपको फायदा तो तब होगा,

जब आप उन्हे कम-से-कम मजदूरी देंगे और लूटेंगे। उस हालत मे आपको उनका प्रेम नही मिलेगा। वे आपको ठगने की कोशिश करेंगे। आठ घटे में से चार ही घटा काम करेंगे और फसल भी चुरायेंगे। फिर रात को दूसरे किसानो के बैल के आपके खेत मे घुसने का डर रहेगा। इसलिए या तो आपको खुद रात में जागना पडेगा या जागने के लिए मजदूर रखने पडेगे।

आप कहेंगे कि घर मे पैसा आयगा, तो फिर उस पैसे का उपयोग मौके पर सेवा खरीदने में किया जायगा। पैसे से सेवा मिलेगी, पर सेवा के साथ प्रेम नही मिलेगा। अगर आप अपनी सारी जमीन और सपत्ति गाँव को दे देते है और गाँव के परिवार में दाखिल होते है, तो आपको जब सेवा की जरूरत पडेगी, तब लोग मुफ्त में आपकी सेवा कर देंगे और उसके साथ-साथ प्रेम भी करेंगे। इसलिए आप ही तराजू मे तौलकर देखिये कि कौन-सा पलडा भारी है। ठीक सोचने से मालूम होगा कि माँ की गोद में सिर रखकर सोने मे बच्चे का कोई नुकसान नही है। यह ग्राम-समाज हमारी माँ हे।

इसलिए ग्रामदान मे सब तरह से लाभ ही लाभ है। घास के एक तिनके को फौरन काट सकते है, लेकिन तिनके को बँटकर उसकी रस्सी बनायी जाय, तो वह मजबूत बनती है। यह बात यहाँ के छोटे-छोटे गाँवो के लोग समझते हैं और इसीलिए वे ग्रामदान देते है। कुछ लोग कहते है कि बाबा को ग्रामदान देने वाले ये लोग मूर्ख है। लेकिन वास्तव में कौन मूर्ख है और कौन अकलवाला है, इसकी परीक्षा करने की जरूरत है।

डुमरपुट (कोरापुट)
२२-७-'५५

जिन्दा समाज का लक्षण

कुछ लोग कहते है कि "बाबा दारिद्रय बाँट रहा है। पहले सम्पत्ति बढने दो, फिर बाँटो।" हम उनसे कहते है कि घर मे पाँच मनुष्य हो और चार ही मनुष्य के लिए भोजन हो, तो क्या आप चारो पहले खा लेगे और पाँचवें

से कहेंगे कि पहले हम उत्पादन बढायेंगे, फिर तुमको खाने को देंगे ? परिवार में तो आप ऐसा करते हैं कि पहले जितना हो, उतना बाँटकर खा लेते है और फिर सब मिलकर उत्पादन बढाते हैं और फिर ज्यादा खाते है, इसी तरह जो नियम परिवार पर लागू होता है, वह देश और गाँव पर क्यो न लागू होना चाहिये ? अमीर और गरीब, दोनो परिवार में बाँटकर खाते हैं, फिर चाहे मिठाई हो या रोटी। परिवार में यह चलता है, क्योंकि परिवार जिन्दा समाज है। कुटुम्ब में प्रेम होता है और प्रेम ही मनुष्य का प्राण है। जिस मनुष्य में प्रेम नही है, उसमें प्राण नही है। उसको मरा हुआ समझना चाहिए। वह फूं फूं श्वाश लेता है, इसके कारण जिन्दा माना जाता है। वैसे तो लुहार का भाता (भट्ठी) भी फूं .फूं . करता है, तो क्या वह जिन्दा हो गया ? जिन्दा तो वह है, जिसमें प्रेम भरा है। समाज जब प्रेममय बनेगा, तब गाँव में एक भी दु.खी मनुष्य होगा, तो उसके दु.ख की जिम्मेवारी वह उठायेगा। फिर कोई यह नही कहेगा कि वह आलसी है, अज्ञान है, मूर्ख है, इसलिए उसे खाने को नही मिलता। चलते-चलते पैर को ठेस लग गयी और खून बहने लगा, तो आप यह नही कहते कि पैर कैसा बेवकूफ है, ठीक से चलना भी नही जानता। ठोकर लगी तो पैर जाने, हम कुछ नही जानते ! लेकिन उसकी मूर्खता की जिम्मेवारी हम उठा लेते है और फिर पांव को ठीक ढग से चलना सिखाते हैं। इसी तरह गाँव में कोई दु खी, अज्ञानी और मूर्ख है, तो पहले उसका दु ख मिटाना चहिए। उसके बाद उसको विद्या देनी चाहिए, अक्ल सिखानी चाहिए। यह जिन्दा समाज का लक्षण है। परन्तु अगर हम कहें कि तू मूर्ख है, इसलिए तुझे खाना नही मिलता, तो हम क्या करें ? यह मुर्दा समाज का लक्षण है।

सुख-दु ख बाँट लेने की कला हो तो समाज मजबूत रहता है । फिर मनुष्य आपत्ति का प्रतिकार कर सकता है, वह आपत्ति पर अधिकार कर सकता है। अगर यह कला नही सधी, तो आपत्ति में मनुष्य एकदम हिम्मत खो बैठता है।

आपत्ति के प्रतिकार की कला

हमारा सारा दारोमदार खेती पर होता है। खेत में कभी फसल कम आती

है, तो हम खतम हो जाते हैं, क्योकि हम अनाज बेचकर ये सारी चीजे लाते हैं। इसलिए पहले तो देश के कुल देहातो में दो साल का अनाज चाहिए। जो सरकार केवल एक साल के अनाज से सतोप मानती होगी, वह मूर्ख सरकार होगी। देश भर में दो साल का अनाज होना ही चाहिए और वह गाँव-गाँव में होना चाहिए। पिछले साल का अनाज इस साल खायेंगे और इस साल का अगले साल खायेंगे, ऐसा होना चाहिए। अगर अगले साल वारिश नही हुई, तो इस साल का अनाज काम में आयेगा। आज तो घर में अनाज वचा ही नही सकते, क्योकि सव चीजें खरीदनी होती है। अगर हम गाँव में ही अपनी चीजें बनाते है, तो दो साल के लिए अनाज वचा सकते हैं। आज आप केला वेचकर मिर्च खाते हैं, घी-दूध वेचकर छाछ पीते है। गाँव के लोगो की ताकत कम होगी, तो खेती कौन करेगा ? आज हमको वडे-वडे वैल दिखाये गये। देखकर खुशी हुई। परन्तु किसान कमजोर होगे, तो मजबूत बैल को पकड कैसे सकेंगे ? इसलिए सबसे वडी वात यह है कि किसानो को अच्छा खाना मिलना चाहिए। वम्वई आदि शहरो के लिए सौ-सौ मील दूरी पर से दूध भेजा जाता है, इसलिए गाँव के वच्चो को न दूध मिलता है, न छाछ मिलती है। इससे शहरवाले खुश हैं, परन्तु हम उनसे कहते है कि देहात को दुखी बनाकर तुम सुखी नही हो सकते। दूघ खरीदने के पहले आपको उनसे पूछना चाहिए कि तुम्हारे वच्चो को दूध मिलता है या नही ? अगर मिलता है, तो वचा हुआ दूध आप खरीद सकते हैं। ऐसा आप नही करेंगे, तो देहात के लोग मर जायेंगे। वे दुखी होगे, तो आप सव भी दुखी वन जायेंगे, क्योकि वे कमजोर वनेंगे, तो खेती नही कर सकेंगे और खेती कमजोर होगी तो शहरवाले भी सुखी नही हो सकते।

शहर और ग्रामो का सम्वन्ध

देश एक मकान है और वम्वई, मद्रास, कलकत्ता आदि वडे-वडे शहर उस मकान का तीसरा तल्ला है। यह कगयम् आदि वडे गाँव दूसरा तल्ला है और सवसे नीचे का तल्ला ये छोटे-छोटे गाँव हैं। मान लीजिये कि ऊपरवाला तल्ला मजबूत रहा और नीचेवाला तल्ला कमजोर रहा

तो भवन गिरेगा या नही ? बम्बई आदि बडे शहर मिल के आधार पर चलते हैं। वे कमजोर होगे, तो भी चलेगा, परतु नीचे का तल्ला यदि कमजोर रहेगा, तो नही चलेगा। देश की रचना किस तरह करनी है, इसकी यह एक मिसाल है। गॉव मे छोटी-छोटी चीजें खरीदनी पडे और अनाज, घी, दूध बेचना पडे, ऐसा नही होना चाहिए। माँ कभी बच्चे को भूखे रखकर नही खाती, क्योकि वह जानती है कि बच्चा ही कुल को आगे चलानेवाला है, इस तरह किसान और मजदूर आपके बच्चे हैं। आप उनके माता-पिता हैं। आप पहले खा लें और वे बाद में खाये, यह कैसे चलेगा ? गाँव के बच्चो को दूध, घी, मक्खन मिलना चाहिए। उनके वास्ते शहरवालो को सोचना चाहिए। यह शहर का काम है कि वे अपने गाँवो को मजबूत रखें। उनको देश की सुरक्षा इसमें मालूम होनी चाहिए कि अपने गाँव मजबूत बनें।

कंगयम (कोइम्बतूर)
१–११–५६

गॉव के लोग बिना एक हुए नहीं टिक सकते

इस गांव में ग्रामदान की कुछ चर्चा चल रही है। कुछ लोग तैयार हैं और कुछ लोगो के मन में शका है। हमे यह आश्चर्य नही होता कि लोगो को सदेह होता है, क्योकि गाँव के लोगो को इसका ज्ञान नही होता कि दुनिया मे क्या चल रहा है। आज सब देशो मे यह देखा जाता है कि अलग-अलग रहने से कोई लाभ नही होता है। पुराना जमाना ऐसा था, जब कि देश-देश के बीच और देहात-देहात के बीच सम्बन्ध नही था। लेकिन इन दिनो गाँवो का और देशो का एक-दूसरे के साथ सम्बन्ध बहुत बढ गया है। दूर के किसी भी देश मे लडाई छिड जाय, तो यहाँ के बाजार पर उसका परिणाम होगा, यहाँ के लोगो के जीवन मे एकदम उथल-पुथल होगी। उसमें उनका कोई कसूर नहीं होगा। पुराने जमाने में ऐसा नही था। तब तो गॉव में कपास अच्छी पैदा हुई, तो गाँववाले सुखी होते थे, नही तो दुखी होते थे। दूसरे गाँव के लोगो पर उसका कोई असर नहीं होता था। लेकिन आज हालत ऐसी

है कि आपके गॉव मे फसल चाहे अच्छी आयी हो या बुरी, कपास के भाव आपके हाथ मे नही है। अमेरिका मे कपास के जो भाव जाहिर होगे, उसका असर बबई, मद्रास और कोयम्बतूर के बाजारो पर पडेगा। आपके गॉव मे खूब अच्छी कपास पैदा हुई हो तो भी कपास के भाव गिर गये हो, तो आप दु खी होगे और आपके यहॉ कपास पैदा न हुई हो तो भी भाव चढ़ गये, तो फसल अच्छी न होने पर भी आप दु खी नही होगे। दूसरे पदार्थो की भी यही हालत है। कुल दुनिया का एक-दूसरे के साथ इतना सम्बन्ध बढ गया है कि कब किस गाँव पर और किस देश पर क्या आपत्ति आयेगी, यह कहा नही जा सकता।

ऐसी हालत मे यदि एक-एक घरवाला कहेगा कि अपना-अपना मै सोचूंगा और सुखी बनूंगा, तो वह नही होगा। पुराने जमाने मे यह हो सकता था, परन्तु इस जमाने मे नही हो सकता। इसलिए मुझ जैसे लोग ग्रामदान पर बहुत जोर देते है।

हिन्दुस्तान की हालत मै अच्छी तरह जानता हूँ और हिन्दुस्तान के किसान किस तरह बचेगे, इसकी राह भी जानता हूँ। गाँव के लोग, एक हुए बिना, टिक नही सकते है, यह मै अपनी ऑखो से देख रहा हूँ। आप वह नही देख सकते है, क्योकि आपको दूर देखने की ऑखे नही है। इसीलिए हम गाँव-गॉव जाकर लोगो को समझा रहे है।

आज एक घर मे भाइयो मे भी एक दूसरे के साथ नही बनती। गाँव में भी दो भाइयो की नही बनती। गॉव मे दो पक्ष हो जाते है। इस तरह के पक्षो से गाँव के काम मे बाधा नही आनी चाहिए, बल्कि गाँव का भला किसमे है,इस पर आपको सोचना चाहिए। अगर आप सोचेगे, तो आपको बात जँचेगी। गाँववाले अलग-अलग रहेगे, तो किसी आपत्ति का मुकाबला नही कर सकेंगे। एक मिसाल लीजिये। दो साल पहले उत्तर बिहार मे भयानक बाढ आयी थी। ४०० मील लबा और १०० मील चौडा प्रदेश पानी के अदर था। पिछले ५० साल में ऐसी बाढ नही आयी थी। उस वक्त उसी प्रदेश मे हमारी यात्रा चल रही थी। सारी फसल डूब गयी थी, सरकार लोगो को मदद पहुँचाने

का काम कर रही थी। गाँव-गाँव मे चावल भेजा जाता था, परन्तु कौन बाँटे और किसको बाँटे, यह सवाल खडा होता था। हर कोई अपने लिए माँग कर रहा था और जो बडे थे उनकी आवाज सुनायी देती थी। इसलिए जिन्हें मदद की जरूरत नही थी, जो खरीद सकते थे, उन्हें मदद मिलती थी और जिन गरीबो को वास्तव में मदद की जरूरत थी, उन्हें मदद नही पहुँचती थी। यह सब हमने अपनी आँखो से देखा है। अगर सारा गाँव एक हो जाता है, तो गाँव को मदद पहुँचाना आसान हो जाता है।

आरसम पालयम
१-११-'५६

ग्रामदान और सरकारी विकास-योजना : १२ :

ग्रामदान योजना और सरकारी विकास योजनाओं में फर्क

आप लोग देखते है कि आजकल हम ग्रामदान की बात सुना रहे है। लोगो के मन में शका पैदा होती है कि जैसे वालाँदूर गाँव में सरकार की योजना चलती है, वैसे ही ग्रामदान की योजना शायद हो जाय। वहाँ सबका सहयोग सहकारी पद्धति से चलाया गया है, परन्तु ग्रामदान और वालाँदूर की योजना में कोई मेल नही है। वहाँ ऐसी योजना है कि जैसे बैलो से खेत में क्या बोया जायगा आदि विषय मे पूछा नही जाता है, केवल उनको अच्छा खिलाया जाता है। वैसे वहाँ के लोगो से कुछ पूछा नही जायगा। सरकार सारी योजना बनायेगी और लोग उसके मुताबिक बरतेंगे। कुछ किसान तो बैलो को अच्छा खिलाते भी नही है, ऐसा वहाँ नही होगा। उनको खाना तो मिलेगा लेकिन उनके दिमागो को खाना नही मिलेगा। ग्रामदान मे लोगो की बुद्धि का हम पूरा उपयोग करना चाहते है। कई जगह तो हमने और मजा देखा है। वालाँदूर हमने देखा नही है। दूसरे प्रान्त की बात है। वहाँ ५०० एकड का एक सरकारी फार्म है। जहाँ जितना ले सकते है, उतना ट्रैक्टर से काम लिया जाता है और बाकी काम मजदूरो से लिया जाता है। उस फार्म मे उत्तम से उत्तम गेहूँ बोया जाता है। परन्तु वे मजदूर वह अनाज खा नही सकते

है। बैलो को तो उस गेहूँ के नीचे का डठल ही खाने को मिलता है। परन्तु उन मजदूरो के वास्ते एक "सस्ते अनाज की दूकान" खोली जाती है। इसमे "यूफेमिजम" है। वह असल मे है 'खराव अनाज', परन्तु ऐसा नाम रखेंगे तो कोई खरीदने ही नही आयेगा। इसलिए उसका नाम "सस्ते अनाज की दूकान" रखते हैं। ऐसा सस्ता अनाज देकर उन पर उपकार का वोझ भी चढाया जायगा। मजदूर खुद उत्तम अनाज पैदा करेंगे, परन्तु उन्हे वह खाने को नही मिलेगा। उनकी बुद्धि के विकास के लिए भी कोई योजना नही वनायी जायगी। कहते है उनमे बुद्धि ही नही है। वुद्धि हो, तभी तो विकास होगा न। इसलिए उसको तो काम ही करना चाहिए। यह ठीक है कि उसको खाना पूरा मिलना चाहिए और वह मिलेगा। इस प्रकार की योजना हमने फार्म में देखी है। वालाँदूर में क्या है, हम नही जानते। फिर भी वहाँ का प्रकार ग्रामदान का नही होगा, ऐसा कह सकते हैं।

ग्रामदान के गाँवो में गाँव के सव लोगो की एक समिति बनेगी। आज भी ग्रामपचायत वनती है। परन्तु उसमें वहु-सख्या से लोग चुने जायेंगे और वे भी ऐसे लोग होंगे, जिनके हाथ में जमीन, सम्पत्ति होगी, जिनका सरकार में कुछ वजन होगा। उनके हाथ में सत्ता भी आ गयी। याने हर गाँव मे गॉव को लूटने की विकेन्द्रीकरण की योजना हो गयी। बहुत दूर से लूटने के लिए लोगो को न आना पडे, इस वास्ते अपने-अपने गाँव के मुखिया ही गाँववालो को लूटें। इसलिए पचायत याने झगडा होता है।

इन लोगो ने तय किया कि कुछ लोगो में दिमाग है ही नही, इसलिए उनके वास्ते योजना वननी चाहिए। उन लोगो ने दो विभाग किये। कहा जाता है कि मिल में इतने हैंड्स हैं और इतने-इतने हेड्स है। याने जो हाथ का काम करते है उनमें दिमाग है ही नहीं और जिनमें दिमाग है, उनके हाथ नही हैं। अगर भगवान् का ऐसा विचार होता कि कुछ लोग हाथ का ही काम करें और कुछ लोग दिमाग का ही काम करें तो वह कुछ लोगो को हाथ ही देता और कुछ लोगो को दिमाग ही दिमाग देता। परन्तु सरकारी योजना ऐसी होने के कारण वह सर्व सुखकारी नही होती। वह सवका विकास करने में समर्थ नही होती।

बड़ी बात—बुद्धि का विकास

स्वराज्य-प्राप्ति के पहले हम कहते थे कि स्वराज्य-प्राप्ति के बाद सुख नहीं मिलेगा, तो भी चलेगा, लेकिन स्वराज्य चाहिए। क्योंकि स्वराज्य मे हमारा कारोबार हम चलायेंगे तो हमारी बुद्धि का विकास होगा। स्वराज्य मे सुख भी बढ सकता है, परन्तु वह बडी बात नही है। स्वराज्य में बडी बात यह है कि उसमे बुद्धि का विकास होता है। सुखी होना न होना, हमारे अक्ल की बात है। उस समय हमसे पूछा जाता था कि स्वराज्य मिलेगा तो क्या हम अधिक सुखी बनेगे ? यही आज ग्रामदान के बारे में पूछा जाता है। ग्रामदान से ज्यादा पैसा मिलेगा ? उत्पादन बढेगा ?

हम उत्पादन बढाने के वास्ते ग्रामदान नही चाहते। हम बुद्धि के विकास के वास्ते ग्रामदान चाहते है। बुद्धि के विकास के साथ-साथ सुख बढेगा ही। मान लीजिये कि सरकार किसानो से यह कह दे कि हम आपके खेतो का कब्जा लेते है। हम आपको हमेशा पाँच रुपये मजदूरी देंगे। तो हम कहेंगे कि हमको यह नही चाहिए। आपकी सलाह हम ले सकते है, परन्तु तय हम करेंगे। हमारी उन्नति हमारी बुद्धि के विकास मे ही हो सकती है। यो करते-करते हमारी योजना गलत हो जाय और उत्पादन घटे तो ? अरे, एक गाँव में घटेगा तो दूसरे गांव में बढेगा। वहाँ जो हुआ, वह देखेंगे और सीखेंगे और अगले साल उसमें फर्क करेंगे। अपनी बुद्धि के अनुसार काम करने में अगर कुछ तकलीफ सहन करनी पडे, तो भी अच्छा है।

लोग कहते है कि ग्रामदान अच्छा है, बशर्ते कि उत्पादन बढे। उत्पादन-उत्पादन क्या करते हो ? अमेरिका मे उत्पादन कोई कम नही है। जमीन, सम्पत्ति में वह देश सबसे आगे है। परन्तु दुनिया मे सबसे ज्यादा आत्म-हत्या वहाँ होती है। वहाँ किसी को समाधान नही है। सारा देश भयग्रस्त है। शस्त्रास्त्र बढा रहे हैं। कही एक जगह कुछ हुआ, तुरन्त देशवालो को कहेंगे कि अरे खतरा है, खतरा है। किसी जगह कम्युनिस्ट नेता चुनकर आया तो सैन्य सामग्री बनाने के वास्ते लोगो से पैसा माँगेगा। सारे लोग डरे हुए हैं। चाहे जितने पैसे हो, परन्तु समाधान जैसी चीज बाजार मे नही बिकती। इसलिए

ग्रामदान के गाँव में उत्पादन तो बढ़ेगा ही, इसमें क्या पूछते हो। क्योंकि जितना घट सकता था, उतना घट गया है। इसलिए वह तो घटेगा। परन्तु अगर न बढ़े, तो भी ग्रामदान चाहिए, क्योंकि इससे हर एक की बुद्धि के विकास की योजना होगी।

ग्रामदान के गाँव में हरएक की तालीम की योजना बनाई जायगी। आज कुछ ही बच्चे स्कूल में जाते हैं, बहुत से नही जा सकते। जो पढते हैं, वे शहर में नौकरी के लिए चले जाते हैं। शहर में ज्ञानी लोग पैसा लेकर ज्ञान देते हैं। इसके बिना ज्ञानी लोग गाँव-गाँव पहुँचते ही नही है। आज तो गाँव की ऐसी हालत है कि बाबा गाँव-गाँव घूमता है, लेकिन उसके ज्ञान का उपयोग ही नही हो रहा है। बाबा तो कुशलता से, विनोद से कुछ समझाता है। लेकिन बाबा का ज्ञान समझने के लिए देहातो की तैयारी नही है। एक बड़े धनी आदमी देहात में गये। उन्हें भोजन चाहिए था। गाँव के होटल में गये। होटल-वाले ने कहा कि बारह आना लगेगा। उन्होंने उसके सामने लाख रुपये का नोट रखा और कहा कि मुझे निन्यानबे हजार रुपये चार आने वापस दो। उस होटलवाले ने कहा कि मेरे पास तो सिर्फ चार आने हैं। धनी आदमी ने सोचा निन्यानबे हजार रुपये खोकर सिर्फ चार आने तो मैं नही ले सकता। तो पास में लाख रुपये होते हुए भी वह भूखा चला गया। आज की हालत में बाबा के पास ज्ञान होते हुए भी आप उसका उपयोग कर ही नही सकते। खाना, कपड़ा भी काफी नही मिल रहा है। लेकिन इससे भी बड़ी बात यह है कि लोगो की बुद्धि के विकास की योजना नही हो रही है।

शेलमपट्टी (मदुरा)
१६–३–'५७

ग्रामदान का सरकार से सम्बन्ध : १३ :

सरकार सूत्र है

आज दुनिया की हालत ऐसी है कि अलग-अलग देश के अलग-अलग राज्य हैं। सारी दुनिया का कोई एक राज्य नही है। लेकिन आगे जाकर

जब सारी दुनिया का एक राज्य बनेगा, तब ये अलग-अलग देश अपना-अपना कारोबार देखेंगे और दूसरे देशो के साथ सम्बन्ध के बारे मे दुनिया की वह बडी सरकार सोचेगी। सारी दुनिया की सरकार की सत्ता यह होगी कि वह विभिन्न देशो की सरकारो को सलाह देगी और कोई मदद दे सकती है, तो मदद देगी। दूसरे देशो के बीच कोई सवाल पैदा होगा, तो फैसला देने की सत्ता उसकी रहेगी। बाकी सब देश अपना-अपना देख लेंगे। इसी तरह गाँव-गाँव में भी अपना राज्य बनेगा। ग्रामदान के गाँव में सारा गाँव मिलकर एक परिवार होगा। वे अपना सब कारोबार देखेंगे। सरकार सलाह देगी, दे सकती होगी तो कुछ मदद देगी और दूसरे गाँवो के साथ सम्बन्ध के बारे में कोई सवाल खडा होगा तो वह उसके पास जायेगा। उस हालत मे ज्यादा-से-ज्यादा सत्ता गाँवो में आयेगी। जैसे अलग-अलग सुगधवाले फूलो को एक साथ पिरोनेवाला एक सूत्र रहता है, उस सूत्र की अपनी कोई सुगन्ध नही होती, फूल की सगति से उसमें भी सुगध आ जाती है। उसी तरह अलग-अलग गाँव को एक साथ पिरोने का काम सरकार करेगी। अलग-अलग गाँव अलग-अलग फूल हैं, सरकार सूत्र है।

गाँव के लोग एकमत हों

आज बिलकुल उल्टा है। गाँववाले सोचते हैं कि हमारी अपनी कोई सुगध है ही नही। जो कुछ सुगध है, वह सरकार में है। हम सारे गाँववाले दीन, दरिद्र, शक्तिहीन हैं, हमारे पास कुछ नही है। दूध, घी, मक्खन, फल, तरकारी, अनाज, मूँगफली आदि पैदा करने की शक्ति गाँववालो के पास है और ये कहते हैं कि हमारे पास कुछ नही है। गाँव के लोग एकमत नहीं हैं। आप ही सारी चीजें तैयार करते है, परन्तु एक-दूसरे की चिन्ता नही करते हैं। सबने अपने-अपने अलग-अलग परिवार बना लिये ह। मालिक मजदूर को कम-से कम दाम देकर ठगता है, मजदूर कम से कम काम करके ठगना चाहता है। दोनो ही देश को ठगते हैं। आठ घटे का दाम लेकर मजदूर चार घंटे का काम करता है। जैसे बैल के पीछे देख-रेख के लिए एक मनुष्य चाहिए, वसे मालिक भी मजदूर के पीछे रहेगा तो मजदूर काम करेगा! मालिक

अगर बच्चे को छोडकर गया तो मजदूर तुरन्त ही खेत छोडकर जायेगा और दो घटे के बाद लौटेगा। बच्चे को कौन पूछता है? बच्चा बाप से शिकायत करेगा, तो कहेगा कि पाखाने के लिए गया था। मालिक कम-से-कम मजदूरी देगा। इस तरह दोनो एक-दूसरे को ठगते हैं। जैसे गाडी के दो बैल एक-दूसरे का बोझ एक दूसरे पर डालने की कोशिश करते है और परिणाम-स्वरूप गाडी आगे बढती ही नही, वसे मालिक-मजदूर एक दूसरे का बोझ एक-दूसरे पर डालते है और परिणाम-स्वरूप देश की फसल कम आती है। गांव में द्वेष पैदा होता है। वे एक-दूसरे को मदद नही करते, एक-दूसरे का माल नही खरीदते। गांव का तेली, गांव के बुनकर का कपडा महँगा कहकर नही खरीदेगा और उसके धधे को काटता है। बुनकर भी उसका तेल नही खरीदेगा और बाहर से खरीदेगा। सभी चीजें बाहर से खरीदेंगे। खरीदने के लिए पैसा चाहिए तो फिर यह फल, तरकारी, अनाज, दूध, दही बेचते ही चले जायेंगे।

दो साल के लिए अनाज रहे

आज दुनिया की हालत ऐसी है कि कब महायुद्ध शुरू हो जायगा, कोई कह नही सकता। उस समय सारी चीजो के दाम बढ जायेंगे। उस हालत में जिनके पास अनाज होगा, वे ही टिकेंगे। इसलिए गाँव में दो साल के लिए अनाज होना ही चाहिए। ग्रामदानवाले गाँवो में यह हो सकेगा, क्योकि वे अपना कपडा, तेल, शक्कर आदि पक्का माल खुद तैयार कर लेंगे। आज गाँवो में कच्चा माल होता है, परन्तु पक्का माल बाहर से खरीदते हैं। फिर खेती के सिवा गाँव में कोई उद्योग ही नही रहता। सारा दारोमदार पैसे पर रहता है और पैसा शहरवालो के पास रहता है। क्योकि वे अपने मन के मुताबिक पैसे छापते रहते है। ऐसी चीज के लिए अपना सुन्दर धान्य बेच देना कितनी गलत बात है? शहरवालो को भी खिलाना चाहिए, उनको भूखा रखने की बात नही है।

हिन्दुस्तान मे सौ में से अस्सी मनुष्य गाँव में रहते है। मान लीजिये कि सौ मनुष्यो को सौ सेर अनाज चाहिए तो नव्वे सेर अनाज गाँव में रहेगा और

दस सेर अनाज बाहर जायेगा, क्योकि शहर के दो मनुष्य के बराबर गाँव का एक मनुष्य है। गाँव का लडका जितना खायेगा, उतना वहाँ का जवान मनुष्य भी नही खा सकेगा, क्योकि उनको खाना पचता नही, काम ही जो नही करते है। पसीना बहाते नही है, तो खाना कैसे पचेगा ? इसलिए वहाँ १० प्रतिशत भेजकर बाकी ९० प्रतिशत गाँव में रखना चाहिए। लेकिन आज सारा-का-सारा अनाज बेच देते है, अपने पास दो-चार महीने के लिए रखते है। अगले साल बारिश न होने के कारण फसल न हुई, तो वही अनाज ज्यादा दाम देकर खरीदेंगे और ज्यादा पैसा पास में होगा नही, इसलिए आधा पेट खायेंगे। गाँव के लोग आधा पेट खाकर रहेंगे, तो गाँव की फसल भी कम आयेगी। इसलिए भाइयो, गाँव मे दो साल का अनाज होना ही चाहिए और यह सब तब होगा जब गाँव की कुल जमीन गाँव की बनायेंगे और गाँव के धधे गाँव में खडे करेगे। अपना कपडा स्वय तैयार कर लेंगे, उसका राशन नही होगा, क्योकि हम ही उसे बचानेवाले है और बाहर से कुछ खरीदना नही है। गाँव में गाँजा, अफीम बिलकुल नही रहेगी, और बीडी भी नही रहेगी।

पैसे का कम-से-कम व्यवहार

ग्रामदान मे तीसरी बात यह होगी कि वहाँ पैसा कम-से-कम रहेगा। गाँव को शिक्षक चाहिए। वह पूछेगा कि 'तनख्वाह क्या दोगे ?,' तो हम कहेगे कि 'हमारे गाँव मे पैसा नही होता है, हम तो साल भर की फसल मे से थोडा-थोडा हिस्सा दे देगे और एक एकड जमीन देगे जिस पर मेहनत करके आप फल, तरकारी और कपास पैदा करेंगे। उसमें एक कुआँ खुदवा देगे। अपना कपडा आप स्वय तैयार कर लेंगे। खाने के वास्ते हर घर से थोडा-थोडा अनाज दिया जायेगा। फिर गाँववालो का पैसा सिनेमा देखने में नही जायेगा। शिक्षक गाँववालो को दूसरा ही सिनेमा दिखायेगा। आकाश के सुन्दर तारे, नक्षत्र दिखायेगा कि वह देखो शुक्र है, उधर बलदेव है, इधर शिवमेरमाण-शकर है, यहाँ अगस्ति ऋषि है, उधर ध्रुव है, वहाँ सप्तर्षि देव खडे है। वह सारे आकाश का सिनेमा दिखायगा। अब ब्राह्मण से पूछने के लिए दौडना नही पड़ेगा कि मृगनक्षत्र कब लगेगा। छोटा-सा बच्चा भी बता देगा

कि मृगनक्षत्र कब लगेगा। फिर गाँववालो को तीरुपावे, तिरुकुरल, माणिक्य-वाचकर के सुन्दर भजन सिखाये जायेंगे। आज तो शहर मे रात के एक-दो बजे तक रेडियो रोता रहता है। दिन में कुछ काम नही होता है, इसलिए सुबह सूर्योदय के बाद उठेगा। ग्रामदान के गाँव में तो भारतीयार के गीत पढे जायगे। सब जल्दी सोयेंगे, जल्दी उठेंगे।

आज एक प्रश्न पूछा गया कि गामदान का सरकार के साथ क्या सम्बन्ध रहेगा ? एक था बाप। वह पूछता है कि मेरा मेरे बाप से क्या सम्बन्ध है ? अरे! तू भी तो बाप ही है न ? वैसे ही यह पूछता है कि ग्रामदान के बाद सरकार के साथ क्या सम्बन्ध रहेगा ? ग्रामदान होने के बाद तुम ही सरकार बन जाओगे। तुम बन जाओगे बाप और सरकार बनेगी बेटा। तुम्हारी ताकत से सरकार को ताकत मिलेगी।

देश की शक्ति कैसे बढ़ेगी ?

स्वराज्य के पहले राजनीति में ताकत थी, क्योकि उस समय लाठी खानी पडती थी। जेल में जाना पडता था। जहाँ त्याग होता है, वहाँ शक्ति होती है। अब त्याग सामाजिक क्षेत्र में है। आज राजनैतिक क्षेत्र में मत्सर होता है। हम यह नही कहते कि वहाँ जानेवालो को वैराग्य की जरूरत नही है। उनको अपने सामने जनक का आदर्श रखना चाहिए। जनक महाराज अत्यन्त वैरागी समझे जाते थे। आज भी कुछ लोग वहाँ वैसे है, परन्तु हम चाहते हैं कि सभी वैसे बनें। वह तो उन पुरुषो का गुण होगा। परन्तु राजसत्ता चलाने में ऐसा कोई गुण नही है कि त्याग करना पडे। समाज-सेवा में त्याग करना पडेगा। अपने घर में किसी हरिजन को रख लिया तो उसको समाज का कुछ मुकाबला करना पडेगा। उसको त्याग का मौका मिलेगा। गाधीजी ने स्वराज्य के साथ हरिजन सेवा, खादी, ग्रामोद्योग, नयी तालीम सब जोड दिया। लोगो को लगता था कि स्वराज्य के साथ इसका क्या सम्बन्ध है। तो वे कहते थे कि अरे भाई, जाओ गाँवो में, इस निमित्त से लोगो से सम्बन्ध होगा तो ताकत बढेगी। वे समझ जाते थे और गाँव-गाँव जाकर यह सारी बातें समझाते थे कि चरखा चलाओ। फिर पूछते थे कि क्या शिकायत है ? अग्रेजी राज्य है इसलिए

ऐसा है। अपने राज्य में ऐसी शिकायत नही रहेगी। इस तरह उस आन्दोलन में पाने की वात है। स्वराज्य प्राप्ति के वाद किसी भी देश की सामाजिक क्षेत्र में ताकत होगी। राज्य चलाने के लिए कुछ लोग चाहिए। परन्तु वे भी तडपते रहेंगे कि समाज के लिए हम क्या करें ? ऐसा होगा तभी देश की ताकत बढेगी।

चेट्टियपट्टी (मदुरा)
२१-१२-'५६

भूदान : मजदूर आन्दोलन : १४ :

हिंसा की ताकत बेकार

इन दिनो वडे-वडे राष्ट्रो ने वहुत शस्त्रास्त्र वढ़ाये है और ऐसे वम की शोध की है कि एक वम गिरा तो हजारो मनुष्यो का सहार हो सकता है। ऐसे वम एक ही राष्ट्र के पास नही, वल्कि अनेक राष्ट्रो के पास हैं। अमेरिका के पास भी है और रूस के पास भी। इसलिए वे सारे शस्त्र अब वेकार हो रहे हैं, क्योकि शस्त्रो का उपयोग तव होता है, जव सामनेवाले के पास वे न हो और हमारे पास हो। अव दुनिया के घ्यान में आ रहा है, सोचनेवाले सोचने लगे हैं कि शस्त्रास्त्र से ताकत नही वनेगी, दुनिया का कोई मसला हिंसा की ताकत से हल नही होगा। लेकिन दुनिया में दु ख है, दरिद्रता हे, भुखमरी भी है। इन सवका उत्तर नही मिलता है, तो लोगो में शान्ति कैसे रहेगी ? इनका समाधान करने के लिए प्रेम की ताकत सिद्ध करनी होगी। प्रेम में वहुत वडी ताकत है, लेकिन सवका प्रेम एकत्र होना चाहिए। छोटे-छोटे लोगों को भी अपनी ताकत का भान होना चाहिए।

मजदूरों की ताकत कैसे वनेगी ?

हमने मजदूरो का सवाल हाथ में लिया है। आपमे से वहुत से लोग मजदूर हैं। हम चाहते हैं कि आप लोग सुखी हो, आपका जीवन सुधरे, मालिकोके और आपके वीच प्रेम सम्वन्ध वने, कोई किसी को चूसे नही, दवाये

नही। आज खेतो में काम करनेवाले मजदूर सबसे ज्यादा दु खी है और गिरे हुए हैं। इसलिए हमने उनका मसला हाथ में लिया है। परन्तु हम चाहते हैं कि शहर के मजदूरो का भी मसला हल हो। जो सबसे दु खी हैं, उनका दु ख मिटेगा तो दूसरो का भी दु ख मिटेगा। इसीलिए हमनें कहा है कि हमारा आन्दोलन मजदूर-आन्दोलन है। हम चाहते हैं कि आप मजदूरो की ताकत बने। वह कैसे बनेगी ? आपमें हिम्मत होनी चाहिए, आपको अपना दिल अन्दर से देखना चाहिए। आपमें ताकत है, परन्तु आपको उस ताकत का भान नही है। वह भान तब होगा, जब आप एक-दूसरे की मदद करना शुरू करेंगे। गरीब ही गरीबो की चिन्ता करना शुरू करेंगे तब उसमे से नैतिक ताकत बनेगी। उस ताकत से हम श्रीमानो पर भी असर डाल सकेंगे, उन्हें समझा सकेंगे, उनकी उदारता को जगायेंगे, यह हमारा रास्ता है। हम उम्मीद करते हैं कि आप इस रास्ते से चलने की हिम्मत करेंगे। ताकत तब तक नही बनेगी, जब तक वे स्वय त्याग करना नही सीखेंगे। वे समझते है कि गरीब क्या त्याग कर सकेंगे ? लेकिन गरीबो के भी बाल-बच्चे होते हैं। उन बच्चो के माता-पिता उनके लिए त्याग करते है। वे यह नही कहते कि "बेटा, तू गरीब का बेटा है, इसलिए हम तेरी चिन्ता नही कर सकते।" वे अपने बच्चो के लिए त्याग कर सकते हैं, तो अपनी जमात के लिए भी कर सकते है। गरीबो को सिर्फ माँगना ही नही सीखना चाहिए, उनमें देने की ताकत आनी चाहिए। गरीब श्रम कर सकते हैं, देश के लिए श्रमदान दे सकते है। वे गरीबो के वास्ते अपने-अपने श्रम का हिस्सा देंगे तो एक बडी पुण्यशक्ति निर्माण होगी। उसके सामने कजूस श्रीमान् नही टिकेंगे। सारे के सारे श्रीमान् कजूस नही होते है। जो उदार होगें, वे फौरन हम लोगो मे दाखिल हो जायेंगे। कजूसो पर उनका असर पडेगा। जब गरीब जाग जायेंगे और एक-दूसरे के लिए त्याग करेंगे, तो त्याग की हवा फैलेगी। आज गरीबो की इज्जत नही है, उनका त्याग प्रकट नही हो रहा है। उनमें त्याग की शक्ति है, परन्तु उसका उन्हें भी भान नही है। गरीब आपस में लडते-झगडते हैं, व्यसनो में पडे हुए है, एक-दूसरे की चिन्ता नही करते हैं, इसलिए उनकी नैतिक शक्ति नही बनती है। वे पाँच पाण्डवो की तरह एक हो जायेंगे तो उनकी शक्ति बनेगी।

त्याग-वृत्ति से ताकत बनेगी

आप गरीब है, परन्तु आपसे भी गरीब लोग है। आप उनके लिए त्याग करना सीखे। मुझे यह सुनकर खुशी हुई कि यहाँ के मजदूर-सघ ने सम्पत्तिदान देना तय किया है। पाँच हजार मजदूरो ने तय किया है कि वे प्रतिमास सम्पत्तिदान देते रहेगे। हम पैसे की ज्यादा कीमत नही करते है, त्याग-वृत्ति और प्रेम की कीमत करते है। उसी से आपकी ताकत बनेगी और गरीबो को अपनी इज्जत महसूस होगी। फिर श्रीमानो को भी उनके लिए इज्जत महसूस होगी। आज गरीब दीन बन गये है, अपने को लाचार समझते है, अपनी ताकत महसूस नही करते है, आपस मे लडने मे शक्ति खर्च करते है। परिणाम यह ह ता है कि दूसरो को भी उनके प्रति इज्जत नही मालूम होती। लेकिन अब गरीब जाग रहे है, उनके लिए इज्जत पैदा हो रही है। आज की यह सभा बता रही है कि गरीबो में कितनी जाग्रति पैदा हुई है। उसका सुन्दर उपयोग करना होगा। उसमें से अग्नि प्रकट करनी होगी। ठढी आग प्रकट करनी होगी, जो किसी को जलायेगी नही, सबको पावन करेगी, सबके दोषो को जलायेगी। ऐसी नैतिक और धार्मिक अग्नि निर्माण करनी है। उसमें गरीबो के दोष भस्म होगे। फिर श्रीमानो के भी दोष भस्म होगे। गरीब समझते है कि सारे दोष श्रीमानो में ही है। वे चूसनेवाले है, पीसनेवाले है, सतानेवाले है, निर्दय है, स्वार्थी है। श्रीमान् समझते है कि सारे दोष गरीबो मे है। वे पूरा काम नही करते है, अप्रामाणिक है, व्यसनो में पडे हुए है, आपस मे लडते-झगडते है, बुद्धिहीन है। इस तरह ये उनको हीन समझते है और वे इनको हीन समझते है। याने दोनो में एक-दूसरे के लिए हीनभाव रखने मे स्पर्धा हो रही है। जहाँ समाज में आदर ही खतम हुआ, वहाँ ताकत कैसे पैदा होगी ? सबसे पहली बात यह है कि मनुष्य को अपने लिए आदर होना चाहिए, अपनी शक्ति का भान होना चाहिए।

बुद्धि-परिवर्तन ही सही

भूदान-यज्ञ में पांच लाख लोगो ने दान दिया है, जिनमें साढे चार लाख गरीब है। जब साढे-चार लाख गरीबो ने दान दिया, तब पचास हजार श्रीमानो

को देना ही पडा, क्योकि एक ताकत पैदा हुई। श्रीमान् दो प्रकार के होते है। एक होते है हृदयवाले, उनके हृदय पर फौरन असर होता है। दूसरे होते है बुद्धिवाले। जब वे देखेगे कि गरीबो मे इतनी नैतिक ताकत पैदा हुई है कि उसके सामने हम टिक नही सकते है, तो वे भी इसमे शामिल हो जायेगे। यह बात ध्यान मे रखिये। श्रीमानो मे कुछ लोग हृदयहीन दीख पडेगे, परन्तु *यह बात नही है कि वे हृदयहीन है, बल्कि वे बुद्धिमान् है। जिनको हृदय है,* वे फौरन आपके साथ हो जायेगे। आप यहाँ भी देख रहे है कि दस-बीस श्रीमान् लोग भूदान मे लगे है, क्योकि उनमे हृदय है। जिनके पास हृदय नही है, उनके पास बुद्धि होगी। अपना काम ऐसा होना चाहिए कि जिन्हे हृदय है, उनके हृदय पर असर होगा और जिन्हे बुद्धि हे, उनकी बुद्धि पर असर होगा। अग्रेज लोग एकदम भारत छोडकर चले गये। क्या आप समझते है कि वे एकदम हृदयवान् बन गये ? ऐसी बात नही है। वे बुद्धिमान थे। उन्होने समझ लिया कि वे यहाँ टिक नही सकते, टिकने की कोशिश करेगे तो मार खायेगे, हार जायेगे। वे बुद्धिमानी से चले गये, तो उनके लिए यहाँ पर आदर भी रहा। हिन्दुस्तान मे राजा-महाराजा खतम हुए। उन्होने कोई झगडा नही किया और राज्य छोड दिया। उसके लिए उन्हें सम्पत्ति भी मिली और राजप्रमुख भी बनाया गया। अब वह राज्यप्रमुखपद भी खतम हो रहा है। उन्होने झगडा नही किया, क्योकि उनमे से कुछ हृदयवाले थे, वे हृदय से समझ गये और जो हृदयवाले नही थे, वे बुद्धिवाले थे, वे बुद्धि से समझ गये कि इसके आगे वे टिक नही सकते है। सारा प्रवाह राज्य के लिए विरुद्ध है, इतना वे समझ गये। जिनके हाथ मे सत्ता और सम्पत्ति होती है, वे या तो हृदयवान होते है या बुद्धिमान होते है। जिसको हृदय भी नही और बुद्धि भी नही, ऐसा मनुष्य उनमे होता ही नही। क्योकि दोनो मे से एक भी न हो तो उनके पास सत्ता या सम्पत्ति आयेगी ही नही। इसीलिए मै किसी भी श्रीमान् को हृदयहीन नही कहता। मै कहता हूँ कि वह हृदयहीन दीख पडेगा, परन्तु होगा बुद्धिमान ही।

भूदान और सम्पत्तिदान मे से नैतिक ताकत पैदा होगी, तो हृदयवाले श्रीमान् साथ हो जायेगे और बाकी श्रीमान् भी आहिस्ता-आहिस्ता पीछे

आयेंगे। कुछ लोग पूछते हैं कि "आप सब श्रीमानो का हृदय-परिवर्तन कैसे करेंगे ? कुछ लोगो में हृदय ही नही होता है, तो फिर आप उनका हृदय-परिवर्तन कैसे करेगे ?" मैं उन्हें जवाब देता हूँ कि जिन्हें हृदय नही है, उन्हें बुद्धि तो है, इसलिए हम उनका बुद्धि-परिवर्तन करेंगे। बाबा का भूदान का कार्य हृदयवान और बुद्धिमान कार्य है। यह प्रेम का कार्य है, इसलिए इसमें हृदयवाले आयेगे। यह ऐसा कार्य है कि इसके बिना श्रीमान् बच ही नही सकते। वे समझ गये हैं कि जमाना बाबा के साथ है, अगर हम काल के साथ अनुकूल होगे तो बचेंगे, नही तो हर्गिज नही बच सकते हैं। इसलिए बाबा को पूरा विश्वास है कि श्रीमानो की चिन्ता करने का कोई कारण नही है। चिन्ता गरीबो की ही करनी है। उनमें त्याग और प्रेम पैदा हो, उनकी हृदयशुद्धि हो, वे एक-दूसरे को मदद करके बलवान बनें, श्रीमानो के सामने दीन न बनें, बल्कि छाती खोलकर खडे रहे और उनके दुर्गुणो को खतम करें। यह शुद्धि का कार्य गरीबो में हो, तो उनकी ताकत बनेगी।

मजदूरों का दान . वटबीज

यहाँ के मजदूर हमें सम्पत्तिदान देंगे, तो क्या करोडो रुपयो का ढेर लगेगा? वे करोडो का ढेर नहीं लगायेंगे,थोडा-थोडा देंगे। लेकिन यह जो थोडा है, वह वटबीज है। वटवृक्ष का बीज बोया जाता है, तो उसमें से प्रचण्ड वृक्ष पैदा होता है। आप मजदूर लोग जो थोडा-सा धन देनेवाले हैं, उसे बाबा बोयेगा। उसका उपयोग भूमिहीनो के लिए, गरीबो के लिए किया जायेगा। फिर बाबा आपकी ताकत लेकर श्रीमानो के पास पहुँचेगा और उनसे पूछेगा कि "देखो गरीबो ने इतना दिया है, तो आप भी दीजिये। उसने रुपये मे दो पैसा दिया है तो क्या आप भी उतना ही देंगे ?" फिर श्रीमान् समझ जायेंगे और प्रेम से दान देने के लिए सामने आयेंगे। प्रेम से नही आयेंगे, तो लज्जा से आयेंगे। एक अमेरिकन भाई ने हमसे पूछा कि "बाबा, क्या आपको सभी लोग प्रेम से दान देते हैं ? कोई लज्जा से नही देते है ?" हमने जवाब दिया कि लज्जा से देते हैं, तो ज्ञानपूर्वक देते हैं। छोटा बच्चा नगा रहता है, उसे लज्जा नही मालूम होती। क्योंकि उसे ज्ञान नहीं होता। अगर ज्ञान होता तो लज्जा

मालूम होती। इसलिए जो लज्जा से दान देता है, उसे ज्ञान हुआ है कि देना धर्म है। इसलिए जो लोग मुझे प्रेम से देते है, उनका दान मुझे अत्यन्त मजूर है और जो लज्जा से देते हैं, उनका दान मुझे अत्यन्त मजूर है, क्योंकि एक ने हृदय से दिया है, दूसरे ने बुद्धि से दिया है। शास्त्रो में भी लिखा है कि "श्रद्धया देयम्, अश्रद्धया अदेयम्, ह्रिया देयम्, भिया देयम्।" श्रद्धा से दो, अश्रद्धा से मत दो, लज्जा से दो, भय से दो। यह शास्त्र की आज्ञा है। हम अगर नही देते है, तो हमारा भला नही होगा। इसको भय कहते है। यह भी ज्ञान है। हम नही देते है, तो लोग हमसे घृणा करेंगे, इसको लज्जा कहते है। यह भी ज्ञान है। जो लज्जा से देते है, जो भय से देते है, जो प्रेम से देते हैं, वे ज्ञान से देते है। इसलिए मुझे प्रथम चिन्ता आप गरीबो की करनी है।

एक भी मजदूर, एक भी गरीब, विना दान दिये नही रहना चाहिए, आपको अगर आधा पेट खाना मिला, तो उसमें से भी एक कौर देना चाहिए वह तपस्या होगी। तपस्या से ही ताकत पैदा होगी।

सिगनल्लर
३-१०-'५६

ग्रामीण अर्थशास्त्र : १५ :

अनाज की कीमत की कल्पना ही गलत

अनाज ऐसी वस्तु है कि उसके विना किसी का नही चलता। वह उसको मिलना चाहिए। इसलिए यह महँगा भी नही विक सकता। वास्तव मे तो 'अनाज की कीमत' यह कल्पना ही छोड देनी होगी। जैसे हवा, पानी, सबको मुफ्त में मिलते है, वैसे अनाज भी विना दाम मिलना चाहिए। अगर मुफ्त न मिल सके तो, कम-से-कम दाम होना चाहिए कि वह मुफ्त जैसा ही मालूम हो। लेकिन अगर अनाज का बहुत कम दाम मिलता है, तो किसानो को तकलीफ होती है। इसलिए न महँगा और न सस्ता, ऐसा बीच का रास्ता निकालना चाहिए। वह इतना महँगा भी न होना चाहिए कि दूसरे लोगो को तकलीफ हो और वह इतना सस्ता भी न होना चाहिए कि किसानो को तकलीफ हो।

यह तो जाहिर है कि अनाज पैदा करके वहुत पैसा पैदा नही कर सकते है। किसान यह वात जानते है। अनाज की कुछ ज्यादा कीमत होनी चाहिए। ऐसी किसान लोग माँग करते है, परन्तु वे जानते है कि अनाज वहुत ज्यादा महँगा नही हो सकता। जो चीज सवको चाहिए वह महँगी नही हो सकती। इसलिए किसान तम्वाकू, गन्ना, जूट, कपास, हल्दी जैसी पैसे की चीजें वोते है। यह भी ज्यादा दिन नही चलेगा, क्योकि दिन-व-दिन जनसख्या वढ रही है। इसलिए जितनी जमीन मे दूसरी चीजें वोयी जायेगी, उतने प्ररिमाण में अनाज कम मिलेगा। देश को नुकसान होगा। अगर ज्यादा गन्ना वोये, तो यद्यपि शक्कर खाने की चीज है, फिर भी वह अनाज की जगह नही ले सकती। दो तोले शक्कर दो तोले अनाज के वदले मे ले सकते है, लेकिन उससे ज्यादा शक्कर नही खा सकते। इसलिए अनाज कम पडे, उतना गन्ना नही वो सकते। देश को कपास भी चाहिए क्योकि कपास के विना कपडा नही वनेगा। लेकिन कपास ज्यादा वोयेगे, तो कपड़ा खूब मिलेगा, परन्तु अनाज कम मिलेगा। अनाज के वदले में कपड़ा, तम्वाकू, गन्ना आदि नही चलेगा। जैसे-जैसे जन सख्या वढती चली जायेगी, वैसे-वैसे अनाज के लिए ही जमीन का उपयोग करना होगा और पैसे के लिए जो चीजे वोते है, वे शायद छोडनी पडेंगी, या तो कम-से-कम वोनी होगी। अनाज की कीमत वहुत ज्यादा नही हो सकती, इसलिए किसान को वहुत ज्यादा पैसा नही मिल सकता, यह निश्चित है। तो वह दूसरी कौन-सी चीज वोयेगा।

जमीन पोषण का साधन, पैसे का नही

किसान को पैसे के आधार पर अपना जीवन नही रखना चाहिए। उसके हाथ मे दूसरे उद्योग होने चाहिए। तेल, शक्कर, जूता, कपडा आदि चीजे गाँव को खरीदने की चीजे नही होनी चाहिए। वे चीजे अपने गाँव मे ही वननी चाहिए। किसान के हाथ मे कुछ उद्योग होने चाहिए और उस उद्योग का माल शहर में वेचा जाना चाहिए और वह महँगा भी होना चाहिए। आज-कल गाँव के लोग वाहर मे तेल खरीदते हैं। वह शुद्ध नही होता। इसलिए जवानी मे वाल पक जाते है। इसलिए गाँववालो को अपना खुद का तेल

वनाना चाहिए और बाकी बेचना चाहिए। कपडे का भी वैसा ही होना चाहिए। किसानो की चीज महँगी होनी चाहिए इसलिए खादी महगी है। गाँववाले उसके खिलाफ शिकायत करते हैं कि खादी महँगी है। अरे, यह तो तुम्हारी चीज है। वह बेचने की चीज है, खरीदने की नही। उसका तो ज्यादा पैसा मिलना चाहिए, तभी किसानो को कुछ पैसा मिलेगा। क्योकि अनाज में तो उनको खास पैसा मिलेगा नही। जनसख्या वढेगी, तो दूसरी चीजें पैदा नही कर सकेंगे और दस-बीस साल के वाद ज्यादा-से-ज्यादा जमीन अनाज में लगानी पडेगी। इसलिए तुम्हारी चीजें शहरो में बेची जानी चाहिए, तुमको खरीदनी नही चाहिए। इसलिए आप सब लोगो को खद्दर पहनना चाहिए और बची हुई खद्दर शहर में बेचनी चाहिए। शहरवालो को उसका ज्यादा दाम देकर खरीदना होगा। परन्तु आज तो देहात के लोगो का कुल जीवन पैसे पर खडा किया गया है, खेती के सिवा बाकी धधे टूट गये है। आज जमीन पैसे का साधन हो गयी है, जो नही होना चाहिए। जमीन माता है। वह सबके पोषण का साधन हो सकती है, पैसे का साधन तो उद्योग होना चाहिए और उसका खुद उपयोग करना चाहिए। आज तो जमीन को ही पैसे का साधन वनाया गया। इसलिए गरीव लोगो के हाथ से पैसेवालो ने जमीन छीन ली। घर में शादी हुई तो सौ रुपए का कर्जा दो सौ रूपया लिखवाकर लेना पडा। दिन-व-दिन रुपए वढते गये और आखिर दो सौ रुपए के वदले मे पॉच एकड जमीन देनी पडी। इस तरह जमीन की पैसे में कीमत हो गयी और किसान बेचारा बेहाल हो गया। घर में कल्याण (तमिल में अर्थ 'शादी) के वदले सर्वनाश हो गया और जमीन श्रीमानो के हाथ में आ गयी और लोगो ने जमीन की कीमत शुरू की। जमीन का मल्य रुपए में नही हो सकता। दस हजार रुपए के नोट को गढे में रखकर ऊपर पानी डालोगे, तो फसल आयेगी ? मिट्टी की कीमत पैसे में हो ही नही सकती। मिट्टी में से खाने की चीजें मिल सकती है, उसमें से पैसे नही मिल सकते। जमीन तो हमारी माँ है। माँ की कीमत पैसे में नही हो सकती। परन्तु आज जमीन पैसे का साधन वनी और वह चन्द लोगो के हाथ में आ गयी। क्योकि पैसा किसानो के हाथ

की चीज नही है। नासिक के छापेखाने मे पैसे छपते हैं। वहाँ एक रुपए के नोट वनाने में जो श्रम होता है, वही श्रम सौ और हजार रुपए के नोट वनाने में लगाना पडता है। सिर्फ दो-चार शून्य और लगा दिये तो एक में से सौ और हजार रुपए के नोट हो गये। परन्तु एक रुपए के अनाज के वदले में सौ रुपए का अनाज वनाने में सौ-गुना श्रम करना पडता है। शहरवालो को पैसा वनाने में तकलीफ नही होती। आपने भी जमीन को पैसे का आधार वनाया, तो आपकी चोटी उनके हाथ में आ गयी। कुल जमीन गाँव के वडे लोगो के हाथ में है। वे खुद तो खेती नही करते हैं। उनके बच्चे भी शहर के कालेजो में पढते हैं। यह आपकी वडी भारी गलती है। जमीन की मालकियत ही नही हो सकती। कोई अगर गगा-कावेरी नदी की मालकियत वनाये या कुएँ का मालिक वनकर पानी वेचना शुरू करे, तो चलेगा ? वैसे ही जमीन की मालकियत नही हो सकती। वह पैसे की चीज नही, प्राण की चीज है। उस पर अपना प्राण टिकेगा। परन्तु आपने उसकी पैसे मे कीमत आँकी। उसके परिणामस्वरूप गाँव के उद्योग टूट गये और गाँव के लोग चूसे गये। बहुत ज्यादा लूटनेवाले शहर में होते हैं। गाँव के लोगो को लूट कर पैसा इकट्ठा करने वालो को शहरवाले खूब लूटते है। लूटने का तो शहर में व्यापार ही चलता है। इसलिए गाँव को लूटने वाले, गरीव लोगो की तुलना में ज्यादा पैसेवाले होते है। परन्तु शहर में तो वेही लूटे जाते हैं। क्योकि जमीन से वे कितने पैसे कमायेगे ? इस तरह शहरो मे एक-दूसरे को मारकर लोग जीते हैं। इससे समाज कभी सुखी नही हो सकता, समाज में शान्ति नही हो सकती। हृदय का समाधान नही हो सक जीवनता और मे कभी पूर्णता नही आयेगी। क्योकि जहाँ देखो वहाँ सव चीजो की कीमत पैसे में होने लगी है, और पैसे शहरवालो के हाथ में है। आपको सुखी होने के लिए चार-पाँच चीजें करनी होगी—(१) जमीन पैसे की चीज नही होनी चाहिए, जमीन पैसे का आधार नही होनी चाहिए, (२) गाँववालो को पैसे की ज्यादा जरूरत नही होनी चाहिए, (३) थोडा पैसा चाहिए तो उसके लिए गाँव मे उद्योग चाहिए और उन उद्योगो की चीजें वाहर वेंचनी पडेगी, (४) उन उद्योगो की चीजो का दाम ज्यादा होना चाहिए, और (५) गाँव में सव लोगो को जमीन मिलनी चाहिए। जैसे शादी करने का अमीर-गरीव आदि सभी को हक है, क्योकि

उसकी सबको जरूरत है, वैसे देहात में हर मनुष्य को जमीन मिलनी चाहिए। इसलिए गाँव की जमीन सब में बाँटो। जमीन का मूल्य पैसे में नही हो सकता। इतनी उसकी कीमत है।

यह गाँव का अर्थशास्त्र है। यह ग्रामीण अर्थशास्त्र आप समझ लेंगे, तो आपको भूदान समझाने की जरूरत नही रहेगी। आप गाँव मे जमीन बाँट लेंगे, गरीबो को जितनी जमीन चाहिए उतनी दान में देगे, गाँव मे ग्रामोद्योग खड़ा करेंगे। महत्व की चीजे बाहर से नही खरीदेंगे, खुद बनायेंगे और जो चीजें बाहर बेचेंगे, उनका दाम ज्यादा रखा जायेगा। यह सब इन्तजाम सघशक्ति से किया जायेगा। अलग-अलग बेचने जायेंगे तो ज्यादा पैसा नही मिलेगा, इसलिए आप को गाँव का एक सघ बनाना होगा। यही हमारा ग्रामीण-अर्थ-शास्त्र है।

सिवा गौरी (कोयम्बतूर)
२७–१०–५६

गाँव-शासन निरपेक्ष हो : १६ :

आज गाँव में अनेक प्रकार के भेद है ,जो मिटाने होगे। इसके लिए गाँव की एक समिति बनानी होगी। गाँव में २१ साल के ऊपर के जितने स्त्री-पुरुष है, उन सबकी एक सभा बनेगी, वे लोग सबकी एक-राय से ८–१० व्यक्तियो की एक समिति चुनेंगे, आजकल की तरह बहुमति से नही। आज-कल तो यह होता है कि७लोगो ने इधर राय दी और ६ लोगो ने उधर राय दी, तो ७ वालो की जीत मानी जाती है। फिर गाँव में ७ और ६ वालो के बीच कटुता कायम रह जाती है। जिस गाँव के दो टुकडे हो जाते हैं, उस गाँव का कभी भला नही हो सकता। इसलिए अपने यहाँ पश्चिम से चुनाव का जो तरीका आया है, वह गाँवो के लिए खतरनाक है। गाँव के चुनाव सर्वसम्मति से होने चाहिए। उसमें किसी प्रकार का जातिभेद न हो।

गाँव की जिम्मेवारी गाँववालों पर

भूदान आन्दोलन में जमीन हासिल हुई और २-३ साल होने पर भी वह बाँटी नही गयी है। होना तो यह चाहिए कि गाँव के लोगो की एक आम सभा बुलाकर भूमिहीनो की राय से जमीन बाँट देनी चाहिए। फिर मालिको की तरफ से उन्हें और मदद पहुँचायी जानी चाहिए। यह सब काम गाँववालो को ही करना चाहिए और फिर जिन्होने दान दिया और जिन्हें दान मिला, उनके हस्ताक्षर लेकर भूदान-समिति के पास भेद देना चाहिए। भूदान-समिति सिर्फ रेकार्ड रखेगी। अगर किसी ने सलाह माँगी तो सलाह देगी, साहित्य निर्माण करेगी, उसका प्रचार करेगी और लोगो को समझाने का काम करेगी। लेकिन हर गाँव का कारोबार क्या भूदान-समिति चलायेगी? वह काम तो गाँववालो को ही करना होगा। जमीन देना भी गाँववालो का काम है, जमीन बाँटना भी उनका काम है, भूमिहीनो को और मदद देना भी उन्हीका काम है और भूदान-समितिके पास इत्तला भेजना भी उन्हीका काम है। अपने गाँव में ग्रामराज्य बनाना भी उन्हीका काम है। गाँव मे कोई बेकार न रहे, इसकी जिम्मेवारी भी गाँववालो को ही उठानी चाहिए। आप जो चीजें इस्तेमाल करते है, वे ही उद्योग देने होगे। आपको कपडा चाहिए और शहर से मिल का कपडा खरीदते है। आपको तेल, गुड चाहिए लेकिन आप बनाते नही है, शहर से खरीदते है। तो फिर आप बेकारो को कौन-सा काम देंगे? सब लोगो का केवल खेती से काम नही चल सकता। गाँववाले कच्चा माल पैदा करके, उसे बेचकर, शहर का पक्कामाल खरीदते रहेंगे, तो हमेशा घाटे मे रहेंगे। इसलिए गाँव मे उद्योग खडे करके सबको काम देना चाहिए। गाँव के कारोबार के लिए गाँव की समिति बनाना, गाँव मे सबको उद्योग देना, गाँव की सब शादियो का गाँव की तरफ से इन्तजाम करना, गाँव की तरफ से एक दूकान चलाना, जिससे गाँववालो को अच्छा माल मिले और उन्हें कोई ठगे नही, बाहर से चीजे खरीदना और गाँव की चीजे बाहर भेजना आदि सब काम उस दूकान के जरिये होगे। इस तरह गाँववालो में यह उत्साह उत्पन्न होना चाहिए कि हमें अपने गाव का राज्य बनाना है,

हम अपने गाँव को सुन्दर बनायेंगे, गॉव में ज्ञान, आरोग्य और सम्पत्ति बढायेंगे, धंधे बढायेंगे, गॉव की पैदावार बढायेंगे, मिलजुलकर काम करेंगे और बॉट कर खायेंगे। जिस तरह घर का प्रमुख व्यक्ति घरवालो की जिम्मेवारी उठाता है, उसी तरह गॉव का कोई भी मनुष्य गॉव की समिति के पास जाकर काम मॉगेगा तो उसे फोरन काम दिया जायेगा। इस तरह गॉव-वालो को काम करना है।

कुछ लोग पूछते है कि भूदान मे जो इतनी जमीन मिली है, वह कैसे बँटेगी ? आरम्भ मे ज्यादा काम नही हुआ था, इसलिए भूदान-समिति के जरिये बँटवारे का काम कराया, परन्तु अब तो गाँव-गाँव और घर-घर मे काम होना चाहिए। पॉच लाख गाँवो का इतना विशाल काम क्या कोई भूदान-समिति करेगी ? वह काम तो पॉच लाख गाँवो को ही करना होगा।

अभी सरकार ने पॉच साल के लिए एक योजना बनायी है। उसमें ४८०० करोड रुपये की सम्पत्ति लगनेवाली है। याने एक साल के ९६० करोड रुपये, एक महीने में ८० करोड रुपये। अपने देश मे ३६ करोड लोग हैं, याने हर मनुष्य के पीछे हर महीना सवा दो रुपया, याने रोज के पॉच पैसे खर्च होगे। इन पाँच पैसो मे ही रास्ते बनेंगे, रेलवे बनेगी, गाँव की सेवा होगी, खेती बढेगी, धंधे बढेंगे, लोगो को सब प्रकार की मदद दी जायेगी। पॉच पैसे याने एक मनुष्य का एक घंटे का काम। अब आप ही सोचे कि सरकार जो बडी-बडी योजनाएँ बना रही है, वह आपकी शक्ति का कितना हिस्सा है ? आप के एक घंटे की ताकत का काम सरकार करने जा रही है। आदमी २४ घंटो में से १४ घंटे खाना, सोना, आराम आदि में बितायेगा, तो भी उसके पास काम के १० घंटे पडे है। आपकी १० घंटे की ताकत है और सरकार जो योजना बना रही है, उससे आप को १ घंटे की ताकत दे रही है।

सरकार के पास क्या ताकत है ?

लोग कहते है कि सरकार सब कुछ करेगी। कही पर बडा भारी नल हो, तो उसका पानी ज्यादा है या बूंद-बूंद बारिश का ? सरकार के जरिये जो

काम होगा, वह हर घर में नही होगा। कुछ खास जगहो पर होगा, तो एक वडे नल का पानी बहता हुआ दीखेगा। आप कहेंगे कि सरकार ने कितना वडा काम किया, वगलोर में सेलम रेलवे वनायी। लेकिन घर-घर में जो काम होता है, वह बूंद-बूंद वारिश के समान है। आप लोग एक प्रस्ताव कीजिये कि जिस तरह स्कूलवाले, साल में एक-दो महीनो की छुट्टी लेते है, उसी तरह सरकार एक साल की पूरी छुट्टी ले। फिर दुनिया का क्या विगडता है, जरा देख लीजिए, किसान खेती करते रहेंगे, धधेवाले अपना-अपना धधा करेंगे, वाजार में वेचनेवाले वेचेंगे, खरीदनेवाले खरीदेंगे, जिनकी शादियाँ होनेवाली है, उनकी शादियाँ होगी, मरनेवाले मरेंगे, जिनको श्मशान ले जाना है, उनको वहाँ ले जायेंगे, जो पैदा होनेवाले है वे पैदा होगे, वच्चो को उनकी मातायें दूध पिलायेंगी। आरोग्य मत्री नही होगा तो उसके विना क्या रुकेगा ?

कुछ लोग कहते है कि पुलिस न हो, तो चोरियाँ वढेंगी। लेकिन पुलिस ही चोरी करती है। पुलिस न हो तो चोरियाँ कम होगी। चोरी इसलिए होती है कि कुछ लोग अपने पास वहुत ज्यादा धन रखते है। किसी गरीव मनुष्य ने अपनी वीवी-वच्चो को खिलाने के लिए काम ढूंढा। परन्तु काम नही मिला, इसलिए उसने किसी श्रीमान के घर में चोरी की। उसे पकड़ कर कोर्ट में ले जाया जाता है और दूसरे एक वेकार मनुष्य के सामने खडा कर दिया जाता है, जिसे न्यायाधीश कहा जाता है। आप अगर झगडा नही करेंगे, तो उसे उस कुर्सी पर वैठने के सिवा और कोई काम नही रहेगा, वह वेकार मनुष्य इस चोर को तीन साल की सजा देता है। एक वेकार ने ५० रुपये की चोरी की, इसलिए उसे सजा देने के लिए हजार रुपये माहवार पानेवाला दूसरा वेकार रखा जाता है। जिसे सजा होती है, उसे तो जेल मे ठीक से समय पर, दिन में तीन वार खाना मिलता है। १४ घटे आराम मिलता है, वास्तव मे सजा तो उसके वीवी-वच्चो को होती है, जो वाहर भूखो मरते है। क्योकि उनके घर में जो कमानेवाला था, उसीको आपने जेल में रखा। वास्तव मे ऐसे चोर को तीन साल की सजा नही, वल्कि तीन एकड़ जमीन देनी चाहिए और कहना चाहिए कि इस पर मेहनत करके वह अपने वीवी-वच्चो का पालन-पोषण करे। फिर वह चोरी क्यो करेगा ? चोरो का भय विल्कुल व्यर्थ है। चोरो का भय चोरो ने निर्माण

हम अपने गाँव को सुन्दर वनायेंगे, गाँव में ज्ञान, आरोग्य और सम
वढायेंगे, धधे वढायेंगे, गाँव की पैदावार वढायेंगे, मिलजुलकर काम व
और वाँट कर खायेंगे। जिस तरह घर का प्रमुख व्यक्ति घरवालों
जिम्मेवारी उठाता है, उसी तरह गाँव का कोई भी मनुष्य गाँव की समिति
पास जाकर काम माँगेगा तो उसे फौरन काम दिया जायेगा। इस तरह ग
वालो को काम करना है।

कुछ लोग पूछते है कि भूदान मे जो इतनी जमीन मिली है, वह कैसे बँटेग
आरम्भ में ज्यादा काम नही हुआ था, इसलिए भूदान-समिति के जरिये बँट
का काम कराया, परन्तु अव तो गाँव-गाँव और घर-घर में काम होना चाहि
पाँच लाख गाँवो का इतना विशाल काम क्या कोई भूदान-समिति करेग
वह काम तो पाँच लाख गाँवो को ही करना होगा।

अभी सरकार ने पाँच साल के लिए एक योजना बनायी है। उ
४८०० करोड रुपये की सम्पत्ति लगनेवाली है। याने एक साल के ९
करोड रुपये, एक महीने में ८० करोड रुपये। अपने देश में ३६ करोड ल
है, याने हर मनुष्य के पीछे हर महीना सवा दो रुपया, याने रोज के प
पैसे खर्च होगे। इन पाँच पैसो में ही रास्ते वनेंगे, रेलवे वनेगी, गांव की र
होगी, खेती वढेगी, धधे वढेंगे, लोगो को सव प्रकार की मदद दी जायेग
पाँच पैसे याने एक मनुष्य का एक घटे का काम। अव आप ही सोचें
सरकार जो वडी-वडी योजनाएँ वना रही है, वह आपकी शक्ति का कित
हिस्सा है ? आप के एक घटे की ताकत का काम सरकार करने जा रही
आदमी २४ घटो में से १४ घटे खाना, सोना, आराम आदि में बिताये
तो भी उसके पास काम के १० घटे पडे है। आपकी १० घटे की ताकत
और सरकार जो योजना वना रही है, उससे आप को १ घटे की ताकत
रही है।

सरकार के पास क्या ताकत है ?

लोग कहते है कि सरकार सव कुछ करेगी। कही पर वडा भारी नल ।
तो उसका पानी ज्यादा है या बूंद-बूंद वारिश का ? सरकार के जरिये

काम होगा, वह हर घर में नही होगा। कुछ खास जगहो पर होगा, तो एक बडे नल का पानी बहता हुआ दीखेगा। आप कहेंगे कि सरकार न कितना बडा काम किया, बगलोर मे सेलम रेलवे बनायी। लेकिन घर-घर में जो काम होता है, वह बूंद-बूंद बारिश के समान है। आप लोग एक प्रस्ताव कीजिये कि जिस तरह स्कूलवाले, साल में एक-दो महीनो की छुट्टी लेते हैं, उसी तरह सरकार एक साल की पूरी छुट्टी ले। फिर दुनिया का क्या विगडता है, जरा देख लीजिए, किसान खेती करते रहेंगे, धधेवाले अपना-अपना धधा करेंगे, बाजार में बेचनेवाले बेचेंगे, खरीदनेवाले खरीदेंगे, जिनकी शादियाँ होनेवाली है, उनकी शादियाँ होगी, मरनेवाले मरेंगे, जिनको श्मशान ले जाना है, उनको वहाँ ले जायेंगे, जो पैदा होनेवाले हैं वे पैदा होगे, बच्चो को उनकी मातायें दूध पिलायेगी। आरोग्य मत्री नही होगा तो उसके बिना क्या रुकेगा ?

कुछ लोग कहते हैं कि पुलिस न हो, तो चोरियाँ बढेंगी। लेकिन पुलिस ही चोरी करती है। पुलिस न हो तो चोरियाँ कम होगी। चोरी इसलिए होती है कि कुछ लोग अपने पास बहुत ज्यादा धन रखते हैं। किसी गरीब मनुष्य ने अपनी बीवी-बच्चो को खिलाने के लिए काम ढूंढा। परन्तु काम नही मिला, इसलिए उसने किसी श्रीमान के घर में चोरी की। उसे पकड कर कोर्ट में ले जाया जाता है और दूसरे एक बेकार मनुष्य के सामने खड़ा कर दिया जाता है, जिसे न्यायाधीश कहा जाता है। आप अगर झगडा नही करेंगे, तो उसे उस कुर्सी पर बैठने के सिवा और कोई काम नही रहेगा, वह बेकार मनुष्य इस चोर को तीन साल की सजा देता है। एक बेकार ने ५० रुपये की चोरी की, इसलिए उसे सजा देने के लिए हजार रुपये माहवार पानेवाला दूसरा बेकार रखा जाता है। जिसे सजा होती है, उसे तो जेल मे ठीक से समय पर, दिन में तीन बार खाना मिलता है। १४ घटे आराम मिलता है, वास्तव में सजा तो उसके बीवी-बच्चो को होती है, जो बाहर भूखो मरते हैं। क्योकि उनके घर में जो कमाने-वाला था, उसीको आपने जेल में रखा। वास्तव में ऐसे चोर को तीन साल की सजा नही, बल्कि तीन एकड जमीन देनी चाहिए और कहना चाहिए कि इस पर मेहनत करके वह अपने बीवी-बच्चो का पालन-पोषण करे। फिर वह चोरी क्यो करेगा ? चोरो का भय बिल्कुल व्यर्थ है। चोरो का भय चोरो ने निर्माण

किया है। जिन्होंने खूब सपत्ति जमा कर ली, वे चोर ही हैं और उन्हींने चोरी का भय पैदा किया है। और उनके वास्ते पुलिस, कोर्ट, न्यायाधीश,जेल आदि सब बनाये गये हैं। आप सब लोग चोरी नही करते हैं। क्या इसलिए नही करते हैं कि चोरी के लिए सजा है? क्या यह कानून, कोर्ट, जेल नही होते तो आप चोरी करते? मनुष्य के हृदय में यह भावना है कि चोरी नही करनी चाहिए। यह भावना सतो ने पैदा की है।

घर-घर में माताएँ बच्चो को दूध पिला रही है। क्या वे इसलिए पिलाती है कि न पिलाने पर जेल भेजी जायेंगी? लोग अपना सारा काम खुद कर लेते है, परन्तु आपको लगता है कि सरकार परमेश्वर है। कुछ लोग कहते है कि परमेश्वर है ही नही। अगर उनसे पूछा जाय कि "फिर कौन है?" तो वे कहते है कि सरकार है। याने वे सरकार की भक्ति करते है। वे कहते है कि हम "पेरुमान" (शिव)को भी नही जानते हैं और "पेरुमाल" (विष्णु) को भी नही जानते, हम तो सरकार को जानते है। जैसे कोई भक्त भूत को मानते है, कोई पिशाच को मानते हैं, वैसे ये सरकार को मानते हैं। वे समझते है कि जो कुछ ताकत है, वह सरकार में है। अरे, सरकार के पास क्या ताकत है? क्या आपके घर का झाड़ू सरकार ने लगाया? आप रोज झाड़ू लगाते है। इसलिए आपका घर साफ है। लडका बीमार होने पर क्या आप हेल्थ मिनिस्टर को तार भेजते हैं? आप खुद अपने बीमार बच्चे की सेवा करते है। सारे काम तो आप खुद ही करते है, फिर भी ऐसा मानते है कि सरकार के बिना नही चलेगा और सरकार काम करेगी तभी काम होगा। गाँव-गाँव के काम, गाँव-गाँव के लोग ही कर सकते है। सरकार सिर्फ ऐसे काम करेगी, जो सारे देश के लिए करने होते है। गाँवो का सयोजन ,रेलवे, पोस्ट, परदेश के साथ सम्बन्ध, खानों का इन्तजाम आदि काम सरकार करेगी, परन्तु गाँव-गाँव की दौलत बढाने का काम, गाँव की समस्या हल करने का काम गाँववालो को ही करना चाहिए। आप क्या खायेंगे, पियेंगे यह आपको ही तय करना होगा, सरकार नही करेगी।

अब तो जन-आंदोलन चले

कुछ लोगो ने हमसे कहा कि यहाँ पर भूदान-समिति को काफी जमीन

मिली है, परन्तु अभी तक बाँटी नही गयी। हमने उनसे कहा कि इसमें भूदान-समिति का सवाल ही क्या था, आपको जमीन बाँट देनी थी,क्या आप बाँटते तो आपको कोई फाँसी पर चढा देता? सिर्फ यही करना है कि बँटवारे के जो नियम है, उसके अनुसार बाँटना है, जिससे कि ठीक मनुष्य को जमीन मिलेगी और किसी प्रकार का पक्षपात नही होगा। कल अगर तमिलनाड में शादी-समिति बनेगी, तो आपके यहाँ की शादी उसके जरिये होगी ? वह काम तो आपको करना होगा। इसी तरह जमीन लेना, बाँटना, यह सब आपका काम है। बाबा की बात समझकर आप सब लोग गाँव में एक जगह इकट्ठा हो जाओ और फिर सोचो कि अपने गाँव मे कितने भूमिहीन है,उन्हें कितनी जमीन देनी पडेगी। फिर हर कोई कहेगा कि मै इतना देता हूँ, इस तरह पर्याप्त जमीन हासिल करने पर गाँव की सभा करके जमीन बाँटनी चाहिए। फिर इसकी इत्तला भूदान-समिति के पास भेज देनी चाहिए कि हमारे गाँव में जमीन का बँटवारा हो गया। अब इसके आगे क्या करना है, सुझाइये। फिर भूदान-समिति को सुझाना होगा तो सुझायेगी। लेकिन काम आपकी ही अक्ल से होगा।

बाबा का एक बडा सिद्धान्त है कि वह किसी को आज्ञा नही देता है। आपको तो वह आज्ञा देगा ही नही, परन्तु उसके साथ दस-बीस साल रहे हुए साथियो को भी वह आज्ञा नही देगा। कोई सलाह पूछेगा तो बाबा सलाह देगा। उस व्यक्ति को बाबा की सलाह मानने और न मानने का अधिकार है। वह जो करना चाहता है, कर सकता है। अपनी सत्ता हम किसी पर भी लादना नही चाहते। हम प्रेम से समझायेंगे और आप अपने विचार से करेगे। भूदान-समिति आपको सलाह देने के लिए है, आपकी शक्ति को रोकने के लिए नही है, आपके हाथ बाँधने के लिए नही है, बल्कि आपके हाथो को थोडी मदद पहुंचाने के लिए है, यह समझकर आप काम कीजिये। हर गाँव में दाताओ की समिति बनाओ,जो आगे काम करेगी। दाता अपने गाँव का काम पूरा करके आसपास के गाँवो में जायेंगे, अपने मित्रो से जमीन हासिल करेंगे, उसका बँटवारा करेंगे। वे अपना सघ बढाते जायेंगे। इस तरह एक बडी विशाल सेना खड़ी होगी। किसी पर जबरदस्ती नहीं करनी है, किसी को आज्ञा नही देनी है। सब काम प्रेम से करना है। होना तो यह चाहिए कि गाँव-गाँव का काम गाँव-

गाँव के लोगोने उठा लिया है। फिर सरकार उनसे पूछती है कि हम आपकी क्या मदद कर सकते है, फिर गाँववाले अपनी शर्तो पर सरकार की थोडी मदद लेते है। आपको अपनी शक्ति से काम करना है। फिर आप सरकार से थोडी-सी मदद ले सकते है। यह वात याद रखिये कि आपके पास वहुत शक्ति है और उसका एक थोडा-सा हिस्सा सरकार के पास है।

ताडर पालेयम
२७-१०-'५६

भोग योगमय बने : १७

अभी मै जो वोलने की सोच रहा था, वह कुल विचार इस भजन मे आ गया। "**भोग मेल योगत्तोन पोल्लिने**" याने **भोग ही योगमय करना है, यह हमारी सर्वोदय-योजना का सार है।** अमेरिका में उत्पादन-वृद्धि के काम चलते है। लेकिन उनकी सारी योजना भोग की है। उसमें योग कुछ भी नही है। आज अमेरिका में क्या हालत है? धन बहुत है, जमीन बहुत है, सुवर्ण बहुत है, कारखाने वहुत है, विद्यालय, कालेज बहुत है, उसके साथ-साथ स्थल-सेना और जल-सेना भी वहुत है, लेकिन शान्ति नही है, प्रेम नही है। उनका आदर्श हमें नही चाहिए, वैसी भोग की योजना हम करेंगे तो हिन्दुस्तान में मार खायेंगे। वह योजना न हिन्दुस्तान में वन सकेगी, न उसमें हिन्दुस्तान की अपनी शक्ति प्रगट होगी। इसलिए ग्रामदान के कार्य में हम ऐसे विषय ला रहे है, जिनमें परमार्थ और व्यवहार एक रूप हो जायँ। "नान एनदु" -'मैं, मेरा' छोडना चाहिए। यह वात वेदात हमेशा कहता है। यह कैसे छोडा जाय? सव प्रकार से ससार का त्याग करके यहाँ भोग और योग अलग होगे। अगर आप लोग चाहते है, तो आपको भोग छोडना होगा। यह हिन्दुस्तान में अब तक चला। आग्रहपूर्वक कहा गया कि भोग की परवाह मत करो, योग करो। इससे विलकुल उल्टी चीज अमेरिका में शुरू है। वे योग नही जानते। परवाह नही, भोग वढना चाहिए, जीवनस्तर वढना चाहिए। यह उन लोगो को वहुत प्रिय है।

काम को सेवा का रूप दें

अपने देश में हम कौन-सी योजना बनाते हैं ? हमने ऐसी योजना बनायी कि "नान एनदु" 'मैं-मेरा' न रहे कि और 'हम-हमारा' चले ? उसमें भोग को ही योग का रूप आता है। आज क्या होता है ? किसान खेती में मेहनत करता है। किसान स्वार्थी माना जाता है, सेवक नही। वह भी अपने को सेवक नही मानता। उल्टे सरकारी नौकरो की सेवा मानी जाती है। वे दावा भी करते हैं कि हमारी यह सेवा है, हम सेवक हैं। सबसे बुनियादी सेवक किसान हैं। लेकिन वह दावा नही करता कि मैं सेवक हूँ। क्योंकि वह समाज के लिए उत्पादन करता है। वह यह भावना नही रखता कि अपने लिए उत्पादन करता हूँ। यही उसकी भावना होती है। जो उत्पादन होता है वह बेचता है, पैसा हासिल करता है। बेचने में दूसरो की सेवा का हेतु नही रहता। सेवा हो जाती है। परन्तु विचार सेवा का नही रहता। इसलिए रात-दिन सेवा-कार्य करते हुए भी उसे सेवकत्व का अनुभव नही है। ग्रामदान के गाँवो में किसान कहेगा कि मैं अपने गाँव के लिए सब कर रहा हूँ। मैं अपने लिए कुछ नही करता हूँ। काम तो पहले जैसा करेगा। परन्तु उसके काम को सेवा का रूप आयेगा। पहले उसे भोग का रूप था। इसलिए ग्रामदान में उसे भोग तो मिलेगा, लेकिन वह सबको मिलेगा। इसलिए उस भोग को योग का रूप आयेगा, याने जिसे भोग कहते हैं वह योग बन गया। योग के समान भोग हो गया। मैं सोच रहा हूँ कि यही बात आज आप से कहूँ कि अपनी योजना में केवल उत्पत्ति की बात नही है। उत्पत्ति तो होती है, अगर नहीं करनी है तो ग्रामदान की जरूरत क्या है ? खेती सब मिलकर करेंगे, उत्पादन बढ़ायेंगे, यह तो है। परन्तु यह सारा ऐसे ढग से होगा, जिससे आत्मा का विकास होगा। उसके लिए जो भोग बाधक हैं उसे नही करेंगे। हरएक भोग आत्मा के विकास के लिए बाधक है। ऐसा मानने का कोई कारण नही है। कुछ भोग योग की बराबरी में आते हैं। ये ही हमे करने हैं।

भोगो रोगस्य कारणम्

यह दुनिया भर का अनुभव है कि उत्पादन बढता है, उसके साधन बढते हैं।

डाक्टर भी वढ़ रहे है और दवाइयाँ भी वढ रही है। रोगी भी वढ रहे है,
नये रोग भी वढ रहे हैं। डाक्टरो की अकल काम नही करती, कहते है
नये-नये रोग पैदा हो रहे है जिनका हमने कभी खयाल ही नही किया
ऐसा क्यो ? इतने उत्तम-उत्तम ज्ञानी डाक्टर होने पर भी यह हालत व
कारण यही है कि समाज भोगपरायण हो गया है। आरोग्य भी भ
के लिए चाहते है। आयुर्वेद-शास्त्र में लिखा है कि परमेश्वर प्राप्ति के
वुद्धि होनी चाहिए। वुद्धि निर्मल रहे, इसलिए शरीर भी निर्मल होना चा
इसलिए शरीर साफ करने के लिए आयुर्वेदशास्त्र का आरभ हो गय
याने देहारोग्य, वुद्धि-शुद्धि ईश्वर सिद्धि के लिए है। एलोपैथी वगैरह प
से आयी हैं। वे कहनी है कि शरीर में स्वास्थ्य रहेगा, तभी दुनिया का
भोग सकेंगे, नही तो नही भोग सकेंगे। आयुर्वेदशास्त्र में और ऐलोपै
इतना फर्क पडता है। एक कहता है शरीर-शुद्धि और वुद्धि-शुद्धि द्वारा
श्वर-प्राप्ति और दूसरे का उद्देश्य है, शरीर के आरोग्य से भोग प्राप्त
और आनद लूटना। उन भोगो से ही रोग पैदा होता है, क्योकि
शुद्धि का खयाल नही रहता, आनद का खयाल रहता है। इस वास्ते
वह भोग आरोग्य के विना न सधता हो, तो भी वह कैसे भोग सके, इस
आयुर्वेदशास्त्र वनाते है। तो भी रोग कम नही होते है। अभी साल-डेढ
पहले से अखबार में मजेदार विपय चल रहा है। कैन्सर के रोग का
पान के साथ कहाँ तक सवन्ध है, परस्पर विरोधी कई प्रकार के अभि
प्रसिद्ध हो रहे हैं। दो दिन पहले एक निश्चित अभिप्राय प्रसिद्ध हुअ
वह यह है कि धूम्रपान से कैन्सर वढता है। अक्सर स्त्रियाँ सिगरेट कम
है, इसलिए उन्हें पुरुपो की वरावरी में कैन्सर कम होता है। आज तक
वीडी पीने से कैन्सर होता है, कि और भी कारणो से होता है, यह चर्चा
अव तो निश्चित अभिप्राय डाक्टर ने प्रकट किया है कि वीडी पीने
कैन्सर होता है। अभी भी आयुर्वेदशास्त्र मे सशोधन की गुजाइश रही
तथा और भी प्रयोग होगे।

भोग के साथ योग

समाज को भोग और योग दोनो चाहिये। भोग के विना शरीर

टिकता, इसलिए समाज भो । के विना चलेगा नही । योग के बिना भोग अच्छा चलेगा, ऐसा भी नही है। आज अमेरिका में तरह-तरह के मैनिया होते है। उसका एक वडा विभाग है। हम पागलपन याने पागलपन समझते है परन्तु अमेरिका में उसके पचासो प्रकार है। यह क्यो है ? आत्महत्याएँ वहुत परिमाण में होती है। पश्चिमी समाज में यह देखते है कि शादी की चर्चा हुई, लडकी ने स्वीकार नही किया, लडके ने आत्महत्या की। परीक्षा में फेल हुआ, आत्महत्या की। वाप के साथ झगडा हुआ, वाप नाराज हुआ, लडके ने आत्महत्या की। व्यापार में नुकसान हुआ, व्यापारी ने आत्महत्या की। सिनेमा शो देखने जाना था, टिकट नही मिला, आत्महत्या की। ि,लकुल छोटी-छोटी चीजो के लिए आत्महत्याएँ होती है। भोग की कमी नही है। फिर भी यह सारा क्यो है ? क्योकि योग नही है।

आज हम चर्चा करते थे, सर्वोदय-योजना मे ग्रामोद्योग कहाँ तक चले.,I, खादी चलेगी कि नही, हाथ कागज रहेगा कि नही, अवर चरखा चलेगा कि सादा चरखा चलेगा, विजली का उपयोग कहाँ होगा ? कुएँ से पानी खीचने मे विजली लगानी चाहिए कि नही? आहार में नमक, मिर्च होना चाहिए कि नही ? ऐसी पचासो चर्चाएँ हुई समझना चाहिए कि सबमें योग होगा।

यन्त्र समय और परिस्थिति पर आधारित हो

अव चरखा चलेगा कि तकली चलेगी, कि अवर चलेगा, यह स्वतन्त्र विषय है। जिस देश मे जनसख्या ज्यादा है, खेती कम है, वहाँ खेती मे यत्र नही चलेगा। उसमें भी यत्र चल सकता है, अगर वैलो को खाना तय किया होगा। लेकिन वैलो की रक्षा करनी है, तो यत्र का उपयोग नही होगा। जिस देश में एक व्यक्ति के पीछे औसतन १५ एकड जमीन है, वहाँ खेती मे भी यत्र आ सकते है। फिर भी कुछ काम हाथो से करना होगा। उसके विना हाथ का समाधान नही होगा। फिर भी मनुष्य कम है वहाँ यत्र हर समाज मे योग्य अथवा अयोग्य है, ऐसा नही कह सकते। वह समय पर, परिस्थिति पर आधारित है देश-काल-मान पर आधारित है। हमने कहा है कि यत्र के कई प्रकार होते है—

१ कुछ यत्र सहारक होते हैं। मनुष्य का सहार करने का काम जो य
करते हैं, ऐसे यत्र हमें बिलकुल नही चाहिए।

२ समय बचानेवाले कुछ यत्र होते है। वे सहार नही करते, उत्पा
भी नही करते, सिर्फ समय बचाते है। जैसे मोटर, रेलवे, हवाई जह
ये सिर्फ समय बचाते हैं। ऐसे यत्र हमें उचित मर्यादा में चाहिए। बाबा पै
चलता है। कुछ लोगो को लगता है कि बाबा दकियानूस है। यह युग ए
पुराने ढग का नही है। बाबा को अबर चाहिए। दूसरा व्यक्ति कहता
कि मुझे अबर नही चाहिए, सादा चरखा चाहिए। बाबा रेल में नही जा
है, यह शख्स रेल में जाता है। पर इस पर मैं कोई आक्षेप नही करना चाहत
बाबा जमीन पर चलता है, क्योकि वह जमीन का काम करता है। वह हव
जहाज में घूमता, तो उसे हवा मिलती, जमीन नही मिलती। मै न
जानता, पर ऊपर हवा कम होती होगी। यही कही नजदीक घूमा,
हवा मिलेगी, परन्तु जमीन नही मिलेगी। इसलिए बाबा पैदल चलता है
परन्तु रेल, हवाई जहाज आदि सब बाबा चाहता है। इतना ही नही, वह
इन यत्रो में सुधार भी चाहता है। परन्तु उसमें मर्यादा भी होनी चाहिए
जहाँ उचित है, वहाँ उसका उपयोग करना चाहिए। सायकिल पाँव की मद
के लिए आई है। पाँव के बदले नही। इसलिए जहाँ पाँव से जा सकते है, व
सायकिल का उपयोग नही करना चाहिए। थोडे में, हम समय-साधन य
चाहते है। कागज का धधा एक समाज में करेंगे, एक समाज में नही करेंगे
परन्तु मान लीजिये, हमें हाथ-कागज चाहिए। सभव है, "पल्प" बनाने
काम हम मशीन से करें। बाकी काम हाथ से करेंगे। यह सारे तफसी
के विषय है। समय-समय पर फर्क करना होगा। हम सहारक यत्र बिलकु
नही चाहते हैं। समय-साधक-यत्र जरूर चाहते हैं, परन्तु उसमें मर्या
चाहते है।

३ उत्पादक-यत्र दो प्रकार के होते हैं। कुछ यत्र मनुष्य को मदद दे
है। कुछ यत्र मनुष्य के शरीर को क्षीण करते हैं, बेकार बनाते हैं, आनद क
क्षीण करते है, बुद्धि-विकास पर रोक लगाते हैं। ऐसे दो प्रकार हैं, एक मनु
का पूरक है और दूसरा मनुष्य-मारक है। जो मनुष्य के पूरक होते है, उ

हम चाहते हैं और जो मारक होते है उन्हे हम नही चाहते। लेकिन उत्पादन यत्र मे भी कौन-सा मारक है और कौन-सा पूरक है, इसमें हमेशा के लिए निर्णय नही किया जा सकता । जो निर्णय देंगे, वह उस काल के लिए, उस स्थल के लिए लागू होगा, तो करेंगे। स्थल वदलेगा, तो यत्र वदलेगा। काल वदलेगा, तो यत्र वदलेगे। समाज वदलेगा, तो यत्र वदलेंगे। परस्पर चर्चा के लिए गुजाइश रहेगी। भिन्न-भिन्न अभिप्राय लोग वतायेंगे। हमारा अभिप्राय दूसरो से भिन्न रहेगा, दूसरो का हम से भिन्न रहेगा। भिन्न-भिन्न अभिप्राय से समाज वदलेगा। परन्तु वुनियादी एक चीज कायम रहेगी। भोग को योग वनाना है। दोनो का विरोध पैदा नही करना है। भोग मे प्रतियोगिता होती है। भोग के परिणामस्वरूप चित्त चचल रहता है, यह मर्यादा है। इन मर्यादाओ में हम सर्वोदय का काम करना चाहते है। सर्वोदय-विचारवालो को इस पर अच्छी तरह विचार करना चाहिए, नही तो दो पक्ष होगे।

धर्म का सार भूदान और ग्राम-दान में

हम मानते है कि भोग एक दोष है। परन्तु वह देह के साथ जुडा है। उसमे हम मर्यादा रखेंगे। भोग-परायण वृत्ति नही होनी चाहिए। मुझे एक वाक्य याद आता है, "सफिशंट अनटू दी डे इज दी ब्रेड देयरआफ" भोग का सग्रह हम नही करेंगे। भोग लेंगे तो मर्यादा में लेगे और सव मिलकर वाँटकर भोगेंगे। वचे हुए समय में हम भगवान् की भक्ति करेंगे, भजन गायेंगे। इसलिए भोग को ही योग वनाना, यह सर्वोदय-योजना का सूत्र है। वह माणिक्य वाचकर के भजन में हमे अभी सुनने को मिला।

ग्रामदान का आन्दोलन रुकेगा नही, वढेगा। उसमें से एक वृक्ष वढेगा। एक अजीव वात है, हम जाते है, लोगो को समझाते हैं और लोग मालकियत छोडते हैं। क्या लोग अर्थशास्त्र समझते हैं? क्या रूस की क्रान्ति और चीन की क्रान्ति हम उन्हें समझाते है? उन्हे प्रेम की वात समझाते हैं। हम समझते हैं, इससे वढकर कोई धर्म नही है, जिसमें सव धर्मो का सार आया है। दुनिया के सव प्रसिद्ध धर्मों का सार भूदान और ग्रामदान मे आया है।

हमारा नम्र दावा है कि भूदान और ग्रामदानके जरिये परमेश्वर की भक्ति का कार्य हो रहा है। हम आशा करते है कि सब कार्यकर्ता अत्यन्त करुणा से, प्रेम से और धर्म-भावना से भरे हुए दिल से काम करेंगे।

पुलीरीपट्टी (मदुराई)
९–१–'५७

कर्तृत्व की महिमा　　　　: १८ :

इस धान्य की सुन्दर माला अभी लोगो ने मुझे दी। इसका अर्थ यह है कि कुल गाँवो का ग्रामदान बाबा को दिया जाता है। जमीन सबकी है, इसलिए जमीन की सेवा करने का हरएक को अधिकार है। अभी तक हमको फल-फूल की माला मिली थी, परन्तु आज धान्य की माला मिली, जिसका अर्थ है कि तजोर जिले के सब गाँव बाबा को समर्पित है। तजोर जिले के लोगो के मन अब ग्रामदान के लिए तैयार हो गये है।

जिस समाज के लोग देना जानते हैं, उस समाज के लोग सुखी और बलवान होते हैं। हमारे हाथ भगवान् की एक विशेष देन है, हाथ से परिश्रम करना, दान देना, सेवा करना, प्रणाम करना, गिरे हुए को उठाना, डूबते हुए को बचाना आदि सभी काम हो सकते है। उनसे लोगो को नीचे गिराना, नदी में डूबोना, मारा-मारी करना, किसी की चीज छीन लेना आदि काम भी हो सकते है। भगवान् ने जानवरो को हाथ नही दिये है, सिर्फ बदरो को हाथ दिये है। परन्तु वे भी अपने हाथ का उपयोग पेड पर से फल खाने और पौधा उखाडने में करते है। अगर मनुष्य भी अपने हाथ का उपयोग ऐसे कामो में करेगा, तो मनुष्य और जानवर में फर्क कहाँ रहा? इसलिए अपने इन हाथो से सतत देते रहने का काम करना चाहिए। जिस समाज के लोग सतत देते रहेंगे, उस समाज के लोग सुखी होगे, धर्म बढेगा, लक्ष्मी बढेगी।

तकदीर से बढकर तदबीर

आज यहाँ जो ग्रामदान मिला है वह मदुरा के ग्रामदानो से भिन्न प्रकार का है। यहाँ एक ही मालिक ने अपनी सारी जमीन गाँव को दे दी है। हमने

गांववालो से पूछा कि उस भाई ने तो अपनी सारी जमीन का दान दे दिया, लेकिन इससे आपकी ताकत क्या बनेगी ? आप लोग क्या दोगे ? जैसे आपको प्रेम से दान दिया गया, वैसे आप भी प्रेम से दान दोगे तो आपकी ताकत बढेगी। आपको भी भगवान् ने हाथ दिये है। अपने इन हाथो से खेत में खूब मेहनत करके अच्छी फसल तैयार करें और हर साल उसका एक हिस्सा गांव को सपत्तिदान के तौर पर देते रहे। सारी सपत्ति दो हाथो से बनती है। **"कराग्रे वसति लक्ष्मी"**, इसलिए वेदो ने कहा है **"प्रभाते करदर्शनम्"**। जहाँ हाथ पत्थर जैसे बन गये होंगे वहाँ लक्ष्मी रहेगी। ऋषि कहता है अयम् मे हस्तो भगवान्। ये मेरे हाथ भगवान् से भी बढकर है। इससे अधिक नास्तिक क्या कहेगा ? ऋषियो ने, "भगवान से बढकर हाथ है" ऐसा कह दिया। समुद्र बडा है या बादल ? बादल का हम पर सीधा उपकार है, इसलिए हमारे लिए समुद्र से बादल बढकर है। यह ठीक है कि समुद्र के पानी से ही बादल बनते है। परन्तु हमारे लिए बादल का सीधा उपकार है। हाथ ही हमे सब कामो में प्रत्यक्ष मदद देता है। इस वास्ते ऋषि ने कह दिया कि भगवान् से भी बढकर हाथ है, अयम् मे हस्तो भगवान् "अयम् मे भगवत्तर" इस हाथ मे विश्व का औषध भरा है। इससे माता बच्चे पर प्रेम करती है, इसलिए इसमे औषध भरा है। "अयम् मे विश्व भेपज" इसके स्पर्श से पुण्य-कार्य होते है। गुरु ने शिष्य के सिर पर हाथ रख दिया तो दिमाग का परिवर्तन हो गया। इतनी शक्ति हमारे हाथ मे है। इस वास्ते जैसे उस भाई ने प्रेम से आपको अपने गाँव की सब जमीन दे डाली, वैसे आपको भी प्रेम से भर-भरकर देना चाहिए। साल भर मे एक हिस्सा। तो आपके गाँव में सकट निवारण-योजना हमेशा के लिए हो जायेगी। किसी भी गाँव में कोई दुखी होगा तो फौरन मदद दी जायेगी। भू-माता की सेवा के लिए आपको जमीन दान मे दी गयी है। पूरी भक्ति और प्रेम से आपको पैदावार बढानी चाहिए। आलस्य नही करना चाहिए।

ईमानदारी से ही अन्त में लाभ

आज ही बिहार से एक खत आया है कि वहाँ पलामू जिले के सेवा गाँव मे दो साल पहले लोग भूखे मरते थे। ग्रामदान के बाद भूमिहीनो ने अपने

प्राण खेती के काम में लगाये और दो साल में इतना उत्पादन बढ़ा कि अब अनाज उनकी आवश्यकता से अधिक होता है। आज तो मालिक और मजदूर एक दूसरे को ठगने की कोशिश करते है। मजदूर आठ घटे का नाम लेता है, परन्तु चार घटे कम काम करता है। मालिक भी उसको कम-से-कम दाम देना चाहता है। गाँधीजी के भतीजे मगनलाल गाँधी दक्षिण अफ्रीका की ४० साल पहले की बात करते थे। वहाँ खेतो में मजदूरी के लिए लोग हिन्दुस्तान के मजदूर को पसद नही करते थे। जापानी मजदूरो को पसद करते थे, क्योकि जापानी मजदूर बिना देख-रेख उत्तम काम करते थे। यद्यपि जापानी मजदूरो को ज्यादा मजदूरी देनी पडती थी, तो भी लोग उन्ही को मजदूर रखते थे। तो मजदूर का काम था कम-से-कम काम करना और मालिक का काम था कम-से-कम दाम देना। ये दोनो गलत बातें है। परन्तु अब आपको पूरी जमीन दान में मिल गयी है, इसलिए आप अपनी पूरी शक्ति पूरे प्रेम से उसमें लगाओ और फसल बढाओ।

हाथ दिये कर दान रे

लोग पहले पूछते थे कि इस तरह दान देने से क्या मजदूर आलस छोड़ेंगे? उत्पत्ति कैसे बढेगी? लेकिन ग्रामदान के बाद इन सबकी जबान बद हो गयी है। क्योकि गरीबो को जमीन दान में दी जाती है तो वे पूरे दिल से, प्रेम से काम करते है। तो पैदावार बढती ही है। यह आपका पहला कार्य है कि जो जमीन आपको दी गयी है, उसमें आप पूरी शक्ति लगायें और उत्पादन बढ़ायें। आपको भी भगवान् ने दो हाथ दिये है, इसलिए आपको गाँव को कुछ-न-कुछ देना चाहिए। देने की बात सभी पर लागू होती है। वह सबका धर्म है और सनातन धर्म है। जब गरीब लोग देने लगेंगे तो अमीरो को देना ही पडेगा। भूदान में ऐसा ही हुआ है। पहले गरीबो ने, छोटे-छोटे मालिको ने दान दिया, उसके बाद अमीरो ने देना शुरू किया। दयालु कम्युनिस्ट लोग पूछते थे कि बाबा गरीबो से दान क्यो लेते हैं। हमने कहा कि हम गरीबो की भी ताकत बढाना चाहते है। दान देनेवाले की ताकत बढती है, माँगनेवालो की नही। गरीबो की गिनती हम देनेवालो में कर सकते है।

मानव-मन्दिर सबसे श्रेष्ठ

आज जो ग्रामदान हुआ, उससे उस गाँव के लोगो के मुंह पर प्रसन्नता दिखाई देती है। लोग कहते थे कि तजोर की तरी जमीन कैसे दान में मिलेगी। किसी ब्राह्मण से पूछो कि दान कैसे दिया जाता है? रुपया हमेशा पानी से धोकर दान दिया जाता है। रुपया सूखा है, उसमे द्रव नही है, इसलिए भिगोना पडता है। तजोर की जमीन में कावेरी का पानी मिला हुआ है। इसलिए वही जमीन दान देने लायक है। दूर-दूर से कावेरी का पानी यहाँ आता है। आप लोग दोनो हाथो से लेगे, और देंगे कुछ नही, यह कैसे चलेगा? जिन्होने भर-भर पाया है उनके दिल उदार ही होते हैं। यहाँ के मन्दिरो को पुराने जमाने मे जो लाखो एकड जमीन दी गयी है, वह उसका साक्षी है। दूसरे किसी जिले मे ऐसी घटना नही घटी है। जिस जमाने मे मदिरो को जमीन देना धर्म था उस जमाने में मदिरो को जमीन आपने दी। इस जमाने में गरीबो को जमीन देना धर्म है तो क्या गरीबो को जमीन नही देंगे? यह दरिद्र-नारायण ही शिव भगवान् है। "महोक्ष. खट्वांगम् परशुरजिनम् भस्म फणिन" शिव भगवान् का लक्षण है खाट का टुकडा, एक बैल, काम करने के लिए हाथ में परशु, कपडा भी पूरा नही, भस्म और गले में साँप, क्योकि खेतो मे काम करना होता है, वहाँ तो साँप होते ही है। मानव-मन्दिर तो सबसे श्रेष्ठ मदिर है। उससे ज्यादा कारीगरी वाला मदिर कहाँ मिलेगा? उसी में शिव भगवान् रहते हैं।

करिपट्टनम (तंजोर)
२-२-'५७

जमाने के अनुसार बदलना होगा : १९ :

भगवत्-उपासना जमाने के अनुसार अलग-अलग प्रकार की होती है। पुराने जमाने में जब हिन्दुस्तान मे जगल ही जगल था तब जंगल काटना ही जीवन का एक बड़ा भारी काम हो गया था। उस जमाने में भगवत् उपासना

अग्नि के इर्द-गिर्द रहती थी। वेद की पहली ध्वनि "अग्निमीळे"—हम अग्नि का स्तवन करते हैं—इस तरह शुरू होती है, उसके बाद जब ग्राम-रचना, नगर-रचना आदि विषय समाज के सामने आये, तब उपासना का रूप बदल गया। मदिर बनाये गये और सभी प्रकार का कला-सौन्दर्य आदर्श के तौर पर उन मदिरो में दिखाया गया। उस जमाने के आहार-शास्त्रियो के अनुसार घर-घर में किस प्रकार का आहार होना चाहिए, बताया गया और वैसाही आहार भगवान् को निवेदित करना चाहिए। प्रात जिस समय सबको उठना चाहिए, उस समय भगवान् को उठाते थे,पल्लीषेलुच्ची (जगाने का भजन) गाते थे। वह भजन पत्थर के भगवान् को जगाने के लिए नही था। अगर पत्थर को जगाने का सवाल है, तो वह सदा के लिए जागता ही है या उसको सुलाने का सवाल है, तो वह सदा के लिए सोता ही है। कभी जागनेवाला, कभी सोनेवाला देव उस पत्थर में नही है। परन्तु समाज को जिस समय जागना या सोना चाहिए, ऐसा समाज-शास्त्री मानते थे, उस समय भगवान् को मदिर में सुलाते-जगाते थे। जब ग्राम-रचना करनी थी, तब गाँव के बीच मदिर बनाकर उसके इर्दगिर्द सारा गाँव बसाते थे। आज जैसे कामन हाल बनाते हैं, वैसे उस जमाने में कामन हाल को भगवत्-उपासना का रूप दिया जाता था। क्योकि वे लोग जिन्दगी के मूल स्वरूप को जानते थे। नगर-रचना में भी सौन्दर्य का खयाल समाज के सामने था। इस तरह मदिर और मूर्ति-स्थापना के रूप को भगवत्-उपासना का रूप मिल गया। वेद और उपनिषद जगलो मे बने। बृहदारण्यक् (बडा जगल) नाम ही जगल का है, परन्तु ये बडे-बडे मदिर उसके बाद के जमाने में अच्छे-अच्छे नगरो में बने यह जीवन का दूसरा रूप था। आज ये दोनो रूप मौजूद नही हैं।

विज्ञान से स्थिति-परिवर्तन

आज जीवन का एक तीसरा ही रूप है कि आज के जमाने मे सारा जन-समूह परस्पर अविरोध से किस तरह जीवन व्यतीत करे। आज समाज में परस्पर जितना विद्वेष है, उतना पहले कभी नही था। आज समाज में परस्पर जितना प्रेम है उतना पहले कभी नही था। पुराने जमाने में प्रेम और द्वेष

दोनो कम थे। आज दोनो बहुत ज्यादा हैं, क्योकि लोगो का सम्बन्ध एक-दूसरे से बहुत होता है। इसके भी दो कारण हैं। एक तो विज्ञान और दूसरा जनसंख्या की वृद्धि। जनसंख्या भी विज्ञान के कारण ही बढी है। लोग जल्दी कम मरते हैं, इसलिए संख्या ज्यादा रहती है। इतना अच्छा विज्ञान पहले के जमाने में नही था, अत पहले दस-बीस साल के बच्चो का मरना बिल्कुल मामूली था। परन्तु आज विज्ञान के कारण स्थिति बदल गयी है। अब बच्चे बच जाते हैं, तो जनसंख्या बढने का यह भी एक वैज्ञानिक कारण है। जैसे-जैसे सच्चा विज्ञान बढेगा, वैसे-वैसे काम-वासना खतम होती चली जायगी और विज्ञान ही इस समस्या को हल करेगा। विज्ञान से आरोग्य बढेगा, उत्पादन बढेगा और काम-वासना भी कम होगी। इससे शरीर की ताकत हमारे हाथ मे आयेगी। आत्म-ज्ञान की ताकत तो पहले से थी ही, अब विज्ञान की मदद मिल रही है। विज्ञान हर पहलू को सामाजिक ढग से सोचने के लिए मजबूर करता है। किसी भी मनुष्य के घर में कहाँ-कहाँ की चीजें रहती है ? बाबा के पास यह घडी है, याने स्वीट्जरलैंड की है। यह चश्मा है, किस देश मे बना है, मालूम नही। लेकिन हिन्दुस्तान में नही बना है। दुनिया भर की कई किताबें बाबा के पास हैं। एक-एक घर में कई चीजें ऐसी होती हैं कि जो सारी दुनिया के बाजार मे बनती हैं। दुनिया के किसी एक कोने मे लडाई शुरू हुई तो सारी दुनिया के बाजार-भाव चढ जाते हैं। इस वास्ते विज्ञान सामूहिक तौर पर सोचने के लिए मजबूर करता है, और प्रेरित भी करता है। अधूरे ज्ञान मे भय है, परन्तु ज्ञान बढ जाता है, तो उससे ताकत आती है। अल्प विज्ञान में नास्तिकता भी आ गयी थी। परन्तु जैसे-जैसे विज्ञान बढ रहा है, वैसे-वैसे आस्तिकता को बड़ा बल मिल रहा है। जेम्सजीन एक उत्तम गणितज्ञ और वैज्ञानिक थे। उन्होने कहा कि सारे विश्व में परमेश्वर का होना नितात आवश्यक है। नही तो विश्व की यह सारी सुव्यवस्थित रचना, जो गणित मे बैठती है, कैसे बैठेगी ? दुनिया मे सर्वत्र गणित ही गणित दिखायी दे रहा है। इसलिए परमेश्वर का अस्तित्व लाजिमी है और उसे भी गणितज्ञ होना चाहिए। वेदान्त ने यही कहा था 'रचनानुपपत्तेश्च नानुमानम्,' इस दुनिया की ऐसी विचित्र रचना है कि ईश्वर के सिवा वह बन ही नही सकती।

आत्म-ज्ञान और विज्ञान दोनों का लक्ष्य एक

आत्मज्ञान ने जिस ईश्वर के पास पहुँचाया था, उसी ईश्वर के पास गहरा विज्ञान भी पहुँचायेगा। आत्मज्ञान कम होता है, तो वह भी ईश्वर के पास नही पहुँच सकता। यह मेरी देह ही आत्मा है और खाने-पीने में सब खतम होना चाहिए, यह अल्प आत्मज्ञान है। उपनिपद में उसको असुराणम् एष' कहा है। देह को आत्मा समझना यह असुरो का उपनिषद है। परन्तु जब आत्मज्ञान व्यापक होता है, तो वह परमेश्वर के पास पहुँचाता है। इसी तरह जब विज्ञान छोटा था, तो उसका नास्तिकता में प्रवेश हुआ था। लेकिन अब जब वह बढ रहा है, गहराई में जा रहा है, तब वह परमेश्वर के पास पहुँच रहा है। विज्ञान सृष्टि के जरिये ईश्वर के पास पहुँचाता है। आत्मज्ञान देह के जरिये ईश्वर के पास पहुँचा रहा है। विज्ञान ब्रह्माड के जरिये ईश्वर के पास पहुँचाता है। आत्मज्ञान पिन्ड के जरिये ईश्वर के पास पहुँचाता है। दोनो बाजू से हम ईश्वर के पास पहुँचते है। इसलिए व्यक्ति का व्यक्तित्व मिट रहा है। आत्म-ज्ञान कहता है कि तुम व्यापक हो, तुम सब देह में हो, इसलिए मै और मेरा छोड दो। विज्ञान कहता है, तुम अकेले-अकेले कुछ नही हो, जो कुछ है वह प्रकृति है, सारी दुनिया मिलकर विराट् है। इसलिए तुम 'मै-मेरा' छोड दो। आत्मज्ञान तो यह कहता ही था। आत्म-ज्ञान और विज्ञान जहाँ इकट्ठे हो गये, वहाँ व्यक्तिगत मालकियत आदि टिकेगी ही नही। सारे समाज की तरफ ध्यान देना पडेगा इस रास्ते भगवत् उपासना अब नये रूप में प्रकट होगी। अब जगल काटना, खेती के क्षेत्र में शोध करना या केवल नगर-रचना के लिए सौन्दर्य बढ़ाना, इतना ही सवाल नही है। अब समाज जीवन बनाने का सवाल भी आज सामने आया है।

आज का देवता समाज

आज एक भाई ने सवाल पूछा था कि भूदान और ग्रामदान से व्यक्तिगत आकाक्षा, महत्वाकांक्षा को मौका ही नही मिलेगा ? यह बहुत पुराने जमाने का सवाल है। वैज्ञानिक युग का यह सवाल नही है। विज्ञान के जमाने मे मनुष्य अपना व्यक्तिगत जीवन समाज में जितना लीन करेगा, उतना उसका और

समाज का विकास उत्तम होगा। थाली में लड्डू रखा है। हाथ में उसे उठा लिया। अब हाथ का विकास उसी मे है कि वह उस लड्डू को मुंह में डाले। अगर वह ऐसा नही करता है और लड्डू को अपने हाथ में ही रखे रहता है तो दो चार साल में हाथ सूख जायेगा और आखिर में हाथ से लड्डू छूट जायगा। अगर मुंह मे लड्डू डालने के बाद मुंह महत्वाकाक्षा रखेगा कि मैं बडा बन जाऊँ और वह लड्डू को पेट मे नही ढकेलेगा तो मुंह फुटबाल हो जायगा, और उससे किसी का विकास नही होगा। मुंह और शरीर का विकास इसी में है कि मुंह में मे लड्डू को पेट मे ढकेला जाय। किसी तरह अगर पेट मे लड्डू ढकेलने के बाद पेट उसका रस बना कर चारो ओर नही भेजता है, तो उसके परिणाम स्वरूप सर्जन को बुलाना होगा और आपरेशन करवाना पडेगा। परन्तु पेट अपने पास लड्डू को न रखकर उसको एक प्रकार के रस में परिवर्तित कर मारे शरीर में भेज देता है। उससे उसका और शरीर का दोनो का भला है। जैसे यह शरीर एक समुदाय है, अवयव है, वैसे यह सारा समाज एक अवयव है। विज्ञान के जमाने में व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास तभी होगा, जब व्यक्ति व्यक्तित्व को समाज मे लीन करने को तैयार होगा। एक चम्मच दही है। अगर वह दही चम्मच मे ही २०-३० दिन पडा रहेगा तो वह खट्टा हो जायेगा और उसमें कीडे पड जायगे, वह सड जायेगा, उसमें से बदबू आने लगेगी। उमको फेक देना पडेगा। उसका विकास अगर करना है तो उसको दूध मे डालना होगा। सारा का सारा दूध दही बन जायेगा। एक चम्मच दही से सेर भर दही बन सकता है। अगर उस सेर भर दही को एक मन दूध में डाला जाय तो वह और बढ जायेगा। इसलिए थोडा दही अगर ज्यादा दूध में लीन होता है, तो उसका विकास होता है। इस तरह का समाज-जीवन बनाने की आज जरूरत है। व्यक्ति का जीवन समाज में लीन होकर ही सार्थक होगा। इसलिए इस जमाने मे भगवत् उपासना नया रूप लेगी। भगवत् उपासना अब जगलो के इर्दगिर्द नही रहेगी। मदिरो के इर्दगिर्द भी नही रहेगी। इसका अर्थ यह मत समझिये कि नास्तिकता आयेगी, बल्कि अब भगवत्-उपासना समाज-रचना में प्रकट होगी। जो नैवेद्य आज मदिरो को समर्पण करते हैं, वह सीधा समाज-देवता को समर्पण करना होगा। यह कोई नया विचार है, सो

नही । इसका आधार प्राचीन ग्रथो में भी मिलेगा, परन्तु उस जमाने में सामाजिक जीवन वनाने से नही वन सकता था। अब वह मौका आया है, इसलिए भगवत्-उपासना का स्वरूप बदल जायेगा।

पुराने रचनात्मक कार्यकर्ता कितने घटे मूर्ति के सामने अपना सिर घिसते है ? वे वहाँ मूर्ति के सामने वहुत ज्यादा समय तक बैठे दीखते ही नही। फिर वे कैसे भगवत् भक्त वन गये ? वे समाज-देव की उपासना कर रहे है। भगवत्-उपासना का रूप वदला है। इसे समझने की जरूरत है। जब नया रूप आता है, तब पुराने रूप वाला समझता ही नही कि भगवत्-उपासना का रूप वदल रहा है। परशुराम नारायण के एक अवतार थे। रामचन्द्र नारायण के दूसरे अवतार थे। परशुराम भी अवतार और रामचन्द्र भी अवतार और दोनो नारायण के अवतार। परन्तु नारायण के नये अवतार को नारायण का पुराना अवतार समझ नही सका, पहचान नही सका। आखिर जब राम के धनुप का चमत्कार देखा, तब समझ गये। नही तो शिव-धनुष भग होने के कारण "कौन है शिव-वनुप तोडनेवाला ?" कहकर सामने लडने के लिए आया, क्योकि पहचान नही सके। आखिर जब चमत्कार हुआ, तब नमस्कार किया और समझ लिया कि यह नया अवतार हुआ है।

उपासना का नया रूप

भगवान् की उपासना का नया रूप प्रकट होता है, तो पुरानी उपासना करने वालो को लगता है कि यह नास्तिकता है। वावा ने कहा, मदिरो को जमीन देना गलत है। लोग कहने लगे, "वावा नास्तिक वन गया दिखता है। नास्तिक के पाँव में क्या इतनी ताकत हो सकती है कि वह लोगो के बीच छह साल तक घूमता रहे ? क्या नास्तिक लोगो के पास जाकर सेवा मे रहेगा ? वावा ने यह तो नही कहा था कि जिस जमाने में मदिर को जमीन दान में दी गयी है, उस जमाने में वह गलती हुई थी। वावा कह रहा है कि इस जमाने मे यह गलत वात है। मदिर की जमीन की मालकियत की काश्त दूसरे मजदूर करेंगे, उनको सरकारी टैक्स से दुगुना टैक्स देना पडेगा। एक हिस्सा सरकार को और वाकी का उपयोग मदिर करेगा। मतलव यह कि मदिर के लिए

अनिवार्य कर। जैसे सरकार को कर देते है, वैसे मदिर को भी कर दें। अगर देना ही है, तो प्रेम से क्यो न दे ? जब रामानुज थे, तब क्या मदिर मे कर था ? लोग प्रेम से जमीन दान देते थे। परन्तु आज हालत यह है कि उन मन्दिर के पास हजारो एकड जमीन है। जैसे स्वार्थी मालिक मजदूरो को चूसते है, वैसे उन मदिरो के जरिये मजदूरो को चूसा जाता है। बाबा यह चाहता है और जो बोल रहा है वह नयी उपासना के कारण बोल रहा है। भगवत्-उपासना का रूप बदल गया है। जो लोग इसे नही पहचानेंगे, वे भक्ति के नाम पर गलत काम करेंगे। मान लीजिये कि मै पुराना यज्ञ यानी घी, चावल, लकडी आदि की आहुति डालने का यज्ञ शुरू कर देता हूँ, तो चारो ओर से हमारे खिलाफ आवाज आने लगेगी कि बच्चो को गाँव का दूध पीने को नही मिलता और तुम घी जलाते हो। जब सारे जगल कट चुके है, तब इस जमाने में तुम लकडी यज्ञ मे डालते हो, तो कैसे चलेगा, यह सब सोचने की बात है। उस जमाने मे वह ठीक था। जिस जमाने मे घी से ही अग्नि पैदा करते थे, लाखो की तादाद मे गाये थीं और देश मे जगल-ही-जगल थे। खाने के लिए भोजन, जलाने के लिये लकडी तथा दूध-घी काफी मात्रा मे थे। जैसे मलाबार मे खाने मे, पीने मे, मकान बनाने में नारियल का ही उपयोग करते है। परन्तु क्या मारवाड मे मलाबार का यह तरीका चल सकेगा ? वहाँ नारियल होते ही नही। जब जगल ही जगल थे, तब उस प्रकार का यज्ञ चल सकता था। परन्तु वह रूप आज नही चल सकता। इसका मतलब यह नही कि यज्ञ मिट जायेगा। यज्ञ मिटेगा नही, यज्ञ का रूप बदलेगा। भक्ति मिटेगी नही, मिटनी भी नही चाहिए। केवल उसका रूप बदलेगा। आज की हालत में समाज-रचना ही मुख्य सवाल है, नगर रचना का मुख्य सवाल नही है। इस जमाने मे मदिर, मस्जिद, चर्च बनाने की जरूरत नही है, क्योंकि उसका शास्त्र तैयार है। स्कूल, अस्पताल, पुस्तकालय, वखार (गोडाउन), पार्लमेंट ये सारे विचार काफी हो गये है। उसके नमूने पेश करने की कोई जरूरत नही है। अब उपासना के जरिये समाज रचना का रूप कैसे बनेगा, व्यक्तिगत मालकियत समाज से कैसे मिटेगी, उसका नमूना पेश करना होगा। एक जमाने मे ब्राह्मणो को पूजा करने के वास्ते अग्रहारम

मिल गये। गाँव के गांव उनको दान में दिये गये। उन्होने स्वय खेती करना छोड दिया और खुद दूर-दूर जीविकोपार्जन के लिए चले गये। उनकी विधवा माताएँ गाँव में ही रहती थी। अव उस अग्रहार की जगह ग्रामदान है। कुल जमीन सारे गाँव की वने, सारा गांव मिलकर एक परिवार माना जाय। जैसे अपने परिवार की हरएक चिन्ता करता है, वैसे सारे गाँव की सभी मनुष्य चिन्ता करें।

माता का गौरवमय कर्तव्य

इतनी वहनें जो यहाँ काम कर रही हैं, उन्हें क्या करना है? आज तक जो करती रही है, वही करना है क्या? वहनो को समाज-रचना करने में नेता वनना है। मातृ-प्रधान, समाज-रचना वननी चाहिए। लेकिन यह नया विचार नही है। विचार के तौर पर यह पुराना है। लेकिन सामाजिक क्षेत्र में उसका अमल नही है। मनु का वाक्य है। मत्र कहनेवाला उपाध्याय और अर्थ कहनेवाला आचार्य है। मनु ने कहा है कि 'उपाध्यायान् दश आचार्य आचार्यनाम शत पिता, सहस्रतु पितॄन् माता, गौरवेण अतिरिच्यते'। दस उपाध्याय के वरावर एक आचार्य है, सौ आचार्य के वरावर एक पिता है, और हजार पिता से भी बढकर एक माता का गौरव है। स्त्रियो के लिए भारतीय सस्कृति में यह गौरव है कि स्त्री के लिए एक शब्द महिला है। इसका अर्थ ही महान् है। आज तक समाज-रचना पुरुषो के हाथ में थी और कुटुम्ब-रचना वहनो के हाथ मे रही। अव कुटुम्ब-रचना में पुरुषो को थोडा हिस्सा लेना होगा। एक दिन में एक वार की रसोई भाइयों को वनानी होगी। हर वच्चे को रसोई का उत्तम ज्ञान होना चाहिए। आज तक रसोई वनाना वहनो का काम माना गया। इसके आगे पुरुष रसोई वनाने का काम जानेगा, तभी उसको खाने का अधिकार हासिल होगा। पुरुषो को घर में काम के कुछ हिस्सा देना चाहिए और स्त्रियो को भी समाज-रचना में अपना हिस्सा देना चाहिए। आज तक पुरुषो ने पूरी-की-पूरी समाज-रचना अपने हाथ में रखी। उसके परिणाम-स्वरूप पचीस साल के अन्दर दो महा-युद्ध हो गये। तीसरे महा-युद्ध का भी डर छाया हुआ है।

आज-कल बहनें कहती हैं कि स्त्रियो को पुरुषो की बराबरी में आना चाहिए। ऐसा काल आया है। ये समझती हैं कि यदि पुरुष की बराबरी मे आ जायेंगी तो ऊँची हो जायेंगी। मनु ने उनको हजार पिताओ से भी ऊँचा माना। लेकिन वे कहती है कि हम पुरुषो के बराबर हैं। याने पुरुष बीडी पीता है, तो वे भी बीडी पियेंगी। इस देश में सब बराबर-बराबर रहेंगे—'सैरि नीगर समानमा।' पुरुष स्त्रियो को किस तरह समानता देने जा रहा है? जैसे पुरुषो की पलटनें बनती है, वैसे लडाई के लिये बहनो की पलटने बनायी जा रही हैं। याने लडाई मे पुरुषो के जरिये संहार पूरा नही होता था, तो संहार-देवता को ही बुला लिया। इंग्लैंड-अमेरिका में स्त्रियो की पलटने बन रही हैं, इसलिये बहुत जरूरी है कि स्त्रियो को समाज-रचना मे आना चाहिए। और पुरुषो के हाथ रोकना चाहिए। इसका नाम है मातृ-प्रधान समाज-रचना याने अहिंसा-प्रधान समाज-रचना। माता सब बच्चो को खिलाकर खाती है। वह बच्चो से यह नहीं कहती कि मैं माता हूँ, तभी तो तुम बच्चे हो। अगर मैं तगडी नही होऊँगी, तो तुमको कैसे खिलाऊँगी? घर में दूध ज्यादा नही है, इसलिए पहले मैं ही पी लेती हूँ। माँ तो सबसे पहले बच्चे को दूध पिलाती है। उसके बाद घर के दूसरे लोगो को पिलाती है। फिर कुछ बचता है, तो खुद पीती है। इसका नाम है अहिंसा। यही है मातृ-प्रधान समाज-रचना। इस समाज में सबसे श्रेष्ठ आवाज माता की है। ऐसी अहिंसा-युक्त मातृ-प्रधान समाज-रचना इसके आगे बनती है। जिस तरह शंकराचार्य-जैसे महाज्ञानी पुरुष निकले और सारा धर्म का रूप बदल दिया, वैसे महा-ज्ञानी सरस्वती रूप, वैरागिणी, ब्रह्मचारिणी स्त्रियाँ निकलनी चाहिए, और समाज का रूप बदलना चाहिए। स्त्रियो को पुरुषो की मदद में ही कुछ काम करना है, इतना ही नहीं करना है बल्कि पुरुषो से बिगड़ा हुआ काम स्त्रियो को सुधारना है। इसलिए गांधी जी हमेशा स्त्रियो के बारे में बोलते थे। हमको खुशी है कि यहाँ लड़कियाँ अच्छी तरह सीख रही हैं। उनको हमने शिक्षण की दिशा बता दी है।

स्त्रियो को सिर्फ पुरुषो की बराबरी नहीं करनी है। अगर पुरुष पूरे अक्ल वाले होते, तो उनकी बराबरी ठीक है, परन्तु वे मूर्ख बने है, इसलिए

उनकी वरावरी में लाभ नही होगा। उनको अकुश में रखने का काम स्त्रियो को करना है। समाज-रचना का अन्तिम निर्णय स्त्रियो के जरिये होना चाहिए। इसलिए स्त्रियो को थोडी शिक्षा देने में हमको सतोप नही है। पुरुप कम पढे-लिखे होगे, तो चल सकता है। क्योकि वे खेत में काम करते हैं, करेंगे। उसके साथ-साथ उनका ज्ञान बढेगा। लेकिन स्त्रियो को थोडा-सा पढा देने भर से नही चलेगा। स्त्रियो को सस्कारो का उत्तम ज्ञान हासिल करना चाहिए। उनका कम ज्ञान म निभेगा नही। उनके पास ज्ञान-समुद्र होना चाहिए। माता सर्वोत्तम गुरु के तौर पर घर की नियत्रिका और समाज की निरीक्षिका वन कर समाज का नियत्रण करती रहे, ऐसा होना चाहिए।

जैसे मदालसा ने अपने बच्चो को अध्यात्मिक ज्ञान दिया, वैसे सारे-समाज को और घर वालो को अध्यात्मिक ज्ञान देनेवाली स्त्रियाँ होनी चाहिए। हमारा विश्वास है कि हिन्दुस्तान और दुनिया का उद्धार तब होगा, जब व्यक्ति समाज जीवन में लीन होगा। उसकी योजना ग्रामदान में है। वह कार्य वहाँ के सभी लोगो को हाथ में लेना है।

वेदारण्यम् (तजौर)
३-२-'५७

धर्मचक्र प्रवर्त्तन : २० :

हमने कहा है कि भूदान, ग्रामदान आन्दोलन धर्मचक्र-प्रवर्तन का आन्दोलन है। यह शब्द भगवान् गौतम बुद्ध का है। लेकिन भगवद्गीता में इसका जिक्र आता है। गीता ने उसको "यज्ञचक्र" नाम दे दिया है। जो इस यज्ञचक्र को नही चलायेगा उसकी आत्मा पापमय वनेगी। इसलिए हर शख्स का कर्तव्य है कि वह धर्मचक्र यज्ञचक्र चलाने मे अपना योग दे।

अभी तक लगभग दो हजार से ज्यादा ग्रामदान मिले है। उधर महाराष्ट्र में दो सौ के करीव ग्रामदान हुए है, जहाँ अभी तक मैं गया ही नही हूँ। इधर मदुरा जिले मे भी करीब १२५ (अव दो सौ) ग्रामदान हो चुके हैं। इस तरह कुल भारत में यह चीज अव लोगो के ध्यान में आ रही है।

धर्मकार्य एक व्यक्ति ही कर सकता है।

वहुत लोग पूछते हैं कि ऐसा कार्य एक शख्स कैसे करेगा। हमारा विश्वास उल्टा ही है। हम समझते हैं कि धर्म-कार्य अकेला एक पुरुष ही करता है। ईसाई धर्म की प्रेरणा अकेले एक ईसामसीह के दिमाग मे पैदा हुई और उनके शिष्यो के जरिये योरप में फैली। अव तो वह चीज दुनिया भर मे फैल गयी है। उनके सिर्फ वारह शिष्य थे। उनमें से भी एक शिष्य काम नही कर सका। वाकी लोगो ने उनके मरने के वाद काम किया। जव तक वे जिदा थे, वे अकेले ही काम करते थे। अकेले पैगम्वर मुहम्मद के हृदय में इसलाम की ज्योति प्रकट हुई। ईरान में एक धर्म-सस्थापक हो गये। उनका नाम था जरतुस्थ। करीव-करीव उसी जमाने मे चीन में एक धर्म-सस्थापक लाओत्से हो गये। उसी जमाने में हिन्दुस्तान मे वुद्ध भगवान् हुए। ऐसी मिसालें आप वार-वार देखेंगे कि एक-एक शख्सने देश का रग ही वदल दिया।

ऐसे महापुरुष अपने इस देश मे और दुनिया मे भी पैदा हुए। खैर, उनमें वडी ज्योति थी। वडी ज्योति के सामने, सूर्यनारायण के सामने अन्धकार टिक ही नही सकता। परन्तु हम सभी तो सूर्यनारायण वन नही सकते। उतना तीव्र प्रयत्न हो जाय तो वह भी वन सकते हैं पर इतना तीव्र प्रयत्न कहाँ हो सकता है? हम सवके हृदय में ज्योति तो मौजूद है ही। हमको इतनी सुन्दर प्रकाशमय ज्योति और इतना सुन्दर वेगवान रथ मिल गया है, तो तीव्र प्रयत्न से सूर्य के समान ज्योति वन सकती है। परन्तु केवल सूर्य ही अन्धकार को नही जानता। एक छोटा दीया भी अंधकार को नहीं जानता। चाहे दुनिया में कितना ही अंधकार छाया हो, उसको उसका पता नही है कि अंधकार कहाँ है। कुल दुनिया को प्रकाशमय करना है, तो परमेश्वर ही करेगा। और कौन कर सकेगा? वाकी सव प्रकाश सीमित ही रहेंगे। एक छोटा दीपक भी अपनी प्रकाश-सामर्थ्य से आस-पास के अंधकार को मिटा देता है। वह स्वयं अंधकार को पहचानता ही नही है। अगर उसके सामने अंधकार की वात करेंगे, तो वह कहेगा कि अंधकार क्या चीज है, जरा मुझे अंधकार दिखाओ तो सही। एक पुडिया मे अंधकार भरकर ले जायेंगे तो उसको

दिखायी देगा। वह अधकार देखने जायेगा, उतने में तो अधकार खतम हो जायेगा। इसलिए प्रकाश चाहे छोटा हो या बडा, उसके सामने अधकार टिक नही सकता। जैसे अकेला सूर्य अधकार का नाश करता है, वैसे अकेला दीपक भी अधकार का निवारण करता है।

मैं कहना यह चाहता था कि धर्म-कार्य व्यक्ति ही करता है और अकेला व्यक्ति ही करता है। फिर उसके इर्दगिर्द पाँच-पचास दूसरे खडे हो जायँ, तो अलग बात है। परन्तु दस मनुष्य का एक चेतन नही मिलता है। एक मनुष्य खडा हो गया, बस चेतन हो गया।

इस समय हिन्दुस्तान के लिए इससे बेहतर धर्म-मार्ग दूसरा नही है। कुछ लोग पूछते है कि 'भाई जब आप सारे गाँव को ग्रामदानी बनाने जा रहे हैं, तो वर्णाश्रम-भेद तो मिटाओगे ही।' इस तरह के आक्षेप करते हैं। हम उनसे कहते है कि 'भाई, जरा सोचो। धर्म सूक्ष्म होता है। बिलकुल ऊपर-ऊपर से देखने में वह मालूम नही होता है। अन्दर से उसका पता चलता है। चातुर्वर्ण्य क्या है? इनका कोई बाह्य वेष है क्या? वह विचार और अनुभव की बात है। अपने को ऊँचा समझ लिया तो वर्ण हो गया क्या? जो अपने को ऊँचा समझेगा, वह ईश्वर की निगाह में सबसे नीचे गिरेगा। जो दावा करेगा कि मैं ऊँचा हूँ, तो वह दावा ही उसको खतम करेगा। चार वर्ण की कल्पना लोगो में भेद करने के लिए नही है, वह समाज के गुण-विकास के लिए है। चार आश्रम भी गुण विकास के लिए हैं। हम तो नये सिरे से चार वर्ण और चार आश्रम खडे करेंगे। हम चाहेंगे कि हरएक व्यक्ति मे चार आश्रम और चार वर्ण हो।

चार वर्णो की कल्पना

ग्रामदान के गाँवो में किस प्रकार चार वर्ण और चार आश्रमो की स्थापना होगी, इसका हमने एक छोटा-सा सूत्र बनाया है, जैसे मेयक्कण्डार का सूत्र है, जैसे ब्रह्मसूत्र है, वैसे चार शब्दो में हमने चार वर्ण और चार आश्रम रख दिये हैं। वे चार गुण जिसमें है, उनमें चार वर्ण हैं और चार आश्रम हैं। पहले चार वर्ण की बात लेंगे।

चारो वर्ण अत्यन्त पवित्र होते है। लोगो का ख्याल है कि कुछ वर्ण ऊँचे और कुछ वर्ण नीचे है, ऐसी वात नही है। गीता मे कहा गया है कि **"स्वे स्वे कर्मण्यभिरत ससिद्धि लभते नर."** जो अपने-अपने कर्तव्य में परायण होकर निष्काम वुद्धि से परमेश्वर की सेवा समर्पित करेगा, वह समान भाव से मोक्ष पायेगा। चित्त मे शान्ति का होना ब्राह्मण का लक्षण है। हम चाहते है कि ग्रामदानी गाँव में शान्ति हो। सवके हृदय में राम हो। क्या आज के गाँवो मे शान्ति दिखाई देती है? देश में भी शान्ति-शान्ति की चाह है, परन्तु राह पकड़ी गयी है अशान्ति की। अशान्ति की राह पर चलकर शान्ति की चाह रखते है। शान्ति की स्थापना तव होगी, जव सव लोगो के हृदय के दु ख मिट जायेंगे। उन दु खो के कारणो में एक साधारण दु ख है कि लोगो को सर्व सामान्य चीजे मुहैया नहीं होती है। और दूसरा कारण यह है कि कुछ लोगो के पास चीजें ज्यादा पड़ी है। इससे उनके चित्त को शान्ति नही होती।

चार वर्णों में दूसरा है, **'क्षत्रिय वर्ण।'** क्षत्रिय याने अपने हाथ में तलवार लेनेवाला। ऐसे लोग भी वहुत वढ गये है और शस्त्रास्त्र भी वहुत वढ गये है। हर सरकार के पीछे शस्त्रास्त्र का वल रहता है। इससे सारी दुनिया निर्वीर्य और भयभीत वनी है। क्षत्रिय का लक्षण है निर्भयता। निर्भयता किसी प्रकार के शस्त्रास्त्र से नही आती। निर्भयता की स्थापना के लिए हम दम-रूपी क्षत्रिय की स्थापना करते है। दम याने अपने पर जाप्ता, अकुश रखना। जहाँ सव लोग अपने पर कावू नही कर पाते है, दमन नही कर पाते है, वहाँ वाहर से दमन करने की वात आती है। हम समझते है कि ग्रामदानी गाँव में दूसरे गाँवो से दम की प्रतिष्ठा अधिक होगी। वहाँ दूसरे का छीनने की इच्छा होगी ही नही। क्योकि वहाँ कोई दूसरा या पराया है ही नहीं। सव अपने ही है। सारे गाँव की जमीन एक हो गयी। मालकियत मिट गयी। उस हालत में हरएक मनुष्य अपने पर कावू रखेगा। इस दम को हम क्षत्रिय वर्ण की स्थापना कहते है।

तीसरा है वैश्य वर्ण। हिन्दुस्तान में सव लोगो को मालूम है कि वैश्य के लक्षणो का अगर एक शब्द मे वर्णन करना है तो वह है 'दया'। हिन्दुस्तान

में जिस तादाद में ब्राह्मण मासाहार छोडे हुए है, उनसे भी ज्यादा तादाद में वैश्य हैं। मासाहार छोडे हुए लोगो की गिनती की जाय, तो वैश्यो की सख्या ज्यादा निकलेगी। वैश्य का लक्षण ही यह है कि दीनो की सँभाल करना, उनके वास्ते सग्रह करना, अपने सग्रह से सबकी रक्षा करना। वैश्य का दया से बढकर दूसरा कोई गुण ही नही हो सकता। आप ही बताइये कि वैश्यो की स्थापना ग्रामदान के गाँव में होगी या नही। दया और करुणा के बिना गाम-दान का आरम्भ ही नही होता। आज दया कहाँ है ? दिल अत्यन्त निष्ठुर बन गये है। दूसरो की आपत्तियाँ देखते रहते हैं, परन्तु उनके लिए कुछ करने की हमको इच्छा ही नही होती।

चौथा वर्ण है शूद्र। शूद्र के बिना दुनिया चल ही नही सकती। शूद्र का लक्षण है श्रद्धा। शूद्र के लक्षणो का अगर एक ही शब्द में वर्णन करना है, तो श्रद्धा उसका लक्षण है। शूद्र सेवा-प्रधान होता है। बिना श्रद्धा और भक्ति के सेवा हो ही नही सकती। इसलिए शूद्र का मुख्य गुण सेवा है और श्रद्धा उसका अन्तर रूप है। आप ही बताइये कि ग्रामदान से बच्चो के दिल में श्रद्धा पैदा होगी कि नही ? आज बच्चो की हालत ऐसी है कि भूमिहीन और गरीबो के बच्चो को अनाथ समझकर अडिगलार को उनका पालन करना पडता है। अडिगलार क्या विष्णु का अवतार है ? सब लोगो का पालन करने का जिम्मा उनका है ? वह जिम्मा गाँव का होना चाहिए। जहाँ आपने ग्रामदानी गाँव बनाया, वहाँ आपने अनाथाश्रम खोल ही दिया। दुनिया भर के अनाथो का एक सग्रह करने की कोई जरूरत ही नही है। ग्रामदानी गाँवो में किसी का पिता मर गया तो एक पिता मर गया। परन्तु १५० और पिता मिल गये। ग्रामदानी गाँव में एक-एक बच्चे के सौ-दो सौ पिता होगे। ग्रामदानी गाँव में एक-एक माता को तीन सौ-चार सौ लडके होगे। इसलिए स्वतन्त्र अनाथाश्रम खोलने की कोई जरूरत ही नही रहेगी। तो उन लडको में समाज के लिए कितनी श्रद्धा पैदा होगी ? जिस समाज मे हम पैदा हुए, वह समाज कितना दयालु और प्रेमी है कि हम सब बच्चो की बराबर रक्षा की है, ऐसा वे बचपन से ही सीखेंगे।

ग्रामदानी गाँवों में चार आश्रमों की स्थापना कैसे ?

इन चार गुणो की याने साम, दाम, दया और श्रद्धा की समाज मे प्रतिष्ठा हो गयी तो चार वर्णो की स्थापना हो गयी। अब चार आश्रमो की स्थापना ग्रामदानी गाँव मे कैसे होगी ? पहला सन्यास आश्रम। समाज को सन्यासी की अत्यन्त आवश्यकता है। यह सबको मालूम है। क्योकि सन्यासी रहा तो सबकी सेवा करने के लिए मुफ्त का नौकर मिल गया। वह सर्वत्र ज्ञान-प्रचार करता चला जायेगा। सन्यासी का लक्षण है शमन। जहाँ चित्त मे शान्ति नहीं है, वहाँ सन्यास नही है। सन्यासाश्रमी का अर्थ यह नही है कि बालो की हजामत करवा दी, दाढी बढा दी तो सन्यासी हो गया। ये हमारे अडिगलार सन्यासी है कि नही ? उनकी परीक्षा करनी है, तो उनको तमाचा लगाओ। तमाचा मारने से अगर उनको गुस्सा आता है, तो वे सन्यासी नही है। सन्यासी की परीक्षा है शम, शान्ति। ग्रामदान से शम-रूपी इस सन्यास-आश्रम की हम स्थापना करना चाहते हैं।

दूसरा है वानप्रस्थाश्रम। वानप्रस्थाश्रम का लक्षण है—दम। हमें तपस्या मे इद्रियो का दमन करना है, अपने को सपूर्ण रूप से जीत लेना है। इस तरह जहाँ दम गुण आ गया, वहाँ वानप्रस्थाश्रम की स्थापना हो गयी। ग्रामदान से हम यह दम-रूपी वानप्रस्थाश्रम की स्थापना करना चाहते है।

तीसरा आश्रम है गृहस्थाश्रम। गृहस्थाश्रम का लक्षण है—दया। तिरुक्कुरल ने भी कहा है कि गृहस्थ का सबसे श्रेष्ठ गुण है दया, करुणा, प्रेम। इसलिए जहाँ दया की प्रतिष्ठा हो गयी, वहाँ गृहस्थाश्रम की स्थापना हो गयी। ग्रामदानी गाँव मे हम दया रूपी गृहस्थाश्रम की स्थापना करना चाहते है।

चौथा आश्रम है ब्रह्मचर्याश्रम। ब्रह्मचर्याश्रम का लक्षण है—श्रद्धा। जहाँ श्रद्धा की प्रतिष्ठा हो गयी, वहाँ ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना हो गयी। ग्रामदान से हम श्रद्धा रूपी ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना करना चाहते है।

शम, दम, दया और श्रद्धा, इन चार शब्दो मे चार वर्ण और चार आश्रम आ गये। "शम, दम, दया, श्रद्धा" ग्रामदान के सूत्र हैं। इस प्रकार ग्राम-

ओर से जो मिला, उसका भगवत्-प्रसाद के तौर पर स्वीकार करेंगें। उस प्रसाद से कोई वंचित नही रहेगा। आज भी लोग समर्पण की भावना रखते हैं। लेकिन वह शाब्दिक समर्पण होता है। शब्द में जो समर्पण है, वह भी अच्छा है। लोग बोलते हैं, "श्रीकृष्णार्पणम्", "ब्रह्मार्पणम्" भाषा मे वह चीज है, अभी जीवन में नही आई है। परन्तु भाषा में है। इसलिए जीवन में आयेगी। अगर भाषा में ही नही, है तो जीवन में कैसे आयेगी ?

भक्ति-मार्ग में कृष्णार्पण और ब्रह्मार्पण की जो भावना है, उसी के आधार पर ग्रामदान खडा है। आज रामानुज कहते होगे कि जो मत्र मैंने खुलेआम जाहिर कर दिया, वही बाबा अब बाँट रहा है। उनका दिल इस वक्त बडा सन्तुष्ट होता होगा। हमें कोई शका नही है कि उनका आशीर्वाद हासिल है, आप लोग कितने भाग्यशाली है कि इतने महापुरुष के स्थान में आप रहते है। हम आशा करते है कि तमिलनाड में कुल के कुल गाँव मालकियत मिटा करके भक्ति-मार्ग का नया सदेश दुनिया में पहुँचायेंगे।

वाल्मीकि-रामायण में रामचन्द्रजी के गुणो का वर्णन दो उपमा देकर किया गया है। उन उपमाओ से उसमें दिखाया गया है कि रामचन्द्र राष्ट्र-पुरुष थे। "समुद्र इव गाभीर्यें, स्थैर्येच हिमवानिव।" रामचन्द्रजी समुद्र जैसे गभीर और हिमालय जैसे स्थिर थे। एक उपमा में उत्तर हिन्दुस्तान की सीमा दिखाई, दूसरी उपमा में दक्षिण भारत का दक्षिण समुद्र दिखाया। उस महाकवि ने सारे भारत की सीमा इन दो गुणो में प्रकट की। वह गाभीर्य तमिलनाड में है, गहराई है। हम आशा करते हैं कि आप उस गहराई को महसूस करेंगे। इस आन्दोलन को गहराई से देखेंगे। ऊपर-ऊपर से मत देखिये।

आन्दोलन आर्थिक और आध्यात्मिक भी

कोई कहता है कि भूदान आन्दोलन आर्थिक आन्दोलन है, आध्यात्मिक नही है। वे लोग समझते ही नहीं है। मदिर में प्रसाद के तौर पर मिठाई दी जा रही है। तो क्या वह हलवाई की दूकान है ? मदिर में जो मिठाई मिलती है, वह तो धर्म का चिह्न है। वैसे ही यह जमीन जो मांगी जाती है,

दी जाती है, बाँटी जाती है। वह सब प्रेम से हो रहा है। यह सिर्फ जमीन का बँटवारा नही है। जमीन का बँटवारा तो कानून से भी या जमीन छीनकर भी हो सकता है। दूसरे देशो में इन तरीको से जमीन का बँटवारा हुआ भी है। अगर इस तरह से यहाँ हुआ हो, तो यह आर्थिक आन्दोलन माना जा सकता था। लेकिन यहाँ तो प्रेम से माँगा जाता है, प्रेम से दिया जाता है। यह आन्दोलन सिर्फ इकोनामिकल नही है, आध्यात्मिक भी है। यह सिर्फ जमीन का बँटवारा नही है, प्रेम का भी बँटवारा है। प्रेम से बाँटने की बात है।

धर्म के साथ अर्थ का होना कोई पाप है क्या ? विष्णु के साथ लक्ष्मी का होना कोई पाप है क्या ? शिव के साथ शक्ति का होना कोई पाप है क्या ? आप तिरुकुरल को ही लीजिये। अरम् (धर्म) के साथ पुरुल (अर्थ) का होना कोई पाप है क्या ? यह लोग पूछते हैं कि आपका आन्दोलन सपत्तिक, आर्थिक दीखता है। हम कहना चाहते हैं कि यह केवल पुरुलाधार (आर्थिक) नही है, अरमाधार (धार्मिक) भी है। धर्म के साथ अर्थ आ गया, तो वह केवल पुरुलाधार (आर्थिक) नही बन जाता है। मिठाई खाने मे मीठी है, देखने में सुन्दर है। दोनो गुण उसमे हैं। सौंदर्य भी है, स्वाद भी है। इस-आन्दोलन का स्वाद है करुणा, जो चखने में मीठी है। उसका रूप है अर्थ-शास्त्र। केवल रूप से कोई मतलब नही है। बडे-बडे सुन्दर केले बाजार मे बिकते हैं, परन्तु उनके अन्दर गोबर भरा है। वे खाये नही जा सकते हैं, बगीचे के केले की मधुरता उस केले में नही है, यद्यपि रूप है। वैसे कानून से जो जमीन बाँटी जाती है, या जमीन छीन ली जाती है, वह है गोबरवाला केला। इस आन्दोलन में विष्णु और लक्ष्मी साथ-साथ है। शिव और शक्ति साथ-साथ है। मिठास और सौंदर्य साथ-साथ है। केवल ऊपर-ऊपर देखने से नही चलेगा। इसलिए मैंने कहा कि आप गहराई में जाइये। गहराई तमिलनाड का खास गुण है। ऐसा वाल्मीकि कह रहा है—समद्र इव गाभीर्ये। हम आशा करते हैं कि इस दृष्टि से इस आन्दोलन की ओर देखा जाय।

तिरुप्पुदकुइ (रामनाड)
१७-२-'५७

आदर्श गाँव : २२ :

हमारा यह काम बुनियादी क्रान्ति का है। इसमें जीवन को सब प्रकार से बदलना होगा। इन दिनो शहर बढते ही जा रहे हैं। गाँवो से लोगो का प्रवाह शहरो की तरफ हो रहा है। शहरो में सब प्रकार की बुराइयाँ होती हैं। ये गाँव भी बडे बनने की कोशिश करते हैं, शहरो का अनुकरण करना चाहते हैं। इस तरह शहरों की बुराइयाँ भी गाँवो में आ जाती हैं। हम समाज बदलना चाहते है। उसके लिए यह रचना ही बदलनी होगी। गाँवो की रचना ही ऐसी करनी होगी कि शहरो से लोग गाँवो में आयें। तो क्या करना होगा ?

स्वच्छता और संयम

मुख्य बात यह है कि गाँव में स्वच्छता होनी चाहिए। शान्ति भी चाहिए। आस-पास ऐसी बातें न हो कि जिनसे ध्यान में बाधा पहुँचे। आज गाँव में इधर-उधर मैला पडा रहता है। हम तो नाक बद करके गाँव में प्रवेश करते हैं। इसी लिए हर व्यक्ति के घर के पीछे बगीचा हो। शौच के लिए लोग वही जायँ। मैले पर मिट्टी डालेंगे तो खाद तैयार होगी। उस खाद का उपयोग बगीचे में होगा। आज तो शहर सस्कारहीन बन रहे है और गाँव भी उसका अनुकरण करते हैं। इसीलिए गाँवं में नरकवास बना है। मरने के बाद नरक मिलेगा तब मिलेगा, लेकिन आज यही नरकवास भुगतना पड रहा है। लेकिन हम चाहें, तो यह भी स्वर्ग बन सकता है। आज जनसख्या बढ रही है। यह ठीक नही है। जनसख्या बढने का डर नही है। परन्तु जिस ढग से वह बढ़ रही है, वह ठीक नही है। इसके लिये विषय वासना ही कारण है। ऐसी विषय-वासना बढती रही तो लोग निर्वीर्य बनेंगे। फिर अहिंसा टिक नही सकती। लोग फिर पशुओ की, गाय की, बैल की भी रक्षा नही कर सकेंगे। उनको भी खा जायेंगे। इसीलिए सयम सीखने की जरूरत है। सयम, स्वच्छता, शान्ति की तालीम हरएक को मिलनी चाहिए। गाँव में भगवत्-भजन होगा। लेकिन ग्रामदान तो उसका आरम्भ है। उस बुनियाद पर सर्वोदय का मदिर खडा करना है।

प्रार्थना

गाँव मे रोज प्रार्थना होगी। उसके लिए स्वच्छ जगह चाहिए। खुली हवा हो। आज के हमारे मदिर तो ऐसे होते है कि वहाँ हवा ही नही मिलती। वहाँ ध्यान भी नही कर सकते। जल्दी से जल्दी बाहर आना पडता है। इसीलिए प्रार्थना, चिन्तन, ध्यान के लिए गाँव के बाहर स्वच्छ जगह हो। उस जगह आदर्श स्वच्छता होगी। छोटा-सा कपाउड भी हो सकता है, ताकि कोई जानवर या कुत्ते वगैरह उस स्थान में जाकर यह स्थान गदा न करें। वहाँ फूल वगैरह के पेड भी लगा सकते है। प्रार्थना में जाते समय लोग अपना-अपना आसन बैठने के लिए ले जा सकते हैं। वह स्थान तो स्वच्छ होगा, तो भी आसन पर बैठ सकते है। वहाँ सब भाई-बहन मिलकर नम्मालवार, माणिक्यवाचकर आदि सतो के अच्छे-अच्छे भजन गायेंगे। जिस किसी के जीवन मे ज्ञान सुनने को नही मिलता, वह शुष्क जीवन है। रोज देह को खाना मिले, इतने से नही बनता। अन्तरात्मा को भी भक्ति, ज्ञान का कुछ सस्कार होना चाहिए। लेकिन यह तभी होगा, जब सबके सब ग्रामदान हो जायेंगे।

इस तालुका मे और एक महीना हमें रहना है। ये बाते जो हमने कही, उन्हें गाँव-गाँव में फैलाना चाहिए। इससे गाँव का जीवन पराक्रमी, शान्त और प्रेममय बनेगा।

शान्ति

गाँव मे शान्ति तो होनी ही चाहिए, शहरो में दिन-रात जो आवाज चलती है, उससे दिमाग बिगडता है। उसी के कारण लोग पागल होते हैं और आत्महत्या की प्रवृत्ति बढती है, ऐसा शास्त्रज्ञो का कहना है। अमेरिका में यह एक समस्या है। वहाँ छोटी-छोटी बातो पर लोग आत्महत्या करते हैं, और दस में से एक मनुष्य पागल होता है। अमेरिका तो समृद्ध देश कहलाता है, परन्तु वहाँ के देशवासियों के जीवन मे शान्ति नही है। शान्ति के अभाव मे बाकी सब चीजें काम नही देती है।

हमारे कार्यकर्ताओ को जीवन से सबधित बहुत-सी बातें समाज को

समझानी हैं। हम एकागी नही हैं। जीवन की कीमती शाखाएँ हमारे सामने हैं, जिनमें हम सुधार कर सकते हैं। जीवन-शास्त्र मे सुधार, समाज-शास्त्र में सुधार, हमारे चिन्तन में सुधार, खेती के तरीको में सुधार, सस्कारो में सुधार, धधे विषयक सुधार, उत्सवो में सुधार, शादी की पद्धति में सुधार, तालीम में सुधार, इस तरह हरएक शाखा मे, हमें सुधार करना है। ग्रामदान होता है तो कितना विशाल काम हमारे सामने है। इस तालुका में यही काम करना है।

सापटूर (मदुरा)
८-३-'५७

गाँव का आरोग्य : २३ :

हमारा पहला कदम था कि गाँव में भूमिहीन कोई नही रहना चाहिए, लेकिन हमारा सबसे बडा कदम यह है कि गाँव में भूमि-मालिक कोई नही रहना चाहिए। जमीन की मालकियत मिटने के बाद ग्राम-सुधार के काम आसानी से किये जा सकते हैं। वसे तो कई काम करने होगे, क्योकि इन गाँवो में ग्राम-राज्य का चित्र ही खडा करना है। लेकिन सबसे पहले चार बातें करनी होगी--फसल-सुधार और किसान की मदद, ग्रामोद्योग, तालीम का इतजाम और आरोग्य की योजना। इस तरह की चतुर्विध योजना हमने सामने रखी है। आज मै आरोग्य के बारे में कुछ कहूँगा।

आधुनिक डाक्टरी गाँव के लिए काम की नही :—

जब कभी हम गाँव के बारे में सोचते हैं, तो आरोग्य की बात सामने आती है। जहाँ-जहाँ हम घूमते हैं, खासकर दूसरे जिलो में, वहाँ-वहाँ हमने देखा है कि गाँव के लोग अस्पताल की माँग करते है। हम नही समझते कि ये एलोपैथी के अस्पताल हिन्दुस्तान के गाँवो के लिए लाभदायक होगे। वैसे किसी भी वैद्य-पद्धति में जो अच्छे औषध होगे, उनको लेने से हम इनकार नही करेंगे। हमने अपना मन इस तरह से सकुचित नही बनाया है। परन्तु हिन्दुस्तान की

हालत देखते हुए हमारे कुछ विचार बने हुए है और हम समझते है कि आधुनिक डाक्टरी जिस तरह से बढ रही है, वह हमारे गाँवो के लिए ज्यादा काम की नही है। इस विषय के बारे मे हम यहाँ पर चर्चा इसलिए कर रहे है कि हमने यहाँ पर एक सुन्दर-सा वनस्पति का बगीचा देखा, जो यहाँ के कविराज ने बनाया है। इन चार सालो में पचासो बार मैने जिक्र किया था कि गाँव-गाँव मे वनस्पति का बगीचा बनना चाहिए और वहाँ पर सुलभ जडी-बूटियाँ पैदा करनी चाहिए, जिससे कि लोगो के बहुत से रोग दुरुस्त किये जा सकते है। हिन्दुस्तान का औसत गाँव पाँच सौ जन-सख्या का होता है। हमने हिसाब लगाया कि ऐसे गाँव के लिए एक एकड का वनस्पति का बगीचा पर्याप्त है। यह गाँव तो बिलकुल छोटा ही है, सौ जनसख्या का है। इसलिए यहाँ पर १।५ एकड का बगीचा पर्याप्त है। हमने देखा कि यहाँ का बगीचा उतना ही है। बात इतनी ही है कि इस काम का जानकार मनुष्य होना चाहिए और बगीचे मे कुआँ बनना चाहिए, ताकि गर्मी के दिनो में भी पानी मिल सके। इस तरह रोग-निवारण के लिए हमने अपनी यह योजना बनायी है।

आहार-सुधार

पर हम रोग-निवारण की योजना को नम्बर दो का महत्त्व देते है, और रोग ही न हो इस बात को नम्बर एक का महत्त्व देते है। रोग न होने के लिए हमने जो कार्यक्रम रखा है, वह मै आपके सामने रखूँगा। उसमें सबसे महत्त्व की बात यह है कि ग्रामीणो को अपना आहार सुधारना चाहिए। जिसे युक्ताहार कहते है, वैसा परिपूर्ण आहार सबको मिलना चाहिए। आज गाँववालो को अनाज तो कुछ मिल जाता है, लेकिन कही-कही, जहाँ पर मजदूरो को पैसे में मजदूरी दी जाती है, वहाँ पर उन्हें अनाज हासिल करने मे भी मुश्किल होती है। परन्तु जहाँ पर ग्रामदान मिला हुआ है, वहाँ पर अनाज तो सबको मिलेगा। लेकिन अनाज पर्याप्त वस्तु नही है। आहार में और भी बहुत-सी चीजों की जरूरत होती है। मनुष्य को हर रोज ताजी तरकारियाँ काफी मात्रा मे मिलनी चाहिए, गावो के लोगो को फल भी मिलने चाहिए और दूध पर्याप्त मात्रा मे मिलना चाहिए। हमने हिसाब लगाया है कि हर मनुष्य को

एक सेर दूध मिलना चाहिए। इसके अलावा आहार में गुड और थोडा तेल भी होना चाहिए। जब इतनी चीजें मिलेंगी तब शरीर स्वयमेव अच्छा रहेगा और बहुत-सी बीमारियाँ टलेंगी। जैसे यह सारा तो कृपि-सुधार की योजना के अन्तर्गत है, लेकिन यह आरोग्य सुधार का एक हिस्सा है।

दूसरी बात यह करनी होगी कि गाँव के लोगो को स्वच्छता का भान कराना होगा। इससे बहुत-सी बीमारियाँ टलेंगी। स्वच्छता के बिना आरोग्य नही रह सकता है। तीसरी बात यह करनी होगी कि गाँववालो को व्यसनो से मुक्त कराना पडेगा। शराब, गाँजा, अफीम, बीडी आदि सब बुरी चीजे छोडनी चाहिए। इन चीजो का शरीर के लिए कोई लाभ नही है, बल्कि सब प्रकार से हानि ही है। हमारी समझ में नही आता है कि गाँव के लोग इन चीजो का क्यो इस्तेमाल करते है।

अन्न-शास्त्र : खाद्याखाद्य-विचार

इस तरह आरोग्य का विविध कार्यक्रम करना होगा। उसके बाद भी अगर रोग हुए, तो जो कार्यक्रम करना होगा उसमें एक बात है वनस्पति की जो हमने ऊपर बतलायी है। लेकिन रोग-निवारण में भी इसका हम नम्बर दो का महत्त्व देते है। नम्बर एक का महत्त्व हम उस चीज को देंगे, जिसे वैद्य-शास्त्र में पचकर्म कहा है और आधुनिक भापा में जिसे प्राकृतिक चिकित्सा कहते है। एनिमा, मसाज-मालिश आदि की योजना गाँव-गाँव में आसानी से हो सकती है। फिर लघन का भी बहुत महत्त्व है। इस तरह से रोग-निवारण के लिए पचकर्म और जडी-बूटी का बगीचा, ये दो बातें करनी होगी। तीसरी बात है, भक्ष्याभक्ष्य विचार याने खाद्याखाद्य विचार। जिसे हम अन्न-शास्त्र कहते है, उसका ज्ञान सबको होना चाहिए। कौन-सी चीजें खानी चाहिए, कब खानी चाहिए, उसकी जानकारी सबको होनी चाहिए।

सप्त-विध-योजना

इस तरह हमने रोग न होने के लिए तीन बातें बतायी। अब आखिर में और एक बात रहती है। इसका बहुत ज्यादा महत्त्व तो नही है, फिर भी यह

करनी पडती है। जैसे सचारी रोग फैलते है, तो कुछ उपाय करने पडते है, और जडी-बूटियो के अलावा दूसरी भी कुछ दवाइयाँ लानी पडती है। जिन दवाइयो को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता है ऐसी दवाइयाँ विशेप बीमारियो के लिए लेनी पडेगी। जैसे मलेरिया मे क्वीनाइन का उपयोग किया जाय, तो हम उसका विरोध नही करेंगे। परन्तु जहाँ तक हो सके, ऐसी कोशिश करेंगे कि हमें दवाइयो का उपयोग करने की जरूरत ही न पडे। उसी तरह मच्छर आदि के निवारण के लिए डी० डी० टी० का प्रयोग भी किया जा सकता है। इस तरह हमारी यह सप्त-विध-योजना हमारे गाँव के आरोग्य के लिए पर्याप्त है।

इसके अलावा जो तीव्र उपायो की योजना होती है, उसकी हमारे गाँवो के लिए जरूरत नही है। उससे जो लाभ होते हैं, उससे ज्यादा हानि होती है। जैसे आजकल बी० सी० जी०पर जो वाद-विवाद होता है, वह एक वृथा वाद-विवाद है। हम उसे इसलिए कहते हैं कि अभी हमने जो बात आपके सामने रखी, उतनी अगर हम कर लेते है, तो सारी चीजें टल जाती है, जो नाहक लोगो पर लादी जाती हैं। इसके अलावा, जिन उपचारो के बारे में डाक्टरो में सदैव से मतभेद है, और चाहे बहुत सारे डॉक्टर उसके पक्ष मे भी क्यो न हो, फिर भी कुछ डाक्टरो के मन मे उसके बारे मे सदेह है, ऐसे विपय के बारे मे सरकार की तरफ से "कैंपेन" चलाना उचित नही है।

हमने जो सप्त-विध योजना बतायी है, वह शहरो के लिए भी यथेष्ट है। परन्तु आजकल शहरो का जीवन बिलकुल कृत्रिम बन गया है, जहाँ पर लोगो को खुली हवा नही मिलती, श्रम करने का मौका नही मिलता है। वहाँ पर तरह-तरह के दूसरे दुराचार भी फैलते है, उन्हे रोकना चाहिए, लेकिन आज तो नही रोके जा रहे हैं। इसलिए हम जानते हैं कि वहाँ पर सप्त-विध योजना के अलावा और भी उपचारो की जरूरत होगी। लेकिन उनकी योजना में डाक्टरो का जितना उपयोग होता है, उतना यमराज का भी उपयोग होता है। इसलिए हम उस मामले में नही पडते हैं। अभी दुनिया के विद्वान् डाक्टरो ने इकट्ठा होकर चर्चा करके जाहिर किया था कि इधर तो हम नयी-नयी दवाइयाँ तैयार कर रहे है और उधर नये-नये रोग पैदा हो रहे हैं। हम उस

चर्चा में नही पडना चाहते क्योंकि हमारा यह क्षेत्र नही है। परन्तु हिन्दुस्तान के ग्रामो के लिए हमने जो आरोग्य की योजना रखी है वह हमारी दृष्टि से पूर्ण योजना है।

सुनावेडा (कोरापुट)
२३-७-'५५

ग्राम-सफाई का महत्त्व

यह गाँव वडा सुन्दर दीखता है। इसकी सचमुच हालत क्या है यह हम नही जानते। अगर गाँव गदे रहे तो गाँव के लोग नर्क में ही रहते हैं, ऐसा मानना चाहिए। हम गाँव-गाँव जाते है, तो कई गाँवो में नाक बद करके ही प्रवेश करना पडता है, क्योकि लोग गाँव के बाहर खुले मैदानो में ही पाखाना करते है। सारी वदवू हवा में फैलती है और वीमारी वढती है। मनुष्य के मैले पर मक्खियाँ बैठती है। वेही मक्खियाँ खाने की चीजो पर वैठती है और वही हम खाते है। उससे वीमारी होती है। इसी का नाम नरक है। यह नरक हमारा ही पैदा किया हुआ है। ऐसे नरक में जो लोग जीते है, उनको मरने के वाद भगवान् स्वर्ग में कैसे भेजेगा ? वह कहेगा कि यह तो नरक का ही प्राणी है, इसलिए इसको यहाँ भी नरक में ही भेजना चाहिए। कई लोग रोज स्नान करते है, भस्म लगाते है, हाथ-पाँव दो-दो, चार-चार वार सावुन से धोते हैं, छुआछूत मानते हैं। परन्तु जिस पर मक्खियाँ वैठती है, वह खाना जरूर खा लेते है। मनुष्य के मैले का अच्छा उपयोग हो सकता है। खेत में एक खुरपी लेकर जाना चाहिए। वहाँ एक गड्ढा वनाना चाहिए, उस पर पाखाने के लिए वैठना चाहिए। वाद में उस पर मिट्टी और घासफूस डालना चाहिए। इतना कर लिया जाय तो वदवू नही आयेगी, मक्खियाँ नही वैठेंगी और वीमारी भी नही फैलेगी। इसके अलावा उसका सुन्दर खाद होगा, तो फसल भी अच्छी आयेगी। मनुष्य के मैले की वदवू आती है, क्योकि उसके परमाणु नाक में जाकर वैठते हैं। कान, आँख और मुँह में भी ये परमाणु घुस जाते ही हैं। इसलिए

मैले को ढँकना चाहिए। ढाँकेंगे तो हानि टलेगी और लाभ होगा। चीन और जापान में मनुष्य के मैले का खाद में वहुत अच्छा उपयोग किया जाता है। साल भर मे उससे एक मनुष्य के पीछे छह रुपये की फसल वढेगी। अगर मनुष्य के मलमूत्र का अच्छा उपयोग करेंगे, तो मान लीजिये कि एक गाँव में ५०० मनुष्य है, तो ३,००० रुपये की फसल वढेगी। आज तो ३,००० रुपये की वीमारी होती है। वीमारी वढती है, तो पैसे भी जाते है और शरीर का भी क्षय होता है। इसलिए गाँव में खूव स्वच्छता होनी चाहिए।

हमने एक गाँव में डेढ साल तक यह काम किया है। लोग रोज मैला करते थे और हम उठाते थे। हम हाथ में फावडा और लोहे का गमला लेकर जाते थे। डेढ साल तक हमने यह काम किया। वाद में लोग मिट्टी डालने लगे, सवको मिट्टी डालनी चाहिए, तभी गाँव की दौलत और अक्ल वढेगी।

व्यक्तिगत सफाई

हम हिन्दुस्तान के लोग दिन मे एक दफा भी स्नान किये विना भोजन नही करते। चार लोटे पानी हो तो काफी है। लेकिन इससे सन्तोष नही मानना चाहिए। ठीक तरह से स्नान जरूर करना चाहिए। अगर गाँव में पानी न हो,तो सवको मिलकर इतजाम करना चाहिए। आप लोग कहते हैं कि यहाँ पानी कम है, लेकिन कपडे तो सवने दो-दो पहने हैं। उससे पसीना भी ज्यादा होता है। फिर स्नान नही करेंगे, तो कैसे चलेगा ? दिन में खुले वदन रहते है, तो सूर्यकिरणे मिलती है और शरीर भी अच्छा रहता है। आपको स्नान के लिए पानी नही मिलता है, लेकिन आप वालो मे तेल तो डालते हैं। सुन्दरता के लिए आप वाहर का तेल डालते है, जिसमें कुछ वुराइयाँ होती है। उससे वाल जल्दी पक जाते है और सौंदर्य के वदले कुरूपता आ जाती है। अगर वाल में तेल डालना है, तो गाँव की मूंगफली का तेल डालना चाहिए।

गाँव मे स्वच्छता रखेंगे तो गाँव मे धर्म रहेगा। जिस गाँव में स्वच्छता होगी, वहाँ सरस्वती वसेगी। जहाँ गदगी होती है, वहाँ विद्या आती ही नही। सरस्वती का आसन कमल है। वह मैले में कभी नही वैठती। गाँव में उद्योग

अगर नही चलते हैं, सब चीजें बाहर से मँगवाते है, तो आपकी लक्ष्मी आपके गाँव मे नही रहेगी और आपके गाँव की जमीन चन्द लोगो के हाथ में रहेगी और बाकी लोगो को पूरा खाना नही मिलेगा, तो गाँव में शक्ति भी नही रहेगी। इसलिए अगर आप गाँव मे सरस्वती, लक्ष्मी और शक्ति, तीनो को रखना चाहते हैं, तो गाँव मे स्वच्छता रखनी होगी, गाँव के उद्योग बढाने होगे, अपनी चीजे खुद तैयार करनी होगी और गाँव की जमीन सबमे बाँटनी होगी।

पोन्नन्कलीवलसु
२-११-'५६

ग्रामदानी गाँवों की विशेषता : २४ :

मेलूर तालुका का यह हमारा आखिरी पडाव है। इस तालुका मे ४० गाँवो ने ग्रामदान जाहिर कर दिया। अब इन गाँवो के लोग किस तरह जीवन बितायेंगे ? दूसरो के जीवन से इनके जीवन मे क्या फर्क रहेगा ?

पहला फर्क तो यह पडेगा कि दूसरे गाँव मे कोई बडे मालिक, कोई छोटे मालिक तो कोई भूमिहीन, ऐसा भेद रहेगा। ग्रामदानी गाँव मे यह फर्क नही रहेगा। यह बहुत बडी बात है। एक ही गाँव के अडोस-पडोस मे हम रहते हैं। पडोसी के घर में दुख है और हम सुख-चैन से रहे, यह कोई शोभादायक बात नही है। अपने सुख का हिस्सा दूसरे को देकर दुखी को सुखी बनाना ही हमारा धर्म है। अपने सुख में से एक हिस्सा हम दूसरे को देते हैं, तो हमारा सुख घटता नही है और दूसरे का दुख घटता है। एक छोटा-सा बालक, बिलकुल आनन्दमय चेहरा ! उसके सामने कोई दुखी जीव आयेगा तो वह हँसकर दुखी को खुश करेगा। सुख में यह शक्ति है। जब हम दूसरे को सुख देते हैं, तो वह फौरन सुखी होता है और हम भी सुखी होते है। मान लीजिये, मै पढा-लिखा हूँ और आप अपढ हैं। मै आपको अगर पढना-लिखना सिखाता हूँ, तो मेरी विद्या घटती नही है, बल्कि मजबूत और पक्की बनती है। यह मनुष्य-जीवन की खूबी है। इसमें हम जितनी दूसरे को मदद देते हैं, उतनी हमें मदद मिलती है। बाप बेटे की खूब मदद करता है, उससे लेता कुछ नही है तो

भी उनको लाभ होता है। इसे बाप जानता है, इसलिए बेटे की मदद करता है। इस तरह अपने पडोसी की मदद करते हैं, तो खोते नही, पाते ही है।

दौलत क्यों चाहिये ?

मनुष्य के जन्म मे पाने की चीज पैसा नही है। मरने के बाद पैसा साथ में आनेवाला नही है। उसको यही छोडकर जाना होगा। यहाँ भी पैसा अपने पास रखो तो बेटे के साथ झगडा होगा, चोर को चोरी करने की प्रेरणा होगी, ताला लगाकर कुजी अपने पास रखनी होगी, रात में सोने के समय दरवाजा बद नही किया तो पास में लाठी रखकर सोना पडता है। लेकिन वह सोया हुआ है और चोर जागा हुआ है। लाठी किसके काम आयेगी ? इसलिए सपत्ति प्राप्त करने की चीज नही है। प्राप्त करने की चीज है प्रेम। जिसने प्रेम हासिल किया उसने बडी भारी दौलत हासिल की।

दौलत क्यो चाहिए ? बच्चो की अच्छी पढाई के लिए सिखानेवाले के लिए पैसा चाहिए। परन्तु आप दूसरे की मदद करते जायेंगे तो सिखानेवाला भी मुफ्त मे सिखायेगा। आज तो डॉक्टर बिना विजिट दिये बीमार को देखने भी नही आता, क्योंकि उसने किसी की मदद नही की। बाबा बीमार पडता है, तो डॉक्टर उसे देखने के लिए आते है। बाबा उनको कुछ पैसा नही देता, बल्कि वे तो परमेश्वर का उपकार मानते हैं कि बाबा की सेवा करने का उनको मौका मिला। ऐसा ही गाँव का होना चाहिए। गाँव की फसल का एक हिस्सा वैद्य को दे दिया। वह प्रेम से बिना कोई फीस गाँव के बीमारो की सेवा करेगा।

यह कोई नयी योजना नही है। पहले ऐसी ही योजना थी। गाँव के बढई, चमार, कुम्हार, लुहार आदि सब कारीगरो को, गुरुजी को, वैद्य को फसल का एक हिस्सा दिया जाता था और वे गाँव को अपनी मुफ्त सेवा देते थे। जिस किसी घर मे काम हो, बढई कर देता था। किसी घर ने साल भर में कुछ काम नहीं निकला तो भी उसको फसल का हिस्सा मिल जाता था। किसी घर में ज्यादा काम निकला, तो वह भी बढई कर देगा। इसी तरह सब कारीगर करेंगे। गाँव के सुख मे सबका सुख और गाँव के दुख में सबका

दुख। किसी साल फसल कम आई, तो सबके हिस्से में कम आयेगी। किसी साल फसल अच्छी आई, तो सबको ज्यादा मिलेगा। किसान के सुख से सब सुखी, उसके दुख से सब दुखी। सुख-दुख बाँटना, यही मनुष्य का जीवन है, क्योकि यह जीवन प्रेम से भरा है। प्रेम ही मानव-जीवन है। उन चालीस गाँवो में प्रेममय जीवन बिताने का प्रयत्न किया जायेगा।

शादी के लिये व्यक्तिगत कर्ज नही लेना पडेगा। शादी सार्वजनिक उत्सव मानी जायगी। शादी का खर्च सारा गाँव उठा लेगा। इसलिए शादी में कर्ज की जरूरत नही पडेगी। कर्ज भी ग्रामदान के गाँव में न कोई लेगा, न उसको मिलेगा। पहले का जो कर्ज होगा वह सारे गाँव का माना जायेगा। सब एक हो जायेंगे तो साहूकार के पजे से मुक्त हो जायेंगे।

फन्दे से मुक्त

गाँव की एक दूकान बनेगी। जिसमें हर घर का या तो रुपये का या तो श्रम का हिस्सा रहेगा। सारी खरीद-बिक्री वह दूकान ही करेगी। फिर बाहर का व्यापारी किसी व्यक्ति को ठग नही सकेगा, फिर साल भर में हिसाब निकलेगा कि गाँव को इतना तेल चाहिए, उतना तेल बाहर से खरीदा गया तो वह गाँव में ही क्यों न बनाया जाय? जितना तेल साल भर में चाहिए उस हिसाब से गाँव में तेल बनाया जायगा। तो गाँव मे एक धधा खडा होगा। इसी तरह कपडे, गुड, जूते आदि विषय में भी पराधीन नही रहेगे। कच्चे माल को पक्का माल बनाने की योजना गाँव में ही होनी चाहिए।

सब प्रेम से रहेंगे तो झगडे कम होगे, वकीलो के फदे से मुक्त होगे। फिर सारे गाँववाले मिलकर इतजाम करेंगे कि रात में बैल एक-दूसरे के खेत मे न चले जायँ। इस वास्ते सबको जगने की जरूरत नही होगी। पारी के मुताबिक हर व्यक्ति को नियुक्त किया जायगा। सब अपनी-अपनी बारी के मुताबिक जगेंगे और बाकी लोग आराम से सो सकेंगे।

अभेद में सच्ची भक्ति

यह सब आप लोगो को भी सोचना चाहिए। ग्रामदान के गाँव में सबसे

वडी वात तो यह होगी कि सव मिलकर रात को भगवान् का भजन करेगे, वे सच्चे भक्त वनेगे, क्योकि उन्होने ऊँच-नीच भेद रखा ही नही। "जाति कुलम् पावप्पुमै शुकहलीके इलह् वेंडुम्।" जाति, धर्म, कुल आदि के पजे से छूटना चाहिए, ऐसा माणिक्यवाचकर ने कहा है। ग्रामदान के गाँव मे कोई ऊँचा कोई नीचा, ऐसा भेद रहेगा ही नही। जव तक ये भेद नही मिटते, तव तक सच्ची भक्ति नही होगी। ये सारे भेद मिट जायेगे, तो सारे भक्त प्रेम से रात को भगवद् भजन करेंगे और फिर सिर्फ विछौने पर नही, ईश्वर की गोद मे सो जायेंगे।

मालकियत अधर्म है

हम चाहते हैं कि आप इस भक्ति-मार्ग को समझ लें, तो आपका गाँव सुखी होगा। जव चालीस गाँव ग्रामदान हो गये, तो वाकी क्यो नही हो सकते। सव ग्रामदानवाले भाई निकलेंगे और समझायेंगे कि हमने तो ग्रामदान का मीठा गुड खाया है, तुम भी खाओ, भैया! इस तरह वे समझायेंगे तो खूव हवा फैलेगी और यह मालकियत रूपी राक्षस खतम हो जायेगा। यह भयानक राक्षस है। पुराने जमाने मे रावणादि राक्षसो के नाम लिये जाते है, लेकिन यह राक्षस तो उनसे भी ज्यादा क्रूर है। परन्तु आप लोग समझते ही नही कि यह राक्षस है। कहते हैं कि हम मालिक है, क्योकि हमारे पास पट्टा के कागज है। भगवान् ने क्या तुमको यह कागज दिया था? तो जवाव देते हैं कि सरकार ने दिया। सरकार को क्या अधिकार है इस तरह का पट्टा देने का? क्या जमीन सरकार के वाप की है? जमीन तो परमेश्वर की है। हा, अगर भगवान् ने पट्टा लिखकर दिया हो, तो वताओ। जमीन तो भगवान् की कृति है। उसके हम मालिक कैसे वने? यह गलत विचार है, भक्ति मिट गयी है। वास्तव में मालिक वह है। हम अगर परमेश्वर की जगह लेकर मालिक वन जायेंगे, तो वह वात भक्ति के विरुद्ध होगी, वह अधर्म होगा। जहाँ धर्म और भक्ति नही रहेंगे, वहाँ सुख भी नहीं रहेगा। फिर वहाँ तरह-तरह के झगडे, पाप, व्यभिचार, चोरी, मारामारी, गालियाँ, मत्सर आदि

सवका सव ग्रामदान से खतम हो जायेगा। आप सव लोग भी सोचें और आप भी ग्रामदान करें और भगवान् के भक्त वनें।

रा)

में धर्म, अर्थ और विज्ञान का विचार : २५ :

मध्यम ग्राम की विशेषता

। गाँव ऐसा है, जो न वहुत वडा है, न वहुत छोटा। ग्रामराज्य ए इसे वहुत ही अनुकूल माना जाना चाहिए। छोटे गाँवो में जमीन यत तो मिट ही सकती है। परन्तु ग्रामराज्य के लिए जितने काम , वे कुल के कुल काम, एक छोटे से गाँव में होना, कुछ कठिन हो वहुत वडे गाँव में परस्पर सपर्क वनाना, जमीन की मालकियत व का एक परिवार बनाना कठिन हो जाता है। परन्तु यह गाँव नही कि यहाँ के लोग एक दूसरे को न जानें, और इतना छोटा नही म एक गाँव में न हो सके। यह मध्यस्थितिवाला गाँव है। कभी- ोता है कि ये मध्यस्थितिवाले गाँव बहुत ही खराव होते हैं। वडे ो वुद्धि होती है, वैसी बुद्धि भी यहाँ नही होती और छोटे गाँवो में ती है, उसकी भी यहाँ कमी होती है। इधर की वुद्धि और उधर ानो न होने के कारण ये ग्राम विलकुल ही कार्यहीन वन जाते है। ाच के गाँवो में वुद्धि और श्रद्धा, दोनो का जोड हो, तो ये गाँव वहुत विलकुल छोटे गाँवो के लोग इकट्ठा काम करने के लिए तो राजी लेकिन वे हिसाव-किताव नही जानते। वडे शहरो के लोग हिसाव जानते है, समाजवाद, साम्यवाद इत्यादि "वाद" भी वकते है, -जलकर काम करना नही चाहते, अपना-अपना स्वार्थ ही देखना वे हिसाव तो जानते है, परन्तु उसका उपयोग केवल स्वार्थ के लिए आपका गाँव वीच का गाँव है। अत छोटे गाँव के मुआफिक मिल- म करने के लिए तैयार हो जायें, हिसाव भी अच्छी तरह जानते हो,

तो आपके गाँव मे किसी प्रकार की कोई कमी नही रहेगी। आपके गाँव में छोटे और बड़े गाँवो के गुण इकट्ठा हुए है, या दोष, मै नही जानता। परन्तु आप लोग ग्रामदान का भी विचार करते है, इसलिए हम समझते हैं कि आपके हृदय मे गुण है।

ग्रामदान एक अत्यन्त परिशुद्ध धर्म-विचार है। हम यह भी कहना चाहते है कि ग्रामदान एक अत्यन्त आधुनिक अर्थ-शास्त्रीय विचार है, और एक अत्यन्त परिशुद्ध वैज्ञानिक विचार है। याने इसमें धर्म-विचार, अर्थ-विचार और विज्ञान-विचार, तीनो इकट्ठा हुए हैं। तीनो विचारो की कसौटी पर ग्रामदान का विचार अच्छी तरह से खरा उतरता है।

धर्म-विचार

धर्म कहता है कि किसी एक को भी दुःख है, तो उसके दुःख में सबको हिस्सा लेना चाहिए। गाव में किसी एक को भी फाका करना पड़ता है, तो सब लोग फाका करें याने किसी को फाका करने न दे, खुद कम खाकर उसे खिलाये। आप जानते है कि चावल के ढेर से एक सेर चावल निकाल लिया जाय, तो वहाँ पर एक सेर के आकार का गढा पड जाता है, लेकिन आप कुँए मे से एक बालटी पानी निकाल लेते हैं, तो वहाँ बाल्टी के आकार का गढा नही पड़ता है, बिलकुल जैसे पहले समतल था, उसी तरह समतल हो जाता है, सिर्फ स्तर थोडा नीचे गिर जाता है। दोनो में यह फर्क इसलिए पडा कि पानी के बिन्दुओ में परस्पर इतना प्रेम है कि वे एकदम मदद के लिए दौडे आते है। आपने कुएँ से बाल्टी भर पानी निकाला और उसमे गढा पडने की तैयारी हुई, कि बाकी सारे बिन्दु उस गढे को भरने के लिए दौड़ जाते है। धर्म कहता है कि समाज में पानी के बिंदुओ के समान प्रेम होना चाहिए। ज्वार के ढेर मे गढा पडता है, क्योकि ज्वार के दाने अपने को अलग-अलग मानते है। और गढा भर देने मे मदद नही करते है। लेकिन उसमें भी कुछ थोडे महात्मा दाने होते है, जो गढा भर देने के लिए अन्दर कूद पड़ते है। लेकिन वे थोडे होते है। बाकी दानो को कोई पर्वाह नही होती कि अपने ढेर में गढा पड रहा है। वे बैठे ही रहते हैं, इसलिए गढ़ा कायम रहता है। जिस समाज के लोग

ज्वार के ढेर के समान है, उस समाज मे धर्म नही है। जिस समाज की रचना में पानी का सद्भाव आ गया, वहाँ धर्म है। आपके गाँव मे पाँच घरो को खाना नही मिल रहा है, वहाँ गढा पड रहा है, और बाकी सब लोग उनकी मदद में चले जाते है, खुद कम खाकर उन्हें खिलाते है और गढा भरते है, इसका नाम है धर्म-विचार। इसी को "करुणा" कहते है, इसी को "प्रेम" कहते है। यही परमेश्वर का रूप है।

ग्रामदान के काम मे करुणा प्रत्यक्ष प्रकट होती है। ग्रामदान से पहला लाभ यह होगा कि हमें दूसरो के लिए फाँका करने का मौका मिलेगा। हम इसे बहुत बडा भाग्य समझते है। माता पर बच्चे के लिए फाँका करने की नौबत आना माता के लिए गौरव की बात है। माता खुद फाका करके बच्चो को खिलाती है, यही गृहस्थाश्रम का वैभव है। एक ऐसा जवान है, जिसकी शादी नही हुई है। वह अगर रास्ते में पेड पर आम देखेगा, तो तोड कर खा लेगा। लेकिन शादी होने के बाद वह आम तोडकर खायेगा नही, बच्चो को खिलाने के लिए घर ले जायेगा। गरीब मनुष्य शादी करता है तो क्या उससे उसकी आमदनी बढती है? शादी के पहले उसके घर में जो दूध था, उसे वह खुद पी लेता था, परन्तु शादी के बाद वह बच्चो के लिए दूध रखता है, खुद नही पीता। अगर उससे पूछा जाय कि तुझे दूध क्यो नही मिलता, तो वह कहेगा कि "घर में एक ही गाय है, उसका दूध बच्चो के लिए ही पर्याप्त है। ज्यादा नही है।" अगर उससे पूछा जाय कि तू क्यो नही पीता, तो वह कहेगा कि पहले बच्चो का हक है। इस तरह से त्याग की कल्पना आई। इसी लिए गृहस्थाश्रम को "धर्म" माना गया है। जिसकी शादी नही हुई, उस मनुष्य को कोई भी अच्छी चीज देखकर खाने की इच्छा होती है। लेकिन शादीशुदा, बाल-बच्चेवाले मनुष्य को खाने की इच्छा नही होती, बल्कि वह चीज घर लाने की इच्छा होती है। अगर कोई उससे पूछेगा कि "शादी करने से तुम्हारी उपज कितनी बढी और क्या अब तुम्हें खाना-पीना अच्छा मिलता है? तो १०० में से ९९ का उत्तर यही होगा कि शादी करने के बाद हमें उतना अच्छा खाना-पीना नही मिलता। परन्तु उसमें उन्हें आनन्द महसूस होता है, त्याग करने का मौका मिलता है। हममे भी लोग पूछते है कि

क्या ग्रामदान के बाद गाँव की उपज बढ़ेगी ? आज जितना अच्छा खाना मिलता है, उससे ज्यादा अच्छा मिलेगा ? हम कहते है कि ऐसा कोई वचन हम नही देते है। हम इतना ही वचन देते है कि "ग्रामदान के बाद, आपके गाँव मे जो दु खी लोग है, उनके दु ख मे हिस्सा लेने का मौका मिलेगा। यह है ग्रामदान का धर्म-विचार।

अर्थ-विचार

अब ग्रामदान के अर्थ-विचार के बारे मे आज गाँव मे जमीन के छोटे-छोटे टुकडे है। कुछ लोगो के पास बहुत ज्यादा जमीन है, कुछ लोगो के पास कम है, कुछ लोगो के पास कुछ भी नही है। किसी खेत मे कुछ टीले और कुछ गढे हो तो क्या वहाँ अच्छी फसल होगी ? टीलो पर सारा पानी बह जाने के कारण फसल नही होगी और गढो मे पानी पडा रहने के कारण अच्छी फसल नही होगी। अगर टीलो की मिट्टी काटकर गढो में डाली जाय और खेत समतल बनाया जाय, तो अच्छी फसल होगी, इस बात को सब किसान जानते है। आज समाज मे सम्पत्ति के टीले है और कुछ बिलकुल भूखे दरिद्री गढ़े है। ऐसे समाज मे अच्छा अर्थोत्पादन नही हो सकता। जिस समाज मे ऐसे ऊँचे टीले और गढे नही होगे, सबकी सम्पत्ति इकट्ठा होकर समानता आयी होगी, सहयोग आया होगा, उसी समाज में अर्थोत्पत्ति बढेगी। समाज का अर्थ यह नही कि बिलकुल ही समान, जैसे हाथ की अँगुलियो को काटकर समान बनाया हो। समाज मे पांच अँगुलियो के जैसी समानता रहनी चाहिए। अँगुलियो में कुछ छोटी-बडी जरूर होती है, परन्तु उनमे एक अँगुली एक इच लम्बी तो दूसरी एक फुट, ऐसा नही होता। अगर ऐसा हो, तो हाथ से बालटी उठाना भी सम्भव नही होगा। अँगुलियो मे थोडी कम-बेसी है, फिर भी वे करीब-करीब समान है, हरएक मे अपनी अलग-अलग ताकत है और सब मिल-जुलकर काम करती है। इसलिए उनसे हजारो काम बनते है। पाँचो अँगुलियो को इकट्ठा होना पडता है, तब काम होते है। इस तरह से कुछ काम तभी बनते है, जब सब इकट्ठे होते है, सब सावधान रहते है, सब सहयोग करते है । यह है अर्थ-विचार।

यहां पर जो सारे लोग बैठे है, वे बाहर का कपडा खरीदते है, गाँव के बुनकर का कपडा नही खरीदते। बुनकर अपना कपडा लेकर बाहर बेचने जाता है और न बिका तो सरकार के सामने रोता है। अगर बुनकर और किसान इकट्ठे होगे और निश्चय करेंगे कि किसान जो सूत कातेंगे, वही बुनकर बुनेंगे और बुनकर जो बुनेंगे, वही कपडा किसान पहनेंगे, तो दोनो जियेंगे। आज गाँव में बुनकर है और तेली है। लेकिन गाँव का बुनकर अपने ही गाँव के तेली का तेल यह कहकर खरीदता नही कि वह महँगा है, और शहर के मिल का तेल खरीदता है। गाँव का तेली गाँव के बुनकर का कपडा महँगा कहकर खरीदता नही, और शहर के मिल का कपडा खरीदता है। दोनो एक ही गाँव में रहते है, परन्तु न तेली का धधा चल रहा है, न बुनकर का, क्योकि दोनो एक-दूसरे की मदद नही करते हैं। मान लीजिये, बुनकर ने तेली का तेल खरीदा, वह थोडा महँगा था। इसलिए बुनकर की जेब से तेली के घर दो पैसे ज्यादा गय। फिर तेली ने बुनकर का कपडा खरीदा, वह थोडा महँगा था। इसलिए तेली की जेब से दो पैसे बुनकर के घर गये, तो क्या फर्क पडा? इसके घर से उसके घर में पैसे गये और उसके घर से इसके घर में गये। मौके पर दोनो को मदद मिली, तो क्या नुकसान हुआ?

तुम्हारे घर की लडकी दूसरे के घर गयी और दूसरे के घर की लडकी तुम्हारे घर आयी, तो क्या नुकसान हुआ? उसमें दोनो का भला हुआ और व्यवहार चला। मेरी इस जेब से पैसा उस जेब में गया और उस जेब से इस जेब में आया, तो मेरा क्या नुकसान हुआ? क्योकि दोनो जेबें मेरी ही हैं। एक ही गाँव में बुनकर है, किसान है, चमार है, तेली है। लेकिन तेली के तेल के लिए गाँव में ग्राहक नही है, बुनकर के कपडे के लिए और चमार के जूतो के लिए ग्राहक नही हैं, यह क्या बात है? गाँव में इतने सारे लोग पडे है, वे क्यो नही ग्राहक बनते? इसका कारण यह है कि 'यह मेरा गाँव है' ऐसा कोई सोचता ही नही। अगर एक गाँव में रहकर भी "यह मेरा घर है" इतना ही सोचेंगे, तो गाँव का काम नही बनेगा। गाँव के किसी एक घर में चेचक हो, तो सारे गाँव में उसकी छूत लगती है। क्या उसे रोक सकते है? गाँव

में एक घर में आग लगे, तो पडोसी के घर को भी लगती है। क्या उसे रोक सकते हैं ? इसलिए कुल गाँव मिलकर एक परिवार है, ऐसा समझो, तब काम बनेगा। अगर हम चाहते हैं कि यह जगह साफ रहे और यहाँ के दो घरवाले उसे साफ रखे, परन्तु दूसरे दो घरवाले यहाँ पर अपने लडको को पैखाने के लिए बैठाते हैं, तो क्या यह जगह साफ रहेगी ? यह जगह तो तब साफ रहेगी, जब चारो घरवाले मिलकर निश्चय करेंगे कि हम उसे साफ रखेंगे। इसलिए गाँव का काम, गाँव की उन्नति और साथ-साथ घर की भी उन्नति तो तब होगी जब गाँववाले सारे गाँव को अपना एक परिवार मानेंगे। ग्रामदान से यह कार्य होगा, यह इसका अर्थ-शास्त्रीय विचार है।

विज्ञान-विचार

यह विज्ञान का जमाना है। इस जमाने मे हम मिलजुल कर काम नही करते, अलग-अलग करते हैं, तो टिक नही सकते। इस जमाने मे कोई भी देश दूसरे देश की मदद के बिना टिक नही सकता। कोई भी प्रदेश दूसरे प्रदेश की मदद के बिना टिक नही सकता। कोई भी ग्राम, दूसरे ग्राम की मदद के बिना टिक नही सकता। कोई भी घर दूसरे घर की मदद के बिना टिक नही सकता। बाबा ने चश्मा पहना है, अगर वह चश्मा नही होता तो बाबा यात्रा ही नही कर सकता, क्योकि वह अधा हो जाता। लेकिन यह चश्मा बाबा ने नही बनाया है, अभी हम जिस लाउड स्पीकर का उपयोग करते हैं, वह गाँववालो ने नही बनाया है, दूसरो ने बनाया है। इस तरह हम अपने जीवन में ऐसी पचासो चीजे देखेंगे, जो दूसरो ने बनायी हैं। इन विज्ञान के जमाने मे हम टुकडे-टुकडे नही कर सकते हैं। यहाँ के कुछ लोग सोचते है कि हमारा यह तमिल-नाड है, हम अपना अलग देश बनायेंगे। अभी श्रीलका से तो अलग पड ही गये हैं, भारत से भी अलग पड़ेगे और अपना स्वतन्त्र जीवन बितायेंगे, तो बिलकुल ही शुष्क हो जायेंगे। आप लोग उधर गोदावरी नदी के पानी की माँग कर रहे हैं, उसके बिना आपका चलेगा नही। आपको सोचना चाहिए कि विज्ञान के जमाने मे हम छोटे-छोटे फिरके बनायेंगे, तो नही टिकेंगे।

इसलिए राष्ट्रो का सहयोग करना होगा, प्रान्तो का, ग्रामो का सहयोग करना होगा, तभी लोग टिक सकते है। यह विज्ञान का विचार है, जो ग्रामदान के पीछे है।

काडुविलारप (मदुरा)
१८-१२-'५६

ग्रामदान + ग्रामसंकल्प = ग्राम उदय : २६ :

समग्र विचार

यह परिषद् एक विशेष प्रकार की है। जिस विचार के लिए यह परिषद् बुलायी गयी है, यह विचार वैसे तो पुराना है। इसे हम समग्र-विचार कहते है। इसके बारे में बापू के रहते भी काफी चर्चा हुई थी और बापू ने उस पर जोर भी काफी दिया था। लेकिन कई कारणो से हम समग्रता नही ला सके। छोटे-छोटे कपडे के टुकडे सीकर वह थान नही बनता जो बुनने से बनता है। समग्रता में वह सिलाई नही है, उसमें बुनाई है। उसमें भिन्न-भिन्न कार्य भिन्न-भिन्न प्रकार के ततु के समान है और सब मिलाकर एक सुदर वस्तु का निर्माण होता है। यह अतरग एकता की बात है, बहिरग सयोग की बात नही है। मिट्टी के कणो ने मिलकर के घडा बनाया तो घडा कणो के सयोग से बना है। वह सब मिलकर के एक रूप बना। वह यहाँ तक एकरूप हुआ कि उसके अदर जो मिट्टी है, उसका रूप भी बदल गया। ग्रामोद्योग, खादी, हरिजनसेवा, स्त्री-उन्नति, नयी तालीम इत्यादि विविध कार्य अलग-अलग रूप से शुरू हुए थे। उसमें बाबा ने अब भूदान और जोड दिया। लोग यह कबूल करते है कि यह कोई बाहरी चीज नही है। यह रचनात्मक काम का एक अग है, इसी तरह वे उसका स्वागत करते है। लेकिन जिसका स्वागत हुआ और जिसको भिन्न-भिन्न दूसरे कार्यो के साथ जोडने का तय हुआ, फिर भी उसमें समग्रता नही आयी। यहाँ जो जमात इकट्ठी हुई है, जहाँ तक मै समझता हूँ, वह समग्रता कैसे पैदा हो, इसका चितन करने के लिए इकट्ठी हुई है। हम जानते है कि सब कबूल करते है कि रचनात्मक काम करनेवाले सब मिलकर जितनी

ताकत रखते हैं, शायद ही दूसरी कोई मडली इतनी ताकत रखती है। राजनैतिक सस्थाये कई होती हैं और उनके पास सख्या में बहुत ज्यादा कार्यकर्ता होते हैं, परतु अपना कुल समय उसी काम मे लगानेवाली बडी जमात रचनात्मक काम करनेवालो मे है, उतनी बडी जमात राजनैतिक सस्था के पास भी नही है। और भी किसी मडली में नही है। लेकिन आज तक अलग-अलग चिंतन मिटा नही है। आज हम लोगो मे कोई खादी के एक्सपर्ट होते हैं, कोई ग्रामोद्योगी विज्ञ हैं, कोई कहता है कि छूआछूत भेद मिटना चाहिए, यही मुख्य समस्या है, कई लोग बाबा को पत्र लिखते हैं कि बाबा, किस भ्रम मे हो? गाय का प्रश्न आप हाथ मे क्यो नही उठाते? अभी कांचीपुरम् सम्मेलन मे एक भाई ने हमसे कहा कि कितने दिन सम्मेलन चला, लेकिन गाय का नाम ही नही निकला। तब बाबा ने जवाब दिया कि बच्चा माँ का नाम नही लिया करता, वह उसका काम ही किया करता है। बाबा रोज गाय का दूध और दही खाता है, इसलिए गाय को वह भूल नही सकता। भूदान के आधार पर गाय की रक्षा हो सकेगी। खैर, तो एक यह विनोद हो गया। परतु हमको यही सोचना है कि सारे गावो का उदय, जिसे हम ग्रामोदय कहते हैं, कैसे हो। उसमे सारी अलग-अलग चीजे आयेंगी, लेकिन वह एक स्वतत्र कला होगी। दो चार-पाँच टुकडे इकट्ठा करके वह चीज नही होगी, वह जीवन को बनाने की, विचार बदलने की, और हृदय-परिवर्तन की बात है।

गरजनेवाले बरसते नहीं

गाधीजी बहुत दफा हृदयपरिवर्तन शब्द का इस्तेमाल करते थे। अक्सर भिन्न-भिन्न विचार के लोग इसका मखौल करते हैं, गाधीजी के अनुयायी यह समझते हैं कि हमको दूसरे का हृदय-परिवर्तन कराना है। इसमे अधिक गलत विचार हो नही सकता। हम दूसरे का हृदय परिवर्तन कहाँ तक करा सकेंगे, यही चर्चा दोनो पक्षो मे चलती है। एक कहता है कि यह जरूर हो सकेगा, दूसरा कहता है कि उसकी मर्यादा है, उससे ज्यादा नही होगा,। लेकिन दोनो पक्ष उसका असली अर्थ भूल जाते हैं, उसका असली अर्थ यही है कि हृदय परिवर्तन हमारा निज का ही बाकी है। हमको यह लगता है कि हृदय-परिवर्तन

ने हमेशा सामने वाले का, दुश्मन का, दुर्जन का हृदय-परिवर्तन। लेकिन
ह दुश्मन और दुर्जन, यही हमारे हृदय में ही बैठा है, यह छिपा हुआ है। और
भी-कभी प्रकट होता है, परतु हम उसकी ओर ध्यान नही देते है, उसका
रिणाम यह हुआ कि एक जमाने में खादी जो आदर की भाजन थी, वह
च में तिरस्कार-भाजन तक हो गयी। छाती के ऊपर तो खादी आ गयी,
किन वह अदर नही गयी। सिर के ऊपर खादी आ गयी, लेकिन सिर के अदर
ही गयी है। वह चीज़ क्या है, यह हमको देखना चाहिए। इन दिनो थोड़ा
ढ़र का बोलवाला चल रहा है। कुछ आवाज आ रही है, कुछ नगाड़ा बज
हा है। यह डंका इसलिए बजता है कि वह पोला है। इसीलिए उसमे
वाज आ रही है। हवा अदर भरी है परतु वह ठोस चीज़ की आवाज नही
वह पोल की आवाज है। सगीत-शास्त्र में यह भेद है। सितार बजता है
वह पोली आवाज नही है, ठोस आवाज है, वह स्वच्छ-निर्मल शब्द माना
ाता है। यह जो हार्मोनियम बजता है, यह शुद्ध शब्द नही है। आजकल
ितार क्षीण हो रहा है, हारमोनियम बढ रहा है। आजकल वीणा नही
लती है और बाजा चलता है। वीणा का जो शब्द होता है वह पोल नही होता,
स और बड़ा सूक्ष्म होता है। यह जो पोल बाजा है उसमें से जोरो से आवाज
ाती है, परतु उसके अदर जान नही होती है। इन दिनो खादी की
ावाज आ रही है, क्योकि उस खादी में हवा भर गयी है। और यह हवा है
ादी को सरकार का उत्तेजन। सरकार उत्तेजन देती है, तो क्या वह कुछ
लत काम करती है? सरकार कोई गलत काम नही करती यद्यपि वह ऐसा
ाम नही कर रही, जैसा उसे करना चाहिए था। फिर भी उसकी जितनी
द्धा है, उसके मुताबिक वह ठीक चलती है। परतु हम उसमें बहे जा रहे
, तो समग्रता क्षीण होती है। समग्रता याने अदरवाली समग्रता तो दूर
ही, लेकिन यह जोडनेवाली सिलाई की समग्रता भी नही बन रही। उधर
म्युनिटी प्रोजेक्ट चलता है, इधर खादी-बोर्ड चलता है, तो कही वीविंग-
डिपार्टमेंट भी चलता है। इन सबका अलग-अलग चिंतन होता है, बहुत
ा, तो इन दोनो-तीनो के सहयोग की योजना बनाते हैं। अबर चरखा लोगो
ो दिया जायगा, बहनो को मजदूरी मिलेगी, सरकार के जरिये सूत खरीदा

जायेगा। कही बुना जायेगा और कही बेचा जायगा, इसमे सरकार को कितना घाटा हुआ, इसका हिसाब हर साल तैयार किया जायगा। इस पर हर साल फिर-फिर से चिंतन चलेगा कि क्या इतना खर्च करना ठीक है ? तो कहेंगे कि हा भाई, यह बेकारी का भूत-असुर इतनी मॉग कर रहा है, इसलिए फिलहाल मदद दे दो। कभी कहेंगे "क्यो भाई, इस साल आप लोग कम मदद लेंगे ?" अगर लेंगे, तो ये कहेंगे, "हा, जरा कम करिये।" अभी यह सारा चल रहा है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि आवाज बडी चल रही है, लेकिन उसमे जान नही है, क्योकि उसमें जीवन-परिवर्तन की बात नही है।

खादी सादगी की निशानी

आजकल कई लोग खादी का इतना बखान करते है कि हम तो घबडा जाते है। वे कहते है कि आजकल खद्दर इतना सुदर बनने लगा कि वह खद्दर का कपडा है या मिल का कपडा, यह पहचान ही नही सकते। इतनी खादी मे प्रगति हो गयी है। एक जमाना था, जब मनुष्य को देखते ही पहचान होती थी कि वह खद्दरपोश है। लेकिन अब ऐसी पहचान नहीं हो सकती, ऐसी सुदर योजना हो गयी है। देव है या असुर यह पहचाना नही जाता। खद्दर तो सादे जीवन का प्रतीक है। खादी सादगी की निशानी है। अगर लोग शौकीनी करते हैं, और तरह-तरह का सुदर खद्दर पहनते हैं तो वे खद्दर को "पैट्रोनाइज" करते है। उससे खद्दर उत्पत्ति के लिए तो उत्तेजना मिलता है, लेकिन उस खद्दर मे जान नही है। हम बहुत दफा हिन्दुस्तान की पुरानी कला की प्रशसा सुनते है और पढते भी है। कहते है कि पहले ३०० नंबर से ४००–५०० नबर तक का सूत निकलता था, और उसका खद्दर बनता था, उस कला की हमने बहुत प्रशसा सुनी, लेकिन उसका कोई असर हमारे चित्त पर हुआ ही नही। उस खद्दर मे जान नही थी। अगर उसमें जान होती तो वह जाती ही नही। मिट्टी के बने हुए शरीर को इतना शृगार क्यो ? इस शरीर को इतना सजाना क्यो ? वह ३००–४०० नबर के सूत का खद्दर मुर्शिदाबाद के नवाब पहनते थे और उनके बनाने वाले को खूब पैसा मिलता था। अपनी जिन्दगी का क्षण-क्षण चिंतन करके मैं बारीक सूत निकालूं और वह मुर्शिदा-

वाद के नवाव की रानी पहने और उसमें मै अपने को सार्थक मानूं, क्योकि मुझे उससे पैसा मिलता है, तो वह पैसे का प्रेम था, खादी का नही। आप यह मत समझिये कि हम कोई कला का निपेध कर रहे है। ऐसा व्याख्यान अगर मै दिल्ली में देता तो मुझे डर लगता, लेकिन मुझे आप लोगो के सामने वोलने मे झिझक मालूम नही होती। मै आपको फिर से यही कहना चाहता हूँ कि हम कला का निपेध करना नही चाहते है।

क्रम के अनुसार परिणाम

एक दफा हम एक भाई के घर गये थे। वहाँ एक सुदर आयल-पेंटिंग था। वे बोले कि "यह कैसा सुदर है"। मैने कहा कि सुदर तो है, लेकिन कृत्रिम मालूम होता है। तो उन्होने पूछा कि "स्वाभाविक सुदरता क्या होती है?" मैंने उनसे पूछा कि उस पेंटिंग पर क्या खर्च हुआ। उन्होने वताया "दो सौ रुपये"। मैने कहा आप रोज सुवह घूमने के लिए निकलिये। गाँव के वाहर हरिजन-वस्ती और गरीवो की वस्ती होती है, वहाँ १०-५ मिनिट उन लोगो से वाते करते रहिये, वहाँ आपको कई वच्चो के फीके गाल दीख पड़ेगे। रोज सुवह एक पाव दूध अपने साथ ले जाइये और उन वच्चो में से किसी एक वच्चे को वह पिलाइये। दो-तीन माह के वाद उस वच्चे के गाल का रग देखिये तो आपके इस आयल-पेंटिंग से ज्यादा सुदरता उसमे दिखेगी और वह सौंदर्य स्वाभाविक होगा। फिर भी हम कहना चाहते है कि हम आयल-पेंटिंग का निपेध नही करना चाहते, हर चीज का स्थान होता है, परतु हर चीज मे क्रम का महत्त्व होता है। विना क्रम के महत्व की चीज परिणाम ग्रहण नही कर सकती। हमने चूल्हा सुलगाया, उस पर एक वरतन रखा, वरतन में पानी डाला और उसके वाद उसमें चावल डाला, तो उससे सुन्दर चावल पक गया। याने यह एक परिणाम हुआ। लीजिये कि पहले हमने चूल्हा सुलगाया और उसके वाद उस पर पानी डाला, इसके वाद चावल डाला और फिर उस पर वरतन रखा, तो इस तरह चावल वनेगा? वही चार चीजें है, परतु क्रम में फरक पडा, तो परिणाम वदल गया। जव क्रम वदलता है, तव परिणाम वदलता है। "क्रमान्यत्व परिणामान्त्वे हेतु"

बच्चो के गाल पर अगर लाल रग आ गया है, तो उसके बाद हम पेंटिंग बना सकते है। लेकिन उसके पहले आयल-पेंटिंग बनाना हम बल्गेरिटी कहेंगे। आपके सामने मैं यह एक विचार रखता हूँ।

योजना में अन्तरात्मा का विचार

हमारे पास कम्यूनिटी प्रोजेक्ट वाले आये। उन्होंने कहा कि हम गाँव-गाँव को व्याप्त कर रहे हैं। गाँवों का एक्सटेन्शन चलेगा और आखिर में हम हिन्दुस्तान के कुल गाँवो को "कवर" करेंगे। फिर उस कवर के नीचे जानदार प्राणी होगा कि लाश होगी। कवर तो लाश को भी डालते है और ठढ मे बचने के लिए जिन्दा मनुष्य भी कवर लेता है। इसीलिए इधर कुछ उत्पन्न हुआ और उससे पैसा बढा, तो पैसा बढने से देश की उन्नति होगी, ऐसा नही है। देश के अदर कुछ चरित्र और नीति बढने का इतजाम होना चाहिए। एक जगह गाँवो की सपत्ति बढ गयी तो सेवक शिकायत करने के लिए आये कि गाँव सपत्तिवान होने के बाद उसमे अब ऐसे झगडे होते है, जो पहले नही होते थे। मैंने उनसे पूछा कि क्यो, ऐसा क्या चमत्कार हुआ, तो कहने लगे कि पैसा बढा। लोगो की जेब मे ज्यादा पैसा डाल दिया तो लोगो की उन्नति हो गई, ऐसा नियम है क्या ? अमेरिका में पैसा कम है क्या ? हमारे सामने अमेरिका का आदर्श खडा ही है। उसके मुताबिक चलेंगे, तो क्या हम सुखी होगे ? क्या अमेरिका सुखी हुआ है ? इसलिए योजना मे थोडा अन्तरात्मा का भी विचार होना चाहिए। लोग कुछ अदर की चीज जानते हैं, तभी उससे देश को लाभ होगा। ऊपर से ऐसी योजना बनायेंगे कि हिन्दुस्तान के कुल हिस्से श्रीमान् बन जायेंगे तो भी उसके हृदय मे कोई फरक नही पडेगा। भूदान के सिलसिले मे हमारा कई दफा कम्यूनिटी प्रोजेक्ट के कार्य-क्षेत्र मे जाना हुआ है। हमने वहाँ देखा कि वहाँ भूदान पहुँचा ही नही है। बल्कि यहाँ तक कि जो कम्यूनिटी प्रोजेक्ट का काम करनेवाले है, उन्होने कहा कि हम इस मसले को हाथ मे लेने से डरते है। मैं ऊपर के काम करनेवाले लोगो की बात नहीं करनेवाला हूँ। कम्यूनिटी प्रोजेक्ट के लोकल काम करनेवाले की बात कर रहा हूँ। उन्होने

कहा कि हमारी सारी योजना गाँव के बडे-बडे लोगो के सहयोग से चलती है। इसीलिए वे नाराज न हो, ऐसे ढग से काम करना होता है। यह मैं दो साल पहले की बात कर रहा हूँ, अब फरक पडा है। अब कम्यूनिटी प्रोजेक्टवाले, खास करके मद्रास स्टेट में, भूदान के काम मे दिलचस्पी लेते है, यह मै जानता हूँ।

सारे गाँव की इकाई ग्रामोदय की बुनियाद

अभी हमने काचीपुरम् में बात कही थी कि हमको अब भूदान के साथ-साथ ग्रामोद्योग, नयी तालीम, खद्दर जोडना होगा और सब जातियाँ मिलाकर उसका काम करना होगा। तब कुछ लोगो ने कहा कि यह "गुमराह" आखिर रास्ते पर आया। हमने उनको किसान की एक कहानी सुनायी। एक किसान खूब खेती में लगा था। वह खेती के सिवा दूसरा कुछ नही करता था। लेकिन एक दफा तीन साल तक वहाँ बारिश ही नही हुई। इसीलिए खेती में नुकसान हुआ तो फिर उसने कुआँ बनाने का कार्यक्रम शुरू किया। यह देखकर उसका मित्र पूछने लगा कि "अरे, तूने खेती का काम छोड दिया?" किसान क्या जवाब देता है? वह यही कहता है कि खेती करते-करते खेती मिट रही थी, इसीलिए कुआँ खोदता हूँ। कुआँ खोदूंगा, तो पानी आयेगा और पानी से फिर खेती होगी। सब लोग भूल जाते है कि बाबा, तीस साल तक खद्दर का ही काम करता था। वे भूल जाते है तो क्षम्य भी है, क्योंकि सब लोग जानते नही है कि बाबा ने कितना खद्दर का काम किया है। अगर वे लोग यह याद करते तो उनको आश्चर्य नही होता कि बाबा ने भूदान क्यो शुरू किया। हमने कितने ही गाँवो में ५-५, १०-१० साल तक सतत काम किया, इसका इतिहास सर्व सेवा सघ और चरखा सघ वालो को अच्छी तरह मालूम है। एक हजार की जनसख्या के गाँव में ८-१० साल का सतत परिश्रम किया तो भी हजार की जनसख्या में से डेढ सौ ही खद्दर पहनने लगे। फिर वह कार्यकर्ता किसी कारण से आन्दोलन मे जेल गया तो १५० से ५० खद्दरवाले हो गये। जेल से वापिस आकर वह कुछ जोर लगाता है तो ५० के ७० हुए, लेकिन गाँव के हजार लोग खद्दर पहनें, यह नही हुआ। ऐसे लाखो गाँव हैं जो अपना अनाज खुद पैदा करते

हैं, परतु खादी के आन्दोलन के बावजूद ऐसे ५० गाँव भी नही दिखायी देते है कि जो कुल के कुल खद्दरपोश हो। याने खद्दर को जीवन का एक अग मानकर जिन्होंने शुरू किया, ऐसा गाँव आपको मुश्किल से मिलेगा। यह इसीलिए होता है कि यह सारा गांव मिलकर कोई एक चीज़ है, ऐसी भावना ही नही हुई। हरएक मनुष्य अलग-अलग है, हरएक की मालकियत अलग है, उस मालकियत को सरकार की तरफ से रिकग्निशन भी है। वह सब टाँचा कायम रहता है, और सरकार भी ऐसा कानून नही बनाती कि गाँव मे खद्दर होना ही चाहिए। फिर गाँवो मे खुलेआम मिल का कपडा आता है और सस्ता भी होता है, आकर्षक भी होता है। इसलिए खद्दर पहननेवाले माता-पिता अपने बच्चो को मिल का कपडा पहनायेंगे। वे कहेंगे कि हम तो ठीक है, उसको हमने वैराग्य मान लिया, लेकिन बच्चो को एकदम से वैरागी नही बनाना चाहिए। उनको जरा सुदर-सुदर कपडे पहनाना चाहिए। इससे तो फिर वे स्वय मिल का कपडा छोड खादी पहनें, तो अच्छा रहेगा। याने वे खद्दर को सुदर नही समझते है। इस प्रकार के लोग, किसी गाँव मे जोर लगाया जाय, तो ४०–५० निकल सकते है। परतु समझने की बात यह है कि जब तक सारे गाँव को एक यूनिट समझकर सोचने के लिए गांववाले तैयार नही होते है, तब तक ग्रामोदय नही होगा। ग्रामोदय की बुनियादी चीज़ हाथ में लेनी चाहिए और उस पर ही सारी योजना होनी चाहिये।

"सिलाई" नहीं, "बुनाई"

४-५ साल पहले जब ग्रामोदय का काम शुरू हुआ तभी उसकी ओर हमारा तीव्र ध्यान था। इसीलिए भूदान के सिलसिले मे जब हम तमिलनाड में आए, तभी से हमने निश्चय किया कि ग्रामोदय कार्यक्रम को परिपूर्ण बनाने मे अपनी ताकत जितनी लग सकती है, उतनी लगानी चाहिए। जमीन के बँटवारे के बिना ग्रामोदय नहीं हो सकता। जमीन के बँटवारे के बावजूद भी अगर यहां खद्दर, नयी तालीम इत्यादि नही चली तो उसकी पूर्ति नहीं हो सकती। इसीलिए ये दोनो मिल करके एक पूरी चीज बनती है। हम आपसे फिर कहना चाहते हैं कि हमको भूदान और ग्रामोदय कार्य की सिलाई नही करनी है, हमको

उसकी बुनाई करनी है। यह मैं इसलिए कहता हूँ, क्योंकि यहाँ दो पथ निकले है। एक पथ निकला है कि ग्राम-सकल्प पर जोर देना चाहिए और दूसरा पथ कहता है कि ग्राम-दान पर जोर देना चाहिए। तमिलनाड में ऐसे दो पथ बन गये है। "पेरुमान" और "पेरुमाल" (शकर और विष्णु) में थोडा ही फरक है। लेकिन वे अलग-अलग हो गए, इसीलिए एक भक्त की उपासना इधर चलती है, तो दूसरे की उपासना उधर चलती है। कल सुबह एक भाई ने भजन गाया, उसमें हमको वडा मजा आया। उन्होने माणिकवाच्यकर (तमिलनाड के एक सत) का भजन गाया। उन्होने अन्त मे जहाँ विष्णु चाहिए वहाँ शिव का नाम लिया। हमको यह सुन कर बडी खुशी हुई थी। यह शिव भगवान् और विष्णु भगवान् का झगडा मिटना ही चाहिए। पुराने जमाने में तमिलनाड मे यह शिव-विष्णु का झगडा चला। अव अगर यहाँ "ग्रामदान" और "ग्रामसकल्प" का झगडा चले, तो मुश्किल हो जायेगी। भाइयो, हम कहना चाहते है कि ये दोनो मिल करके, एक चीज है, जिसे पहचानना चाहिए।

गाधीनगर-तिरुपुर
१७-१०-'५६

ग्रामदान का स्वतन्त्र मूल्य : २७ :

अभी आपने भजन सुना "आतमा रे आतमा कुँ देख"। यह भजन तो सभी गा लेते है और सबको प्रिय भी लगता है। किन्तु इसका अनुभव प्राप्त करने में वडा पुरुषार्थ करना पडता है। आत्मा में आत्मा को देखना बहुत बडी वात है। उसके माने है, दुनिया में हमारे सामने जितने प्राणी प्रकट हैं, जितनी मूर्तियाँ दीखती हैं, उन सवमें हम अपना ही रूप देखे। भू-दान और ग्राम-दान उसी का एक नम्र और छोटा सा प्रयत्न है। भू-दान मे हम सवको समझाते है कि आप पाँच भाई हैं, तो आपके घर एक और छठा भाई है, जो वाहर है। उसका हिस्सा उसे दीजिए। समाज को अपने परिवार का हिस्सा समझिए, यही आत्मा में आत्मा के दर्शन का प्रयत्न है। यह वात केवल भूमि के लिए ही लागू नही, वल्कि कुल सपत्ति, शक्ति और वुद्धि के लिए लागू है।

हर मनुष्य अपनी सपत्ति, शक्ति और वुद्धि का एक हिस्सा अपने अडोसी-पडोसियो के लिए दे और उसमें हम दूसरे किसी पर उपकार करते है, ऐसी भावना न हो। समाज को अपने परिवार मे दाखिल करना व्यापक आत्म-दर्शन का एक अल्प प्रयत्न है। जव आप देखते है कि गाँववाले अपनी जमीन पर से अपना एक हिस्सा उठा लेते और उसे सारे गाँव का वना देते है, तो उसमें व्यापक आत्मा का कुछ भान होता है।

ग्रामदान का स्वतन्त्र मूल्य

यहाँ वहुत सारे गाँव मिल रहे है। इस काम में हमारी कसौटी जरूर है, परन्तु हमारे मन मे दूसरी ही वात है। हमने कभी नही समझा कि दुनिया का कारोवार चलाने की जिम्मेवारी हम पर है। दुनिया का कारोवार दुनिया चला रही है। हम तो लोगो मे एक विचार प्रचलित करना चाहते है, व्यापक आत्मा का भान कराना चाहते है। यह समझाना चाहते है कि व्यक्तिगत मालकियत मिटनी चाहिए। अगर गाँव-गाँव के लोगो ने इतना समझकर ग्रामदान दिया, तो फिर चाहे उसके वाद हम उन गाँवो की उत्तम रचना न कर सके, तो भी उस ग्रामदान का जो स्वतन्त्र मूल्य है, वह कम न होगा। इसके लिए मै एक मिसाल देता हूँ। वहुत प्रयत्नो के वाद हिन्दुस्तान को स्वराज्य प्राप्त हुआ। स्वराज्य की कसौटी जरूर इस वात मे है कि हम स्वराज्य किस तरह चलाते और हिन्दुस्तान की उन्नति किस तरह करते है। लेकिन मान लीजिये कि हम वहुत शीघ्र ज्यादा उन्नति न कर सके तो हम कम लायक साबित होगे। फिर भी हिन्दुस्तान को जो स्वराज्य प्राप्त हुआ है, उसका मूल्य कम न होगा। स्वराज्य-प्राप्ति की स्वतन्त्र कीमत है, चाहे उसके वाद हम उसका उत्तम उपयोग कर सकें या न कर सकें। इसी तरह यह जो भू-दान, ग्राम-दान, सपत्ति-दान आदि का आन्दोलन चल रहा है, उसका स्वतन्त्र मूल्य है, चाहे उसका उपयोग हम ठीक से कर सके या न कर सके।

मूल्य परिवर्तन और सुख

दूसरे सेवको के और हमारे इस विचार में वुनियादी फर्क है, जो आज का नहीं, पुराना है। जव वावा रचनात्मक काम मे लगा था, तव भी उसके सामने

यही कसौटी थी। इसलिए बाबा ने हमेशा यही प्रयत्न किया कि आसपास के लोगो में अच्छी भावना पैदा हो और उत्तम कार्यकर्ता पैदा हो। समझने की बात है कि हम रचनात्मक काम करना जरूर चाहते है, लेकिन रचनात्मक काम तो सरकार भी करना चाहती है, और करेगी। उससे लोग सुखी होगे और अवश्य होने चाहिए। लेकिन मूल्य-परिवर्तन एक बात है और समाज को सुखी बनाना दूसरी बात। जब आप शाश्वत सुख की बात करेंगे, तो दोनो मे फर्क न रहेगा। लेकिन तात्कालिक सुख के बारे में सोचेंगे, तो सुखी बनना एक बात है और मूल्य-परिवर्तन दूसरी बात।

जहाँ लोग अपने परिवार को व्यापक समझकर अपना एक हिस्सा समाज के लिए देते है, वहाँ मूल्य-परिवर्तन हो जाता है। कोई फड दिया जाता है, तो उसमें मूल्य-परिवर्तन नही होता। परन्तु जैसे हम आजीवन खाते हैं, वैसे ही खाने के साथ-साथ समाज को एक हिस्सा देते हैं, तो यह वृत्ति मूल्य-परिवर्तन की निशानी है। फिर चाहे जो भाग आप समाज को देते हैं, उसका सदुपयोग कर सकें या न कर सकें, यह तो अक्ल की बात होगी। आज हम अपने घर मे जो सपत्ति खर्च करते हैं, उसमें भी ठीक खर्च करते हैं या नही, यह अक्ल पर निर्भर है। फिर भी यह समझने की बात है कि जहां पाँच सौ गाँवो के लोगो ने अपने जीवन से व्यक्तिगत मालकियत मिटा दी, वहाँ उनके जीवन में मूल्य-परिवर्तन हो गया है।

मूल्य-परिवर्तन ही क्रान्ति

इसी मूल्य-परिवर्तन को हम "शान्तिमय क्रान्ति" कहते है। क्रान्ति के पीछे मैंने यह "शान्तिमय" विशेषण नाहक लगाया। क्योकि जो अशान्तिमय है, वह क्रान्ति ही नही है। वह तो शान्तिमय ही हो सकती है। किसी भी प्रकार के बदल को क्रान्ति नही कहा जाता। क्रान्ति में तो बुनियादी या मूलभूत फर्क होना चाहिए, मूल्य बदलना चाहिए। मूल्य का जो बदल होता है, वह शान्तिमय ही होता है, विचार से ही होता है। मार-पीटकर, आग लगा कर या धमकाकर जो परिवर्तन किया जायेगा, वह विचार-परिवर्तन न होगा। चाहे वह बडा परिवर्तन हो तो भी वह क्रान्ति नही होगा। कुछ लोग हमसे

पूछते हैं कि आप जिसे "विचार-परिवर्तन' या क्रान्ति कहते हैं, उसे करने के लिए कितना समय लगेगा ? हम जवाब देते हैं कि चाहे कम समय लगे या ज्यादा, इसकी हमे कोई चिन्ता नही। विचार-क्रान्ति शीघ्र होती हो तो ठीक, नही तो शीघ्र "अविचार-क्रान्ति" करनी चाहिए-इस विचार को हम नही मानते। हम सिर्फ "शीघ्रवाद" को क्रान्ति नही कह सकते। कोई अगर हमसे कहेगा कि आपको शीघ्र खाना मिलना चाहिए, फिर चाहे रोटी न मिले तो जहर खाना चाहिए-इस तरह के शीघ्र भोजन के विचार को हम नही मानते। हम तो समुचित भोजन के विचार को ही मानते हैं। यह बात ठीक है कि भूखे को जितना जल्दी खाना मिले, उतना अच्छा ही है। विचार-क्रान्ति भी जल्द-से-जल्द हो, यह अच्छा है। लेकिन चाहे शीघ्र हो या देर से, चीज वही बननी चाहिए जो बनानी होती है। इसीलिए मैंने कहा कि क्रान्ति के पीछे मैंने नाहक शान्तिमय विशेषण जोड दिया, उस विशेषण की कोई जरूरत नही है। लेकिन इन दिनो "रक्तपातयुक्त क्रान्ति" के लिए क्रान्ति शब्द इस्तेमाल किया जाता है, इसलिए मुझे वह विशेषण जोडना पडा।

साराश, समाज को अपने परिवार का अग समझकर एक हिस्सा देने की बात के परिणामस्वरूप जो ग्रामदान की बात निकली, वह क्रान्ति की बात है। अगर आप शाश्वत सुख चाहे, तो इस विचार-क्रान्ति के द्वारा वह भी मिलेगा और शीघ्र और तात्कालिक सुख चाहते है, तो वह इस विचार-क्रान्ति का उपयोग हम किस तरह करते हैं, इस पर निर्भर है।

अम्बादरा
२८-८-'५५

ग्रामराज से रामराज्य : २८ :

इस जमाने मे जो राज्य होता है, वह राज्य नहीं, प्राज्य होता है, वह राज्य लोगो का होता है। पहले के जमाने में जो लोगो को दबाता था, वही राजा होता था। कहा जाता है कि जगल का राजा शेर होता है। इसके माने यह है कि जो जंगल के प्राणियो को खा सकता है, वही उसका राजा है। संस्कृत मे जानवरो

के राजा को याने सिंह या शेर को मृगराज कहते हैं। उस राजा के दर्शन होते ही सारे थर-थर काँपते हैं। इस प्रकार की राज्य-सत्ता अब नही चलेगी। अब तो राज्य-सत्ता सेवा की सत्ता होगी। माता को घर में क्या अधिकार होता है? बच्चे को भूख लगी है, तो उसे दूध पिलाना माता का पहला अधिकार है। बच्चे को सुलाकर सोना, यह नबर दो का अधिकार है। बच्चा बीमार पडा तो रात को जागना, यह नबर तीन का अधिकार है। और घर मे खाने की चीजें कम हैं तो पहले बच्चे को खिलाना और खिलाने के बाद कुछ नही बचा तो खुद फाका करना, यह नबर चार का अधिकार है। आज का हमारा मातृ-राज है न ? , तो उसके नमूने हमें गाँव-गाँव में दिखाने होगे।

गाँव-गाँव में जो बुद्धिमान, सपत्तिमान और समझदार लोग होंगे, वे गाँव के माता-पिता बन जायें और गाँव की सेवा करके गाँव का राज्य चलायें। जो बुद्धिमान पिता होते है, वे अपने लडको के लिए यही इच्छा करते है कि हमारे लडके हमसे ज्यादा बुद्धिमान बनें। पिता को तो खूब खुशी होती है, जब उसका लडका उससे आगे बढ जाता है। गुरू को तब खुशी होती है, जब उसका शिष्य दुनिया में उसका विस्मरण कराता है। लोग गुरू का नाम भूल जाते है और शिष्य को ही याद करते हैं, तो गुरू को खुशी होती है। गुरू को लगता है कि मैंने अपने शिष्य को ज्ञान दिया और फिर भी मेरा नाम दुनिया में कायम रहा, तो मैंने ज्ञान ही क्या दिया ? मेरा नाम मिट जाना चाहिए और शिष्य का नाम चलना चाहिए, तभी मैं सच्चा गुरू हूँ। इसलिए गाँव के जो बुद्धिमान लोग होंगे, वे इस तरह से काम करेंगे कि सब लोगो से ज्यादा बुद्धिमान बनें, तो फिर ग्रामराज्य से रामराज्य बनेगा।

कोटीपाम (श्रीकाकुलम)
९-८-'५५

अब शहरो की बारी : २९ :

थोडा-थोडा दान माँगते-माँगते छठा हिस्सा शुरू हुआ और उसके बाद ग्रामदान शुरू हुआ। अब तो बाबा तालुकादान, जिलादान माँग रहा है।

कुछ लोग कहते हैं कि बाबा लोभी बन गया है। उसका लोभ बढता ही जा रहा है, यह बात सही है। जब तक मनुष्य कुल मालकियत नही छोड देता, तब तक यह आदोलन समाप्त नही होगा। इस मालकियत ने मनुष्य के गले को दबा रखा है। इसके कारण वह अपनी व्यापकता भूल बैठा है। उसका ऐश्वर्य छिन गया है। वह दरिद्र, दुखी बन गया है। मालकियत की भावना खतम होनी चाहिए। केवल भूमि की मालकियत मिट गयी, इतने से कार्य पूरा नही होता है। कारखानो और मकानो की मालकियत भी मिटनी चाहिए। अब सब लोग समझेंगे तो एक-एक के बाद एक-एक होता जायगा।

अब गाँवो का ग्रामदान होगा, तो शहर क्या बाकी बचेंगे? मान लीजिए कि तिरुमगलम् तालुका दान हो जाय, तो क्या तिरुमगल में शहर कही दूसरी जगह उडकर चले जायेंगे? तिरुमगलम् तालुका के शहरो की स्वाभाविक गति यही होगी कि वे गाँववालो की सेवा में अपना जीवन समाप्त करे। आज-कल तो गाँव-गाँव मे झगडे चलते हैं। उससे वकीलो का धधा चलता है। परतु अगर तालुकादान हो जाय, तो झगडे ही खतम हो जायेंगे। तो वकील बेकार बनेंगे। शिकायत लेकर वकील लोग आयेंगे, तो बाबा उनको जमीन देगा और काश्त करने को कहेगा।

आजकल ये साहूकार गाँववालो को कर्ज देकर लाखो रुपया कमाते हैं। तालुकादान के बाद उनके कर्ज की जरूरत नही रहेगी। उन्होने गरीब लोगो को जो दान दिया है, वह क्या वे लाखो सालो मे भी भर पायेंगे। लोगो को ऐन मौके पर मदद देने को हम दान ही समझते हैं। ऐसे तो जितना हो सकेगा उतना कर्ज चुका देंगे, क्योंकि उनका उपकार हम पर बहुत ज्यादा है। दस हजार रुपये की मदद तो गौण वस्तु है। परतु जिस समय हमको जरूरत थी, दूसरी किसी जगह से मदद नही मिल सकती थी, उस समय दिया, यह एक बडी बात है। इसलिए उस पर हमारा प्रेम बहुत है। वह जितना भी हो सकेगा, उतना करेंगे। उसके उपकार का कोई निराकरण नही हो सकता। फिर भी उसके जीवन की जिम्मेदारी हम उठा लेगे। उनका जीवन भी चलना चाहिए। हम गाँववाले उनकी जिम्मेदारी उठा लेंगे, जैसे आज राजा-महाराजाओ को

जिम्मेवारी उठा ली है। इज्जत के साथ अब उनका जीवन चलेगा। पहले राजा अपने घोसले से बाहर ही नही निकलते थे। अब इज्जत भी मिलेगी, उनका जीवन हम चलायेंगे। उनकी जिम्मेवारी हम उठायेंगे। इसलिए ग्राम-दान मे ही क्यो, तालुका, शहर आदि दान में कोई मुश्किल नही है।

नेडुकुलम् (मदुराई)
२५-३-'५७

गाँव में अधिक जमीन हो तो? : ३० :

पड़ोसी को प्रेम का आमंत्रण

आज सुबह कुछ कार्यकर्ता हमसे मिलने आये थे। उन्होने एक बडा दिल-चस्प सवाल पूछा कि "हम ग्रामदान माँग रहे है, तो उस गाँव की जमीन गाँव की बनेगी और सब गाँववालो में बँटेगी, लोग सुखी होगे। परतु मान लीजिये कि किसी गाँव मे लोग ज्यादा है और जमीन कम है, तथा नजदीक के गाँव मे जमीन ज्यादा है और लोग कम है। दोनो ग्रामदान हुए और इस गाँव की जमीन इन गाँववालो मे बँटेगी, उस गाँव की उन गाँववालो में, एक गाँव विशेप सुखी होगा और दूसरा उतना नही होगा। ग्रामदान होने के बावजूद भी ऐसी हालत मे क्या किया जाय?" हमने उसका उत्तर दिया कि आगे यह होगा कि जिस गाँव मे ज्यादा जमीन है, उस गाँव के लोग दूसरे पडोसी गाँव के लोगो को आमत्रण देंगे कि आइये, आप मे से दस-पाँच परिवार हमारे गाँव में आकर बस जाइये। ये सब बाते हम एकदम नही उठाते है, लोग धीरे-धीरे एक-एक चीज समझते जायेंगे। पहले एक गाँव का ग्रामदान तो होने दीजिये, फिर लोगो को समझा दिया जायेगा कि अगर आपके गाँव मे जमीन ज्यादा है, तो पडोसी गाँवके लोगो को बुलाना प्रेम के लिए अच्छा है। हिन्दुस्तान के लोगो का दिल बडा है, इसलिए वे इस बात को समझ सकते है। कई सवाल एकदम उठाना अच्छा नही है, इसलिए हम इस बात को अभी नही उठा रहे है। लेकिन भू-दान-यज्ञ का असली उद्देश्य क्या है, इस विचार को हमें समझना चाहिए। भू-दान-यज्ञ एकाध ग्राम की सीमातक सीमित रहनेवाला नही है, यह किसी देश तक भी

सीमित रहनेवाला नहीं है। अपने मन मे भी हमने ऐसा नही माना है कि यह आन्दोलन, भारत का ही आन्दोलन है, बल्कि हमारे मन मे यही है कि हमने दुनिया का एक प्रश्न उठाया है। कुल दुनिया का सवाल हम एकदम हल नहीं कर सकते हैं। वैसा करने की कोशिश करना अहकार हो जायेगा। इसलिए पहले हम भारत की समस्या हल करना चाहते हैं। उसके बाद यह दूसरे देशो पर भी लागू होगा।

पक्षी, प्राणी और जीव-जंतुओं का भी हक

एक गाँव में ज्यादा जमीन है, दूसरे गाँव में कम है, यह तो होता ही है। परन्तु यह भी होता है कि एक जिले मे ज्यादा जमीन है, तो किसी जिले मे कम एक प्रान्त में कम है, तो दूसरे प्रान्त मे ज्यादा एक देश में ज्यादा है, तो दूसरे देश मे कम जमीन की मालकियत भगवान् की है, ऐसा हम कहते हैं। तो जमीन पर किसी व्यक्ति की, किसी गाँव की, किसी समाज की, किसी देश की मालकियत नहीं है, उस पर कुल दुनिया की मालकियत है। इतना इसका व्यापक अर्थ है। जमीन कुल दुनिया की है, ऐसा कहने के बदले, ईश्वर की है, ऐसा हम कहते हैं। जमीन पर केवल मनुष्य की ही मालकियत है, ऐसा नहीं है। उस पर पक्षियो का, प्राणियो का, जीव-जतुओ का भी हक है। वे अपना हिस्सा लेते भी हैं और हिन्दुस्तान के लोग प्रेम से उन्हे वह हक लेने भी देते हैं। भारतीय किसान का दिल बडा उदार है। कहने का तात्पर्य यह है कि जमीन पर दुनिया भर के मनुष्यो की मालकियत है, ऐसा भी हम नही कह सकते। उस पर सब प्राणियो का भी हक है, जैसे हवा और पानी पर है। प्यासी गाय आये, तो पानी उसकी प्यास बुझाता है और प्यासा शेर आये तो उसकी भी प्यास बुझाता है। इसलिए हवा, पानी और जमीन, ये सब परमेश्वर की देन हैं और अगर उसकी मालकियत है, तो ईश्वर की ही है, ऐसा कहना होगा।

वसुधैव कुटुम्बकम्

हमने कहा था कि आस्ट्रेलिया की जमीन की माँग करने का जापान के लोगो को हक है और उनको वहाँ से आने देना आस्ट्रेलिया के लोगो का कर्तव्य

है। तमिलनाड के लोगो का विन्ध्य-प्रदेश या मध्य-भारत में जाने का हक है, और केरल के लोगो का तो ज्यादा हक है, क्योकि दक्षिण केरल में एक वर्गमील में दो हजार लोग रहते है, तो विन्ध्य-प्रदेश में दो सौ लोग रहते है। विन्ध्य-प्रदेशवालो का यह कर्तव्य है कि केरलवालो को अपने प्रदेश में स्थान दें। आस्ट्रेलिया में हवा गरम है, इसलिए वहाँ जो इङ्गलैंडवाले रहते हैं, वे समुद्र के किनारे-किनारे रहते है, अदर जा ही नही सकते। उन्होने सौ-पचास मील तक का किनारे का हिस्सा लिया है। अन्दर की भूमि में प्रवेश किया जाय, तो आज वहाँ जितने लोग रहते है, उससे पाँच गुना ज्यादा लोग रह सकते हैं। लेकिन वहाँ के लोग दूसरे लोगो को आने नही देते। वे कहते है कि दूसरो को आने देंगे, तो हमारी सम्यता, सस्कृति विगड जायेगी। ये विल्कुल छोटे-छोटे विचार है। तमिलनाड तमिल लोगो का है, उत्तर हिन्दुस्तान उत्तरवालो का है, आस्ट्रेलिया आस्ट्रेलियावालो का है–ऐसी बातें आज चलती है। परन्तु यह गलत विचार है। इस विज्ञान के जमाने में ऐसे सकुचित विचार टिक नही सकते। अगर इस विज्ञान के जमाने में हम ऐसे छोटे-छोटे विचार रखेंगे, तो लडाइयाँ टलेंगी नही। इसलिए जब कहते हैं कि तमिलनाड तमिलवालो का है, तो हम कहते हैं कि "तमिलनाड तमिलवालो का भी है।" अगर कहेंगे कि तमिलनाड तमिलवालो का ही है, तो इस जमाने में नही चलेगा। आजकल दुनिया में "ही" चल रहा है। हम कहते हैं कि "ही" मत कहो, "भी" कहो, तो दुनिया में शान्ति रहेगी। विज्ञान के जमाने में देशो की सीमाएँ टूट रही है। एक जमाने में हिन्दुस्तान का दक्षिण किनारा और अफ्रीका का प्रदेश विल्कुल अलग थे। उन दोनो को किसने तोडा था ? समुद्र ने तोडा था। आज दक्षिण भारत को अफ्रीका के साथ जोड दिया गया है। किसने जोडा है ? एक जमाना था, जब समुद्र तोडनेवाला था, आज समुद्र जोडनेवाला हो गया है। आज चीन और अमेरिका पडोसी देश हो गये हैं, उनके बीच सिर्फ एक छोटा-सा छ हजार मील का समुद्र है। हवाई जहाज से इधर से उधर बारह घटे में जा सकते हैं। इसलिए पहले के जमाने की वह भाषा नही चलेगी, "कुमारियल्लै वडमालदन् कुट्टम्"। "कन्याकुमारी से तिरुपति के पहाड तक हमारा देश तमिलनाड है।" अब ऐसा कहो कि हमारा देश तमिलनाड

उत्तर ध्रुव से लेकर दक्षिण ध्रुव तक है। जितना वडा तमिलनाड है इतना ही वडा भारत है। इतनी ही वडी दुनिया है। ऐसा विशाल हृदय वनायेंगे तभी हम इस विज्ञान के जमाने मे टिक सकेंगे।

अंडपट्टी (मदुरा)
२०–१२–'५६

ग्रामदान और तालुकादान : ३१ :

आप लोगो को मालूम होगा कि तिरुमगल तालुका में वडा भारी काम हो रहा है। पूरे तालुका के गाँव ग्रामदान मे आ जायँ, ऐसी कोशिश हो रही है। उसमें सैंकडो कार्यकर्ता काम कर रहे हैं। यह एक अद्‌भुत विचार है, छोटी चीज् नही है।

ग्रामदान और तालुकादान का अर्थ क्या है ? क्या हम गाँव की कुल जमीन वावा को देकर चले जायेंगे ? क्या हम तालुका की कुल जमीन वावा को देकर चले जायेंगे ? तालुकादान या गामदान का अर्थ यह है कि लोग अपनी-अपनी व्यक्तिगत मालकियत समाज को अर्पण करते है और अपना जीवन समाज की सेवा मे लगाते है। लेकिन यह प्रेम के विना होगी नही। आज के समाज मे प्रेम नही है, यह वात नही। प्रेम कम है, ऐसा भी नही है। प्रेम के विना मनुष्य ही क्या, कोई प्राणी भी नही जी सकता।

अपना-अपना हक कुटुम्व में नही कहते, अपना कर्तव्य समझते है और दूसरो के लिए त्याग करते है, यह सारा उत्तम प्रेम का लक्षण है। उसके वास्ते तकलीफ भी कभी भोगते है, तो भी वह अपना सेवा-कर्तव्य समझते है। इतना प्रेम का दर्शन कुटुम्व में होता है, इससे कुटुम्व में सुख भी दीखता है। तो हमको करना यही है कि कुटुम्व का प्रेम फैलाना है। सारे गाँव मे सभी लोग अच्छे होते है, यह वात नही है। परिवार मे भी अच्छे-वुरे लोग होते है, तो भी हम निभा लेते है या नही ? वैसी ही भावना समाज में होनी चाहिये, और अपना परिवार वढाये।

परिवार बढ़ाना याने क्या ?

परिवार वढायें याने क्या करना है ? हमारे गाँव में ४००-५००घर है। तो क्या हम अपने अलग-अलग घर मिटा दें और जैसे एक होस्टल रहता है, वैसे वडे घर में सब रहें ? हमारी अलग-अलग रसोई होती है, तो क्या जैसे होटल में जाकर सब खाते हैं, वैसा करें ? हमारी जमीन अलग-अलग है, तो क्या वह एक बनाकर सब मिलकर ट्रैक्टर से खेती करें ? ऐसा नही करना है। सहूलियत के लिए अलग-अलग घर होगा। हर एक की रसोई अलग-अलग होगी। परिवार के हिसाब से जमीन भी हर एक को दी जायेगी। परन्तु मालकियत न रहे। सबका सुख-दुःख एक में मिला लें। किसी की भी मदद में हम जायें, गाँव की जमीन पर सबका हक हो। मतलब यह है कि हम कुटुम्ब को खतम नही करना चाहते, बल्कि कुटुम्ब तो बुनियाद है। कुटुम्ब है इस वास्ते त्याग का, प्रेम का अभ्यास होता है। कुटुम्ब तो हम चाहते हैं।

धारणात् धर्मः

ब्राह्मण के घर में लडका पैदा हुआ तो नगा, भगी के घर में पैदा हुआ तो भी नगा, जन्म में फर्क नही मानते, मरने में भी फर्क नही मानते। तो फर्क कहाँ रहा ? नाहक के अहकार को हम अपने साथ बॉध लेते है, और जाति-भेद वढाते हैं। यह जाति-भेद समाज को कभी बढने नही देता। पहले जमाने में जो वर्ण-व्यवस्था थी, उसका ख्याल ही कुछ अलग था। वह गुणानुसार काम का बँटवारा था। कोई भी काम करनेवाला मोक्ष पाता है, यह गीता ने कहा है। समाज की सेवा प्रेम से की जाय और वह सेवा आखिर में परमेश्वर को अर्पित की जाय। कोई वेदो का अध्ययन करता हो, कोई गाय की सेवा करता हो, या कोई भगी का काम करता हो, किसी भी प्रकार की सेवा हो, सब परमेश्वर को अर्पण हो सकती है और सब मोक्ष पा सकते हैं। आज-जैसा भेद नही था। आज तो जाति-भेद समूह को तोड ही रहा है। इसके परिणाम में सारा समूह कमजोर बनता है। हिन्दुस्तान में छत्तीस करोड लोग है, बडा भारी समुदाय है बहुत ताकत हो सकती है। प्रेम रहा तो ताकत बढेगी, लेकिन बडा समुदाय होते हुए भी उसके टुकडे होने मे शक्ति कम हुई है। जाति,

भाषा, धर्म के भेद बनाये रखे है। इस चुनाव ने तो पक्ष-भेद और किये है। उससे जाति-भेद को भी उत्तेजन मिलता है। जो जाति-भेद मरने की तैयारी में था, उसको उत्तेजन दिया जाता है। आश्चर्य की बात है कि धर्म से भी भेद पैदा होते है। धर्म याने क्या ? "धारणात् धर्म."—सबको धारण करनेवाला, सबको इकट्ठा करनेवाला, परन्तु आज तो उल्टा ही है। हिन्दू बाकी व्यवहार साथ-साथ करेंगे, परन्तु भगवान् का नाम लेने का प्रसंग आयेगा, तो अलग हो जायेंगे। ऐसा लगता है कि, बेहतर है कि हम धर्म से मुक्त हो जायें हम एक दोष से तो मुक्त हो जायेंगे। समाज को विभाजित करने का काम अगर धर्म करता है, तो क्या लाभ उसका ? एक परमेश्वर को हम सब परम-पिता मानते हैं। पर उस पिता को "गाड", "शिव" क्या कहा जाय ? इसमें भेद पड जाते है। कोई कहता है, हम नदीवाले भगवान् के भक्त है, हम गरुड-वाले भगवान् के भक्त हैं, हम मयूरवाले भगवान् के भक्त है, हम चूहेवाले भगवान् के भक्त है – और उसमे भेद पड जाते है, क्या अजीब बात है ?

एक देश की सेवा के लिए चुनाव और उसमें भी भेद। एक परमेश्वर के लिए धर्म और उसमें भी भेद। परिवार का प्रेम हमे फैलाना है। समझना चाहिए कि जब तक यह भेद है, तब तक हमारी शक्ति नही बढेगी। ग्रामदान, तालुका-दान की विरोधी जो चीजे हैं, उन पर हमको प्रहार करना ही होगा। कोई कहता है, आप जाति-भेद पर प्रहार मत कीजिये, नही तो आपके आन्दोलन को बाधा पहुँचेगी। कर्म बदलने से बाधा आयेगी, तो हर्ज नही। पर आज के जाति-भेद के पीछे ऐसी कोई बुनियाद ही नही है। कम-से-कम ये द्वेष तो कम करो। ब्राह्मण, हरिजन, मालिक-मजदूर ऐसे द्वेष रखोगे, तो झगडे बढेंगे और ताकत नही बढेगी। इस वास्ते हम चाहते है कि आप इस पर सोचेंगे और यह भेद खतम करेंगे।

केवल ग्राम-दान से संतोष नही ?

यह हुआ ग्राम-दान का विचार। परन्तु हमको ग्राम-दान से सतोष नही है, हम तो फिरका-दान चाहते है। आज तो एक ग्राम-दान हुआ तो साहूकार बीच में आता है, गांववालो को समझाता है कि अरे, मूर्खो ! तुमने यह क्या किया?

मालकियत मिटा दी ? अब कर्ज कौन देगा ? जो कर्ज है, वह पन्द्रह दिन में चुका दो, तुम्हारी मालकियत के भरोसे पर तो हमने तुमको कर्ज दिया था। वह ग्राम-दान का शत्रु है, लेकिन उसको भी समझाना होगा। गाँववाले सुख से खा-पी सकेंगे, अच्छी तरह रहेंगे, तो देश को लाभ ही है। वह समझ जायेगा। फिरका-दान हो जायगा, तो साहूकार को कर्ज छोडने के लिए समझा सकेंगे।

आज मदुरा जिले में ग्रामदान हो रहे है। लेकिन ग्रामदान तो हम उत्तर भारत से ही लेकर आये थे। हमें चाहिए, फिरकादान। हम ग्रामदान की गगा का पानी लाए, आप समुद्र का जल काशी-विश्वनाथ के लिए नही देंगे ? आज तो ग्राम-दान की किताब यहाँ निकलती है तो १५०० मील की दूरी पर आए हुए मगरौठ की कहानी आप पढते हैं। कौन देखता है उस गाँव को ? तमिलनाड को बाहर के गाँवो की कहानी ही पढ़नी है क्या ? क्या आपको उनके वास्ते कोई कहानी नही बनानी है ? क्या फिरकादान आप करेंगे, तो उसे लेकर बाबा उत्तरवालो को सुनायेंगे। फिर मदुरा की महिमा उत्तर हिन्दुस्तान में चली जायेगी। हम आशा करते है कि ऐसी ताकत भगवान् आपको देगा।

कालपट्टी (मदुरा)
९-३-'५७

अणुबम से भी बढ़कर : सर्वस्वदान : ३२ :

आज आपने जो काम किया, उससे भगवान् अत्यन्त सतुष्ट है। भगवान् का आपको आशीर्वाद प्राप्त है। इसी तरह आप की धर्म-प्रेरणा और भावना बढे और आप का कल्याण हो।

अभूतपूर्व घटना

ऐसी घटना दुनिया के इतिहास में एक अद्‌भुत घटना गिनी जायगी, जब कि हिन्दुस्तान के लोग पूरे-के-पूरे देहात दान मे दे रहे है। ऐसी बात कभी किसी ने सुनी नही थी। इसमे किसी भी प्रकार का दबाव नही है और न हो सकता है। ऐसे काम दबाव से नही बनते।

ईश्वर का साक्षात् दर्शन

आज तो हम इस गांव में ईश्वर को साक्षात् देख रहे हैं। आप लोगो ने कितना प्रेम जताया है। हम समझते हैं कि भगवान् ने आपको वह प्रेम इसलिए दिया कि आपका कल्याण हो। ऐसा काम कानून से, डराने या धमकाने से नहीं हो सकता। यह काम तो केवल श्रद्धा, प्रेम और समझाने से ही हो सकता है।

ग्रामदान से दुनिया की हवा शुद्ध हो जाती है

ऐसे गांवो ने जो काम किया है, उससे सारी दुनिया में शान्ति की स्थापना हो सकती है। मैंने पुरी के सर्वोदय-सम्मेलन में कहा था कि भू-दान-यज्ञ में जो दान देता है, वह विश्व-शान्ति के लिए वोट देता है, विश्वशान्ति स्थापित करने में मददगार होता है। पश्चिम की विद्या पढ़े-लोग वहुत अन्धे हो गए हैं। वे ऐटम की शक्ति देखते हैं, एक परमाणु में कितनी शक्ति है, ऐसा कहते हैं। लेकिन उससे भी ज्यादा शक्ति ग्रामदान में है। हम समझते हैं कि जो पराक्रम ऐटम और हाइड्रोजन से हिंसा के क्षेत्र में होता है, वही ग्रामदान से अहिंसा के क्षेत्र में होता है। ऐटम और हाइड्रोजन को हिंसा-शक्ति का सबसे वडा पराक्रम माना जाता है, उसी तरह ग्रामशक्ति से सर्वस्व-दान, अहिंसा-शक्ति का सबसे बड़ा पराक्रम माना जायगा। वैज्ञानिक कहते हैं कि जब ऐटम और हाइड्रोजन फूटता है, तव सारी दुनिया की हवा विगड जाती है। हम समझते हैं कि जब ऐसा एक ग्रामदान मिलता है, तो सारी दुनिया की हवा शुद्ध हो जाती है।

आखिर में हम भगवान् से प्रार्थना करते है कि वह आप को आरोग्य दे, तुष्टि दे, पुष्टि दे। आप अपने वाल-बच्चो के साथ उसका नाम लेते रहें। आप लोगो ने वहुत ही पवित्र कार्य किया है। आपको मेरा भक्ति-भाव से प्रणाम।

अंगुलो (उत्कल)
१९-५-'५५

परिशिष्ट : १

भारत में प्राचीन ग्राम-व्यवस्था

श्री के० एम० पाण्णिकर 'ए सर्वे आव् इडियन हिस्ट्री' में लिखते हैं "एकमात्र गांव ही वह आधार था, जिस पर भारत का प्रत्येक साम्राज्य पला है।" टी० डब्ल्यू राइस डेविड्स "बुद्धिस्ट इडिया" में बहुत ही स्पष्ट चित्र देते हैं। उसका विस्तृत सार श्री० हर्षदेव मालवीय ने निकाला है। उसके कुछ उद्धरण यहाँ दिये जा रहे हैं—

"हमें अपराध की एक भी घटना सुनाई नही पडती और स्वय गाँवो में, जिनमें से प्रत्येक एक छोटा स्वशासित लोकतन्त्र था, सम्भवत अपराध अत्यन्त नगण्य था। प्रत्येक ग्राम के स्थानीय मामले गृहस्थो की खुली सभा में तय होते थे। ये सभाएँ बगीचो में होती थी जो उस समय भी गाँवो की एक प्रमुख विशेषता थी। प्रत्येक ग्राम में फाटक-ग्रामद्वार होता था। उसके आगे वगीचे और फिर ग्रामक्षेत्र-गाँव के खेत। आवश्यकता पडने पर जगल साफ करके ग्रामक्षेत्र का विस्तार किया जाता था। उनके आगे ग्राम का चरागाह हुआ करता था। उस पर समूचे ग्राम का राजा और प्रजा सवके पशु चरने का सामूहिक अधिकार होता था। ऐसा लगता है कि उस समय सहकारी सिंचाई की प्रथा प्रचलित थी। धम्मपद में 'उदक हि नयन्ति नेत्तिका' का अनुवाद डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्जी ने इस प्रकार किया है "(नहरवाले) इजीनियर पानी को (जहाँ चाहे वहाँ) ले जाते हैं।"

प्रत्येक परिवार के पास भूमि का कुछ रकबा था जिसकी पैदावार के उपभोग का अधिकार उसे था। किन्तु स्वामित्व अधिकार जैसी किसी वात का अस्तित्व न था। कोई भी भूमि को न वेच सकता था, न वधक रख सकता था। कम-से-कम ग्राम-समिति की अनुमति के विना ऐसा करना तो सर्वथा असम्भव था। अपनी निर्धारित भूमि पर खेती करने के अधिकार की वसीयत भी कोई नही कर सकता था। इस प्रकार के तथा भूमि के कब्जे-सम्वन्धी सभी मामले वैदिक काल से चले आये

परम्परागत रीति-रिवाजो के अनुसार, कभी समयानुसार साधारण संशोधन के साथ, औचित्य और सत्यता सम्बन्धी समाज की सामान्य भावना द्वारा तय होते थे।

वनो मे गिरे हुए पेडो से लकडी चुनने के अधिकार नि शुल्क और बिना किसी बाधा के प्राप्त थे। राजा भी भूमि सम्बन्धी स्वतंत्र अधिकार का दान नही कर सकता था क्योकि भूमि पर उसकी कोई मालकियत नही थी। सरकार को केवल वार्षिक कर के रूप मे परम्परा के अनुसार पैदावार के षष्ठांश से द्वादशांश पाने भर का अधिकार था।

प्रत्येक परिवार के पास खेतीवाली आराजी का आकार वही होता था जिसका प्रबन्ध वह आसानी से कर सकता था। हालांकि कभी-कभी भटिका (मजदूर) काम पर लगाये जाते थे। किन्तु बेगार की प्रथा न थी। डॉ० राधाकुमुद मुखर्जी कहते हैं आदर्श किसान वही माना जाता था जो अपनी भूमि से सम्बन्ध-विच्छेद करने की बजाय स्वयं ही उस पर खेती करता था। मजदूरी पर रखे जानेवाले "नौकर" को सामाजिक कलंक समझा जाता था और उसे दास से भी निम्न स्थान था। मजदूरी पर काम करना वे लज्जाजनक समझते थे और इस स्थिति को वे बेहद मजबूरी की हालत में ही कबूल करते थे।

जब से यह विपरीत स्थिति बढ चली तब उसे उसी समय सामाजिक पतन की प्रणाली कहकर खेद प्रकट किया गया है (जातक १,३३९ मिलिन्द १४७, ३३७ आदि)। भाग (सरकारी कर) के अतिरिक्त गाँव पर और भी महसूल "बाली" लगाये जाते थे। कभी-कभी अकाल, युद्ध जैसे आकस्मिक संकटो में व्यवस्था करने के उद्देश्य से सरकारी गल्ला गोदामो को पूर्णरूप से भरने के लिए विशेष महसूल लगाये जाते थे। इन सबके उपरान्त ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय श्रम प्रदान करने की प्रथा भी प्रचलित थी। यह श्रमदान स्पष्टत. गाव द्वारा अपनी सहायता आप करने के उद्देश्य से प्रेरित होता था, यद्यपि कही-कही कभी-कभी राजा का शिकार या अन्य प्रबन्ध उनसे करवाया जाता था। सुविख्यात मदुरा के मीनाक्षी मन्दिर की दीवाल पर बने हुए एक चित्र में भगवान्

शिव अपने सिर पर मिट्टी से भरी टोकरी ढोते हुए दिखाये गये है और उनके पीछे बहुत से लोग पुल निर्माण में व्यस्त। ग्रामीणो में उस समय कोई बहुत धनी नहीं था, न गरीबो की सख्या ही बहुत थी। वे परस्पर प्रसन्न, खुशहाल, अपने हाथो में अपने बच्चो को नचाते हुए खुले दरवाजेवाले घरो में आनन्दपूर्वक रहते थे। उन्हें अपनी स्थिति, अपने परिवार और अपने गाँव पर गर्व था।

"आर्थिक समीक्षा" पाक्षिक
७-११-'५५

परिशिष्ट . २

न्यूजीलैण्ड का एक साम्ययोगी समाज

सर्वोदय या साम्ययोगी जीवन केवल भारत में ही नही, दुनिया में अन्यत्र भी पाया जाता था। रूस देश में "दुखोबोरोत्सी" समाज करीब ३०० वर्षो तक चला। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, शरीरश्रम, असग्रह आदि तत्त्वों पर वह चला। ईसामसीह के वचनो के अनुसार उन्होने अपना जीवन ढाला। अपनी रोटी अपनी मेहनत से कमाना, सादगी से रहना, कभी किसी पर आक्रमण न करना, न किसी राजसत्ता को मानना या उसको कर देना इस तरह उनका जीवन था। जार ने बार-बार उन्हें झुकाने की कोशिश की, उन पर आक्रमण किया, उनके घर ध्वस्त किये, धन पशु आदि लूट लिये। फिर भी उन्होने कोई प्रतिकार नही किया, न द्वेष दर्शाया। फिर से वे गरीबी में अपना जीवन प्रारम्भ कर अपने परिश्रम से यथावत् हो जाते थे। सादगी तो यहाँ तक थी कि वे बच्चो के लिए कपडो को अनावश्यक मानते थे और स्वय लुगी और स्त्रियाँ लुगी के अतिरिक्त सीने पर छोटी फडकी काफी समझती थी। तीन सौ वर्षो में पचीस बार उनको कायल करने के प्रयत्न विफल होने पर जार ने उन्हें नष्ट करने की ठान ली। पर उसके नृशस अत्याचारो से दुनिया में तहलका मच गया और अमेरिका ने पूरी बसती को अपने देश में स्थान देना

स्वीकार कर नामोनिशा मिटने से उन्हें बचाया। फिर भी उनकी सादगी को जगलीपन मानकर या कर न देने की उनकी वृत्ति में अराजकता देख अमेरिका ने भी उन्हें 'सुधारने' के साम-दाम-दण्ड-भेद सारे उपाय अमल मे लाकर देखे। अन्त में उन्हें जगलो के छोरो पर निर्वासित कर छुटकारा पाया।

पश्चात क्रातिकारी प्रिंस क्रापटकिन ने अपनी 'काक्वेस्ट आफ ब्रेड' पुस्तक में तथा अन्यत्र ऐसे कितने ही उदाहरण दिये है, जहाँ प्राचीनकाल में पृथ्वी की पीठ पर भिन्न-भिन्न जगह इस तरह के साम्यवादी समाज थे और वर्तमानकाल मे व्यक्तिगत रूप से अत्यन्त छोटे पैमाने पर विज्ञान के सहारे मनुष्य इतना उत्पादन कर दिखाते है, जो आज के प्रचण्ड आधुनिक यान्त्रिक औजार या कृत्रिम रासायनिक खाद से भी नही हो पाते।

पुराने काल की बात हम छोड दें। आज इस समय न्यूजीलैंड में एक ऐसा समाज है जिसका वर्णन सिस्टर डाफ ने, डबल्यू जोन्स ने न्यूज़ीलैंड से लिख भेजा है।

न्यूज़ीलैंड में नेल्सन और मोटुक्का के बीच लोअर मौटेरे मे एक बस्ती है, जो ग्राम परिवार के रूप मे रहती है। वे जमीन की काश्त स्वय शामिल शरीक करते हैं और सम्मिलित स्वामित्व भी मानते है। इस प्रयोग का उद्देश्य यह है कि बुनियाद से ही एक उत्तम ईसाई तत्त्वो पर चलनेवाला समाज कायम कर भूतल पर शान्ति और सौहार्द बढावें।

यह उपक्रम १९४० में प्रारम्भ हुआ, जब केवल तीन प्रौढ व्यक्ति, कुछ जमीन, एक फल बाग और एक मकान था। आज वहाँ दस परिवार हैं जिनमें १९ प्रौढ व्यक्ति, ३५ बच्चे हैं और दो ब्रह्मचारी। उसी अनुपात में उनकी जायदाद भी हो गयी है। अधिकाश लोग मेथडिस्ट और थोडे क्वेकर्स है। धार्मिक और युवक सगठनो में विशेष दिलचस्पी लेकर सत्र शान्ति की उपासना के कारण एक प्रेम सूत्र में बँधे हुए है। "युद्ध ईसाइयत का विरोधी है"। "अत हमारी कोशिश है कि हम एक अच्छे समाज की नींव डालें", ऐसे उनके वचन हैं। नया व्यक्ति उम्मीदवार के तौर पर कुछ समय रहता है। पूर्ण सदस्यता के समय उसे अपनी निजी मिलकियत समाज को अर्पण करनी होती है। हर परिवार को एक मकान के अलावा साप्ताहिक निर्वाह व्यय,

नगद तथा वस्तुओ में दिया जाता है। परिवार ही पूरे समाज की बुनियाद माना जाता है। प्रत्येक बालक के लिए भी कुछ भत्ता दिया जाता है जो बच्चे के माध्यमिकशाला मे पहुँचने पर बढ़ाया जाता है। बच्चे का जन्म होते ही भत्ता शुरू होता है। इस तरह समाज में उपभोग की समानता रखी जाती है। बहुत-सी बातो में समाज स्वाश्रयी है। इमारतो के लिए वे स्वय लकड़ी चीर देते है। वे एक समाज केन्द्र की इमारत भी बनाना चाहते हैं जिसमे पुस्तकालय और प्रार्थना भवन हो। व्यक्तिगत मुनाफे की प्रथा न होने से जो अतिरिक्त बचता है वह नये विकास कार्य मे लगाया जाता है, धार्मिक और सामाजिक कार्यो पर खर्च होता है या विकास योजना के लिए कर्ज के रूप मे भी दिया जाता है।

इस समाज के सदस्य जीवन के हर तपके से आये हुए है। एक शिक्षक, एक किसान, एक किराना दूकान का सहायक है। समाज का एक सहायक व्यवस्थापक छापाखाने में उम्मीदवार था। दूसरा मजदूरो की शिक्षा-समिति का मत्री। अध्यक्ष स्थानीय मेथडिस्ट चर्च का पादरी है जो पुस्तकालय भी चलाता है। एक सदस्या महिला है जिनके दो बच्चे, वह रविवासरीयशाला की शिक्षिका तथा शाला की सेक्रेटरी हैं। इतना ही नही, फलो के मौसम मे वह स्वय प्रतिदिन छह घण्टे फलो को पैक करती हैं। एक सदस्य का उत्साह इतना है कि 'भोर' होने के पहले ही वह सब गायो को दुह लेता है। और दिन भर पैंकिंग शेड में काम करके रात को फिर गाये दुहता है। द्वितीय महायुद्ध के समय वह सिविल सर्वेंट था। आज भी वह अपना पूरा भत्ता नही उठाता है।

बच्चे भी शाला के समय के बाद प्रतिदिन कुछ काम करते है। वह मिहनताना उनके क्लब को दिया जाता है, जिसे वे स्वय लोकतत्र के अनुसार चलाते है। बच्चो के अपने जेबखर्च के अलावा इस फड से किताबें खरीदी गयी हैं।

छह अनाथ बालक जन्म से ही स्वीकृत कर लिए गये है। एक अनाथ बालिका तो यहाँ आने के पूर्व ११ घरो में रह चुकी थी। यह समाज अब

वेलिंग्टन कारागार का एक कैदी तथा पोरिरुआ पागलखाने का एक मरीज स्वीकार कर रहे हैं। एक शराबी भी आना चाहता है, अन्य बीमार या अड़चन में आये हुए व्यक्तियों को भी समय-समय पर आश्रय दिया गया है।

परिशिष्ट • ३

अनोखा प्रेम-प्रयोग

कुन्ती ने भगवान से विनय की, "हे भगवन् मुझे विपत्ति दे, ताकि तेरा स्मरण बना रहे"। "आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन। सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥–गीता। "दया धरम का मूल है, पाप-मूल अभिमान।

एम्मौस के एक सरल फ्रेंच पादरी अब्बे पिएरे मानवीय दुःख को दूर करने के लिए प्रेम के स्रोत का उपयोग अद्भुत प्रकार से कर रहे हैं। वे लिखते हैं —

"साठ वर्ष पहले,एक रात एक कैदी मेरे द्वार पर आया। सहसा परमात्मा ने मुझे एक नवीन प्रेरणा दी। "तुझे तकलीफ है तो आ जा, मैं तुझे मदद दूँगा" कहने की अपेक्षा 'देखो भाई, मुझ पर एक बड़ा भार है, मैं थक गया हूँ, क्या तुम मेरी मदद न करोगे ?" उद्गार मेरे मुँह से निकले और जिस (कैदी) ने अच्छी तरह रहने की आशा छोड़ दी थी, वही अब प्रेम करना सीख गया।

एक दिन एक महिला को अपने छोटे बच्चों सहित घर से निकाल दिया गया, वह रास्ते मे असहाय पड़ी थी। मैंने मन्दिर के गर्भागार से पवित्र वस्तुएँ बरामदे की कोठरी में लाकर रख दी और वह स्थान उसे रहने को दे दिया। मैंने सोचा कि भगवान् को गर्मी-जाड़े की क्या परवाह! इस तरह एकाकी–अनाथ–असहाय यहाँ आते गये और नये आनेवालो को भी स्वीकार कर उनके लिए परिश्रम करने लग गये। वहाँ गत वर्ष तक १०० परिवार हो गये हैं जो अपनी जीविका चलाते हैं।

यह प्रेम की बगावत सहसा इतनी बढ़ गयी कि उसके विस्फोट की धड़कन सारे संसार को जा लगी। आज दुनिया के कोने-कोने से गुप्तदान आते रहते हैं।

जब शोपित पीडितो को दया भावना से मदद दी जाती है पर सहाय्यकर्ता स्वय उस स्थिति का वरण करने को तैयार नही होते तव तक ऐसी दान-वृत्ति से विशेप परिणाम नही निकलता। कभी विपरीत परिणाम भी होता है। अव तो श्रीमानो की नही वल्कि निष्काचन "पागलो की", महापुरुषो की, सतो की, मसीहाओ की जरूरत है, जो प्रेम के अभाव से मरनेवाली इस दुनिया के दु खो के साथ तादात्म्य पाकर उसे वचावें और ईश्वर का साक्षात्कार पावें।

युद्ध में जिस तरह राष्ट्रो की सारी शक्ति बुद्धि सम्पदा एकत्रित कर राष्ट्र के वचाव में लगायी जाती है, उसी तरह एक विराट् आन्दोलन प्रेम और शान्ति के लिए करने का महान् क्षण अब आ गया।

परिशिष्ट : ४

ग्रामदानी गाँवों के लिए योजनाएँ

प्रत्येक ग्रामदानी ग्राम के सगठन के लिए हमारी योजना इस तरह होगी —

(१) ग्राम के स्तर पर एक ग्राम-सभा होगी (फिर जन-सख्या चाहे जितनी हो) जिसमे प्रत्येक परिवार (सयुक्त परिवार) से एक पुरुप या स्त्री सदस्य के रूप मे रहेगा।

(२) ग्रामसभा सर्वसम्मति से पॉच से नौ व्यक्तियो की एक सर्वोदय पचायत बनायेगी।

(३) इसी तरह की पाँच से दस तक ग्राम-सभाओ को एक सूत्र मे जोडनेवाली प्रवर-समिति रहेगी।

(४) फिरका स्तर पर भी एक समिति रहेगी जो (प्रादेशिक) सर्वोदय मडल की राय और मार्गदर्शन से काम करेगी।

फिरकातालुका, तहसील या परगना की भाँति कई गाँवो को मिलाकर वननेवाली एक इकाई।

(५) सर्वोदय मडल (ऊपर की सभी समितियो के प्रतिनिधि तथा अन्य सदस्य मिलाकर आचार्य विनोबा भावे की राय से बनाया गया प्रादेशिक सगठन)।

नोट—(१) उपरोक्त चारो समितियो में कम से कम एक चौथाई सदस्य स्त्रियाँ हो।

(२) सभी प्रस्ताव सर्वसम्मति से तय होने चाहिए।

२—सर्वोदय पंचायत के कार्य :

(१) ग्राम-सभा में निहित समस्त भूमि पर पूर्ण अधिकार और तत्सम्बन्धी व्यवस्था करना।

(२) (क) ग्राम-सभा के नियन्त्रण में सर्वोदय पंचायत को अधिकार होगा कि भूमि का सही ढग से उपयोग की व्यवस्था करना, कृषि में सुधरे हुए तरीको को काम में लाना, लोगो के लिए सन्तुलित खुराक की उपज को बढाने लिए योजना बनाना और स्वावलम्बन के आधार पर स्थानीय उद्योगो के लिए कच्चा माल जुटाना। यह अलग-अलग परिवारो से या कुछ परिवारो के समूह से या पूरे ग्राम के द्वारा परिस्थिति के अनुसार और ग्राम में जो सहयोग मिले उस आधार पर होगा। भूमि का वितरण इस प्रकार होगा कि प्रत्येक परिवार या परिवारो के समह को जमीन का रकबा, मिट्टी की उर्वरा शक्ति, पानी के स्रोत और उनकी काश्त कर सकने की क्षमता को देखकर भूमि वितरित कर देना।

(ख) चराई और गांव के दूसरे सार्वजनिक कार्यों के लिए कुछ भूमि अलग रख छोड़ना।

(ग) जिन परिवारो को भूमि बाँटी गई उनको काश्त की सुविधा के लिए तथा कारीगरो को नकद या वस्तु के रूप में कर्ज देना तथा उसकी वसूली करना।

(घ) व्यक्ति के लिए असभव ऐसे कृषि-सुधार कर दिखाना।

(ट) काश्त सुधार के लिए साधन, यन्त्रादि खरीदना तथा खड़े करना।

(च) आवपाशी के स्रोत तथा उनकी व्यवस्था ठीक रखना, वढाना और सुविधा दिलाना।

(छ) परती ऊसर या नयी जमीनो को काश्त में लाना।

(ज) जमीन का कटाव (क्षरण) से सरक्षण करना।

(झ) कृषि उत्पादन वढाने के लिए साधारणत योजना वनाकर उसकी जिम्मेवारी लेना और उसे पूरी कर दिखाना।

(ञ) लगान की अदायगी और अन्य सर्वसाधारण जिम्मेदारियाँ जैसे वढई, लुहार, वुनकर आदि कारीगरो का प्रवन्ध, अनाथ, असहाय का भरण-पोपण तथा मदिरशाला आदि सार्वजनिक सस्थाओ का सचालन-सवर्धन।

(ट) कृषि-मवेशी, भेड-वकरी, मुर्गी, मधुमक्खी, रेशम कोसा के कीडे आदि का विकास करने की योजना वनाकर अमल में लाना, जिससे सर्वोदयी ग्रामो का तथा वहाँ के निवासियो का भला हो।

(ठ) उसी हेतु आवश्यक गृह या कुटीर उद्योग, ग्रामोद्योग तथा छोटे पैमाने पर चलनेवाले धधे शुरू करके चलाना और वढाना।

(ड) सर्वोदय ग्राम में शैक्षणिक, वैद्यकीय, स्वास्थ्य विपयक और अन्य सार्वजनिक सस्थाओ को हाथ में लेना, निर्माण करना, सुस्थित रखना और सचालन करना।

(ढ) सार्वजनिक दूकान और भण्डार (कोठार) कायम करके चलाना (व्यक्तिगत व्यापार इष्ट नही है।)

३—ग्रामसभा के कार्य

वार्षिक उपज का हिस्सा तय करना जो ग्राम की सार्वजनिक भलाई के लिए अलग निकाल लिया जावेगा।

सूचनाएँ

(१) जमीन का लगान

जमीन का लगान नकद या अनाज के रूप में, जैसा सर्वोदय पचायत निर्णय

करे, वसूल किया जायगा। लगान पूरे का पूरा ही गाँव में रख लिया जावे जिससे शिक्षण, स्वास्थ्य आदि गाँव के काम चलाये जा सकें।

(२) कर्जभार

ग्रामदानी गाँव की जायदाद पर अदालती हकरसी कार्यवाहियाँ करने से साहूकारो पर रोक लगाना जिससे आवश्यक उचित कानून बनकर समस्या हल हो जाय।

एक कर्ज समझौता बोर्ड कायम किया जाय तो कर्ज की जाँच करके उनको उचित तादाद में घटावे। सर्वोदय मडल योग्य सज्जनो के जरिये साहूकारो से मिलकर उन्हें ऋण-भार उतारने को राजी कर ले। फिर से पुरानी स्थिति न आने पावे, इस दृष्टि से ग्रामदानी गाँवो में आवश्यकतानुसार उपयुक्त तरह की कृषि बैंक निर्माण करनी होगी जो सर्वोदय पचायतो को योग्य दरो पर तथा शर्तो पर कर्ज दे सके। सर्वोदय पंचायत गाँव में न रहनेवाले जमीनदारो से मिलकर उनकी जमीनो का प्रबन्ध हाथ में लेने के लिए उनको राजी कर ले।

४–शिक्षण

ग्रामदानी गाँवो में शिक्षण एक महत्व का कार्य होगा। इसमें पूर्व-बुनियादी, बुनियादी तथा प्रौढ शिक्षा रखी जावेगी। सरकारें आजकल मामूली शालाओ को बुनियादी शालाओ मे परिवर्तित कर रही है और समाज-शिक्षण का प्रसार भी कर रही है। इन कामो के लिए ग्रामदानी गाँवो का क्षेत्र ही उत्तम होगा। अत सरकारें परिस्थिति से लाभ उठाकर उपरोक्त कार्यक्रमो के लिए इन क्षेत्रो को प्रथम प्राधान्य दें। प्रशिक्षित शिक्षको तथा बुनियादी शालाओ के लिए साधन सामग्री की पूर्ति आदि इन क्षेत्रो में तुरत की जाय। कम्यूनिटी प्रोजेक्ट, सरकारी सस्थाएँ और गैर-सरकारी सस्थाएँ—सर्वसेवासघ, गाधीनिधि, कस्तूरबा ट्रस्ट, हरिजन सेवक संघ, खादी ग्रामोद्योग बोर्ड, सोशल वेलफेअर बोर्ड आदि—पूर्ण सहयोग देंगी। अत पचायतो के हाथो में ग्रामशालाएँ होने पर भी सरकार का फर्ज है कि बुनियादी शिक्षा की प्रगति करे। भारत जैसे स्वतत्र गणतन्त्र में शिक्षण में नागरिकता का प्रशिक्षण भी

शामिल रहेगा। गॉव के प्रत्येक वालिग व्यक्ति को पचायत का कार्य, सहयोग सस्थाओ तथा उन सिद्धान्तो पर काम का ज्ञान होना चाहिये। इस तरह का नागरिक प्रशिक्षण ही प्रौढ शिक्षण है।

५—सफाई

सर्वोदय पचायतें सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा रोग प्रतिबधक कार्य, जिसमे पीने के शुद्ध जल तथा सन्तुलित पोषक खुराक शामिल है, और एसे सारे कार्य जो बीमारियो और सासर्गिक व्याधियो को रोकने के लिए आवश्यक हो, करे।

६—ग्राम, छोटे तथा कुटीर उद्योग

ग्राम में खेती के जीवन से सलग्न वढई, लुहार, कुम्हार के काम, रस्सी बनाना, कातना, वुनना, पीसना, दाल बनाना आदि छोटे उद्योगो के जरिये, जिनकी जीविका आज किसी तरह चल रही हो, उन्हे तुरन्त सहायता पहुँचाना, यही पहला बुनियादी काम माना जावे। यह कार्य आवश्यक पूँजी, उनके औजार उपकरणो का तथा काम के तरीको का सुधार और उनके माल को लोकप्रिय बनाकर उनकी खपत द्वारा ही अच्छी तरह होगा। साधारणत स्थानीय कच्चे माल से इनका सम्वन्ध रहेगा। आर्थिक वुनियाद—एकत्रित गाँवो के समूह—मे एक उद्योग केन्द्र होना चाहिये, जहाँ सुधारे हुए उपकरण जैसे घानी, चक्की, कुम्हार के चक्र आदि उपलब्ध होगे और जो प्रदर्शनी के रूप मे भी रहेगे। हमे उन धधो को सबसे पहले प्रोत्साहन देना चाहिये जिनमें ज्यादा से ज्यादा लोग काम कर सके, जैसे कताई, बुनाई, ईट बनाना आदि। ज्यादा-से-ज्यादा लोगो को काम देने के खयाल से चरखे से अच्छा और अद्यतन कुछ नही है। इसीलिए सादा चरखा और अम्वर चरखा इस कार्यक्रम का केन्द्रबिन्दु हो।

७—सांस्कृतिक और मनोरंजक कार्यक्रम

ग्रामो के पुनर्निर्माण मे आज इसकी बहुत उपेक्षा की जाती है। जिन सास्कृतिक तथा मनोरजक कार्यक्रमो की जडें ग्राम क्षेत्रो में थी

उनका इन दिनो तेजी से लोप हो रहा है, यद्यपि हरएक स्वीकार करता है कि उनमे काफी खजाना था। कलापथक, नाटक, ग्रामीण खेल, प्रदर्शनी, उत्सव और राष्ट्रीय त्योहारो को ठीक ढग से मनाना आदि का अतर्भाव उनमे किया जायेगा। इनमे से कुछ तो ग्रामो के लिए और कुछ ग्रामसमूहो के लिए होगे जहाँ मेला आदि मौको पर लोग एकत्र होते हैं। इस वात का खयाल रहे कि ये कार्यक्रम खर्चीले न हो, फिर भी ग्रामीण-मानस के लिए पूरा अर्थ दर्शानेवाले हो। इन कार्यक्रमो के सगठनो को योग्य सस्थाओं में प्रशिक्षण दिया जाय।

८–न्याय तथा कानून और व्यवस्था

एक गाँव या ग्रामसमूह के लिए नीति मन्दिर ग्रामसभा द्वारा कायम हो। प्रत्येक को अपने गाँव में ही तुरन्त न्याय मिले। उन्हें सारे झगडो मे न्याय देने का अधिकार हो और सारे मामले ग्राम के स्तर पर ही सुलझाये जायें। सर्वोदय पचायत के प्रत्यक्ष मातहत शान्ति सेनाओ का सगठन हो और विधायक कार्य के लिए उनका उपयोग किया जाय। शान्ति सेना का एक प्रमुख कार्य यह होगा कि वह ग्राम के भिन्न-भिन्न स्थानो मे प्रहरी का कार्य करें और इसका प्रशिक्षण उन्हे उचित रूप से दिया जाय। न्याय मन्दिर में कुछ निश्चित व्यक्तियो की अपेक्षा, अनेक व्यक्तियो की नामावली रहे जिनमें से दोनो पक्ष इकरारनामा करके अपने लिए पच चुन ले। इन पचो का निर्णय अन्तिम माना जाय और न्यायालय (अदालत) पंचायती कानून के अनुसार उन्हें स्वीकृति दे दें।

९–सार्वभौम-प्रशिक्षण

उपर्युक्त कार्यक्रम को सफल वनाने के लिए हमें प्रशिक्षित कार्यकर्ताओ की आवश्यकता होगी। इनका प्रशिक्षण अविलब हाथ में लिया जाय। आम तौर पर प्रत्येक सर्वोदय पचायत के लिए एक कार्यकर्ता प्रशिक्षित करने का हमारा प्रयत्न हो।

परिशिष्ट . ५

सामुदायिक अधिकार का आलेख

तमिलनाड के धान्यागार तजौर जिले में एक सौ वर्ष पूर्व जमीन के समय समय पर पुर्नवितरण की जो खास प्रथा थी, उसका पूरा अवतरण हम यहाँ दे रहे हैं। तजौर के "डिस्ट्रिक्ट गॅजेटिअर" के परिशिष्ट में एक अग्रेज का यह अधिकृत निवेदन है। यह एक पुरानी पुस्तक है, जो एक मित्र के द्वारा हमें प्राप्त हुई और उसके पुनर्मुद्रण के लिए हम मद्रास शासन के ऋणी हैं।

इस लम्बे और वर्णनात्मक इकरारनामे (कबूलियत) से मालूम हो जायगा कि नन्निलम् ग्राम में गाँव की सारी जमीन पर गाँववालो को उपभोग का सामुदायिक अधिकार था, न कि कोई व्यक्तिगत मालकियत। ऐसा कहा जाता है कि निश्चित परिमाण मे तय शुदा परिश्रम करने पर हरएक को अपने हिस्से की जमीन की उपज मिल जाती थी। केवल उतनी ही जमीन व्यक्तिगत तौरपर रखी जा सकती थी जितनी कि आबादी में मकानो के साथ गृहवाटिका के लिए हाता के रूप में आवश्यक हो। जमीन का निश्चित इकाई (block) में विभाजन होता था, जिन्हें "करै" कहते थे। इन करैयो को फिर से विभाजित कर एक गुट को दिया जाता था। यह उपविभाजन ग्रामदान गाँवो मे अब प्रचलित की हुई प्रथा के सदृश ही था। जिसके सुपुर्द जमीन की जाती थी वह उसे जायदाद के जैसा बच नही सकता था, न काश्त का अधिकार विरासत से माना जाता था। तालाब बनाने तथा व्यवस्थित रखने और उनसे नहरें निकालने के लिए सावधानीपूर्ण भरपूर प्रबन्ध रखा जाता था।

व्यापारी तथा उनके द्वारा प्रसारित पैसे के व्यवहार व्यवस्थामय अर्थशास्त्र के पदार्पण से उक्त कबूलियत में दर्शायी उचित हिस्सेरसी

तथा सामुदायिक मिलकियत को चोट पहुची। लेखक मि० स्टोक्स (जो स्वय उस समय मौजूद थे) अपने विवेचन में लिखते हैं कि कर्ज के बलपर ग्रामीण व्यक्ति से, जिन्होने हिस्सा हथियाया था और जो इस इकरारनामा मे प्रस्तावित पुर्नवितरण का विरोध करते थे, वे तीनो जमीन-वाले व्यापारी थे। स्टोक्स आगे लिखते है "इन बाहरी लोगो को स्थानीय रिवाज एव परपरा के लिए आदर न था, न उस जमात के साथ विशेष सहानुभूति, जिसमे वे घुस गये थे।"

विनोबाजी का ग्रामदान आन्दोलन और ग्राम में सामुदायिक मालकियत का तथा अपनी-अपनी आवश्यकता के अनुसार, श्रम करके उत्पादन में हिस्से का उनका सुझाव, कोई निरी आदर्श कल्पना नही है बल्कि वह तो तजाऊर डिस्ट्रिक्ट गजेटिअर के महत्वपूर्ण आलेखपत्र (document) से सिद्ध एक शताब्दि पूर्व ,भारतीय ग्रामो में प्रचलित नियोजित सामूहिक जीवन की एक स्वस्थ प्रथा का पुनरुज्जीवन ही है।

तंजौर जिले में "करैयिड" प्रथा अर्थात् जमीन का नियतकालिक पुर्नवितरण

—एच० जे० स्टोक्स, सी० एस०, मेगापटम्

सन् १८०७ में तजोर में स्थायी बन्दोबस्त के आयोजन पर अपना निवेदन देने के लिए नियुक्त समिति को पता चला कि जिले में भू-धारणा (tenure) के अनुसार ग्राम निम्न तीन प्रकार से वर्गीकृत किये जाते थे —

१ समुदायम्	जिसमें	१७७४	ग्राम थे
२ पालभोगम्	"	२२०२	" "
३ एक भोगम्	"	१८०७	" "
	कुल	५७८३	ग्राम

अन्तिम दो से हमारा ताल्लुक नही है, क्योकि उनमें एक या अनेको के हाथो में जमीन थी। हमें तो केवल समुदायम् के बारे मे कहना है। यह वर्ग, जो कि मेरे खयाल से अत्यन्त प्राथमिक था, फिर

दो उपवर्गो मे विभाजित किया जावे। एक वह जिसमे जमीन की फसल का बँटवारा होता था और दूसरा वह जिसमे अस्थायी तौर पर जमीन ही बाँट दी जाती थी। 'समुदायम्' सस्कृत शब्द है और उसका अर्थ है "सब मिलकर" समूह, गिरोह, झुण्ड। जिन ग्रामो को यह उपमा दी जाती थी, उन ग्रामो में ग्रामीण समाज के सदस्य या मिरासदार 'जसी आज की उनकी सज्ञा है' सामुदायिक तौर पर जमीन काश्त करते थे और अपने-अपने हिस्से (पागु) के अनुसार फसल बाँट लेते थे। अर्थात् व्यक्ति को अलग से जमीन नही दी जाती थी। उसे जो कुछ स्वामित्व या अधिकार था वह फसल में एक या अधिक हिस्सो का। ऐसे ग्रामो में हरएक के पास उचित प्रमाण में पशुधन और साधन थे और वह अपने हिस्से का निर्धारित श्रम कर देता था। उसके कब्जे में केवल उतनी ही जमीन थी, जो आबादी के अन्तर्गत उसके मकान से सटे हाता या गृहवाटिका के रूप में थी। इस तरह की भूधारणावाले गाँव अब शायद ही रहे हो। और यदि अपवाद रूप हो तो उनकी यह प्रथा निश्चय ही शीघ्र मिटनेवाली है। फिर भी कितने ही गाँवो में आमतौर पर परती या हल्के दर्जे की जमीन, जिससे आय मिलना अनिश्चित है, अब भी सब ग्रामीणो द्वारा 'समुदायम्' निस्तार देह जैसी सबके लिए रखी और क्वचित् काश्त भी की जाती है। यह जमीन ऐसी ही है कि जिसे सबके लिए रख छोडना सुविधाजनक था या बाँट लेना लाभदायक न था। इन्ही में सामूहिक भूधारण की पुरानी प्रथा, जो किसी समय सार्वत्रिक थी, आज जिन्दा है।

पर चूंकि इस प्रथा में व्यक्तिगत उद्यमशीलता के लिए नाममात्र का प्रोत्साहन था और उसी कारण काश्त की लापरवाही से उत्पादन बहुत कम था अत कृषिसुधार के लिए अनिवार्य रूप से दूसरा कदम उठाना आवश्यक हो गया और वह यह कि हरएक को काश्त के लिए एक अलग टुकडा। इस प्रकार की प्रथा जिस गाँव में है उसे तमिल में "पसुन करै" या करैयिड गाँव कहते हैं। पसुन शब्द पुरानी तमिल में है और कन्नड क्रियापद 'पसु' विभाजन करना का समानार्थी है। दोनों

का मतलव 'खत-विभाजन' है। प्रथम-प्रथम इस तरह का निर्धारण नये सिरे से हर साल किया जाता था। परिवर्तन के प्रारभ में वही स्वाभाविक था। और जागीर प्रथा के अत्यन्त उर्वर क्षेत्रो में वह प्रत्यक्ष मौजूद है। मदरास के इर्द-गिर्द चिंगलपेट जिले में वह आज भी है। पर तंजोर जिले में इतनी अल्प अवधि में वारवार परिवर्तन के उदाहरणों की जानकारी नही है। मिरासदारो की इच्छा के अनुसार इस जिले में वन्दोवस्त की मियाद आठ से तीस वर्षो की होती है।

जमीन के पुर्नवितरण का तरीका एक उदाहरण से ठीक समझ में आयेगा। साधारणत वीस वेली (१ वेली—६ ६ एकड) के गाँवो में कही एक, तो कही सवा से तीन वेली की एक इकाई, जिसे पागु या हिस्सा कहते है, निश्चित की जाती है। अपने रकवे के अनुसार गाँव चार से दस "करै' या क्षेत्रो (blocks) में विभाजित किया जाता था और प्रत्येक करै में कुछ हिस्से या पागु रहते थे। इस तरह वीस वेली के गाँव में चार करै में पन्द्रह पागु हो सकते थे पर आमतौर पर एक करै में तीन हिस्सेदारो की जमीन के हिसाव से वारह हिस्सेदार होते थे।

जून, जुलाई या अगस्त मास में वीज वोने के पहले जमीन वितरण की क्रिया–करै–प्रारभ होती थी। सवसे पहले गाँव का पूरा क्षेत्रफल नापकर निर्धारित किया जाता था। फिर प्रत्येक करै के लिए भूधारियो में से एक प्रमुख चुना जाता था जिसे करैकरण या करैस्वामी कहा जाता था अर्थात् जो करै का व्यवस्थापक या मुख्य होता था। साधारणत वह गाँव के वडे हिस्सेदारो में से ही होता था। यद्यपि आजकल वह पढा-लिखा न हो तो वह पद शिक्षित छोटे के लिए दिया जाता है। करै के सव हिस्सेदारों की समति से वह नियुक्त किया जाता था, और नये वितरण तक वह अपने पद पर रहता था। इस अवधि में यदि वह मर जाय और अपनी जायदाद वेच दे तो उसका पद विरासत में या खरीददार को नही मिलता था। नयी नियुक्ति नही की जाती थी। पुराने पदाधिकारी करैकरण [उसे करैस्वन या गेतोकरण (सस्कृत-क्षेत्र, हिन्दी खेत, मराठी शेत) भी कहा जाता था] का नाम नये वन्दोवस्त तक वना रहता था।

करैंकरण के चुनाव के बाद और प्रत्येक करै के हिस्सेदार तय होने पर, हिस्सेदार करैंकरण के अनुसार चलने, अपने हिस्से को स्वीकार करने और आवश्यक सुधार दुरुस्तियाँ अमल में लाने तथा अन्य नित्य नैमित्तिक प्रबंध की जिम्मेदारी का इकरारनामा लिख देते थे। तब गाँव की जमीन पुराने 'धारण' का खयाल न रखकर नये सिरे से १५ हिस्सों में बाँटी जाती थी, जैसा कि उदाहरण के लिए हमने माना है। इन १५ हिस्सों को ४ करै में सम्मिलित कर देते थे। फिर भूर्जपत्र (ताडपत्र) (palm-leaf) कडजन के टुकडे जिन्हें 'करैयोलै' कहते थे, चार करै के लिए अलग-अलग तैयार किये जाते थे और उन पर हिस्सेदारों के नाम तथा उनके हिस्से की जमीन का रकबा लिया जाता था। फिर करैंकरण के नाम अलग-अलग लिखे हुए छोटे चार 'कागज' बनाये जाते थे और ये आठों एकत्र कर जमीन पर छोड दिये जाते थे। एक चार पाँच साल का बालक, जो अपढ ही रहता है, एक बडे के साथ एक छोटा कागज उठाने जाता था और इसी के अनुसार करै और करैंकरण का निश्चय हो जाता था।

इस तरह चिट्ठी द्वारा तय करने का यह तरीका किसी सार्वजनिक स्थान जैसे मन्दिर, मठ, ग्राम, चौल्ट्री (पचायतघर) आदि में अमल में लाया जाता था। ग्राम के नाम के आद्याक्षर के अनुसार अनुकूल नक्षत्र से शुभ मुहूर्त निकालकर उस दिन वह होता था। और यह सारा कारोबार धार्मिक आचार के जैसा था। मन्दिर में वहाँ के देवता को साक्षी रखकर या अन्यत्र जाफरान (केशर) से ग्रामदेवता (पिलैयर) बनाकर उसके सामने जितने हिस्सेदार उतने ही नारियल चढाकर, ताबूल रखकर, पूजा समाप्त होने पर चिट्ठियाँ डाली जाती थी। फिर हर एक करैंकरण के सुपुर्द 'कडजन' किये जाते थे और हिस्सेदार तथा उनके हिस्से की जमीन का नाप होकर सारी जमाबदी ग्रामज्योतिषि, अध्यापक या पुरोहित—जोकि सबके समान मित्र माने जाते थे—के पास विश्वस्त के तौर पर रखें जाते थे। इतना ही नही अधिक सुरक्षितता के खयाल से प्रत्येक हिस्सेदार (मिरासदार) अपने लिए भी इन महत्व-पूर्ण आलेखों की प्रतिलिपि लेकर रख सकता था।

इस करैयिड कार्यक्रमोत्सव के करीब एक हफ्ते वाद प्रत्येक करैकरण अपने मिरासदारो के लिए क्षेत्र (block) की जमीन का वँटवारा कर लेता था। यह वँटवारा या तो सर्वसमति से या चिट्ठी डालकर किया जाता था। यह काम न कोई निश्चित स्थान पर ही होता था, न उसके लिए कुछ विधि किया जाता था। प्रत्येक मिरासदार उसे मिली हुई जमीन का कब्जा अपने पास रखता था।

जानने के लिए जाँच के उत्सुक पाठको को स्पष्ट रूप से समझने के लिए यहाँ करैयिड धारण की प्रथा को विस्तृत दिया जा रहा है। उपर्युक्त आलेख मिरासदारो द्वारा स्वीकृत इकरारनामो में से एक है जो चिट्ठी डालने के पूर्व लिखे जाते है।

"यह वही इकरारनामा है जिसके जरिये हम देवव्यान और अन्य नन्निलम ग्राम के निम्नलिखित हस्ताक्षर करनेवाले मिरासदारो ने सर्व-समति से तिथि २२ अनी रक्ताक्षी अब्द (४ जुलाई १८६४) को लिखा।

उपरोक्त गाँव के ९ पाँगु (हिस्सो) के सब मिरासदार नमी (wet) आदि जमीनो को करैयिड प्रथा के अनुसार विभाजित करके आचन्द्रार्क छोडकर उपभोग कर रहे है। (मिरासदार-मिरास के हकदार, मिरास-स्वामित्व के अधिकार सहित जमीनधारण), (आचन्द्रार्कम्, आ=जवतक चन्द्र, अर्क=सूर्य है—सदा के लिए, यावच्चन्द्रदिवाकरी)। हमने सरकार से कुछ वर्ष के लिए 'अमानी' प्रवध, कुछ वर्ष अन्दाजिया पद्धति और कुछ वर्ष अनाज या नकद लगान की स्वीकृति ले ली है। गत वर्ष के एक प्रभाव (वर्ष) पूर्व से ईश्वर (वर्ष) तक (कुल ११ वर्ष) नौ करै का करैयिड चलता रहा। विक्रम मे सोंदरी (सर्वधारी), अर्थात् ८ वर्ष तक ६ करै का करैयिड था और विरोधी से विलम्बी संवत्सर (९ वर्ष) फिर से ९ करै का करैयिड चला। पर यह महसूस कर कि अल्प अवधि के करैयिड से कोई उन्नति न हो सकी और यह सोचकर कि लम्बी मियाद के लिए करैयिड चलाया जाय तो उन्नति हो सकेगी, हमने ६ करै का करैयिड संवत्सर रक्ताक्षी मे विकारी से चित्रै २५-३० वर्ष के लिए चलाया है। जमीन के अत्यधिक छोटे टुकडे (होने के)

कारण गाँववाले स्थानीय रिवाजो के अनुसार उनकी दुरुस्ती नही कर सके। वधान वांधने में (लापरवाही रही) वाँध और सीमाएँ ठीक नही रख पाये। नहर और नालियाँ ठीक तरह से साफ नही की गयीं, नजी (आवपाशी के) खेत में चाहे जितनी खाद या पत्तियाँ डालने से भी फसल को कुछ भी लाभ न हो सका। अधिकाश समय मिरासदारो की हालत अच्छी न थी अत उन्हें काफी कठिनाइयाँ और तकलीफ सहन करनी पडी।

अत ऐसी (तकलीफ) फिर से न हो और लोगो की हालत सुधर जाय तथा सरकारी लगान पूर्णरूप से बिना झझट के अदा किया जा सके और चूंकि इस वर्ष नये करैयिड का समय है, हमने लम्वी अवधि का करैयिड रखने का प्रयत्न किया है और वर्तमान वितरण के अनुसार करने का सोचा है। इस हेतु हमने तहसीलो में दरख्वास्त दी है कि हमें आवश्यक सहायता दी जावे। तहसीलदार के समक्ष सारे मिरासदार एकत्र हो गये है और उनसे विनय की है।

नीचे दस्तखत करनेवाले वहुसख्यक मिरासदारो के अलावा कनगसभेई चेट्टि, अघु चैट्टि, रामसामी चेट्टी और वेंगाघयन, जिन्होने मिरासदार चिन्ना किश्नय्यन से शिकमीपर जमीन ली है तथा $\frac{1}{1}\frac{5}{6}$ पागु पर जिनका अधिकार है, सारे गाँव के साथ चलने से इन्कार कर रहे है। उनकी मनशा हमें तकलीफ देने की और झगडे की है। अपने मनमाने इन चार व्यक्तियो ने अलगाव की वृत्ति से घोषित कर दिया है कि रिवाज के आपस में समझौते के विपरीत चिट्ठी डालने के तरीके को छोडकर, उन्हें चारो को जमीन के भिन्न-भिन्न प्रकार का खयाल न करते गाँव की एक तरफ उत्तम जमीन में हिस्सा दिया जाय या उन्हें भिन्न-भिन्न स्थानो में छाँटकर जमीन दी जाय। यदि ऐसा न हुआ तो वे करैयिड को स्वीकार न करेंगे और जमीन पर का मौजूदा कब्जा न छोडेंगे।

चू कि उन सव मिरासदारो को इजाजत दी गयी है, जो करैयिड करने को एक मत है, अत सारे मिरासदारो ने मिलकर हस्ताक्षर कर दिये हैं और उन्नति के लिए आवश्यक दुरुस्तियाँ ठीक ढग से करने के उद्देश्य से,

ऊंची नीची सतह वाली या अन्य जमीनो का नापकर देखकर वर्गीकरण किया है और कम लगानवाली हलकी जमीन, जो गाँव की सेवा के लिए व्यस्था की जाती है और जो खरीदी जाती है, उसी तरह जो जमीने, मन्दिर, ब्राह्मण, कारीगर और इसी तरह के अन्य के लिए अलग रखी जाती हैं जिनका व्यक्ति और सस्था वशपरपरा से उपभोग करते आये हैं, इन सबको छोडकर बची हुई नम जमीन का वर्गीकरण कर चार करै में हिस्से निम्न प्रकार निर्धारित किये हैं :—

१ सुन्दरप्पय्यन की करै

नाम	आठवाँ हिस्सा
उपर्युक्त सुन्दरप्पय्यन	६॥
वेंकटाचलयन	।
जोड	६।।। अष्टमाश
आगे चालू	६।।।
सुब्बरायन	॥
गोपाल कृष्णय्यन	॥
सुप्पुकुट्टि अय्यन	॥
कृष्णय्यन	२ॐ
अम्मन सुब्बयन	१
चिन्नाम्मल	१
रामसामीअय्यन	३।८
वेंकटाचल चेट्टि	२॥
कुल	१६ अष्टमांश

२ लनैजप्पय्यन की करै

कुल (दम हिस्से)	१६ अष्टमाश

(इसी प्रकार दो अन्य करै जिनमें क्रम से आठ और पांच हिस्से दम हैं)

चारों करै के लिए जुमला	६४ अष्टमाश पागु (हिस्से)

(इसके अलावा) मूरी देवय्यन का छोटा भाई शिवरामय्यन को ॥

अष्टमाश हिस्सा सब मिलाकर ६५।। (?) ६४।। अष्टमाश (हिस्से) हैं। इस तरह पागु पद्धति से विभाजन किया गया है। अत इन चार करै में, करैयौसी (कडजन का टुकडा जिसमें जमीन का लेखा रहता है) के मुताविक चिट्ठियाँ डालने पर अपने हिस्से में आयी करै के नमी के पागु पर मिरासदार का उपभोग अधिकार इस वर्ष से प्रारम होकर पचीस वर्षो तक न्याय्य और उचित वितरण के अनुसार होगा।

यह भी आवश्यक है कि इस गाँव में नादुरुस्त मदिरो की दुरुस्ती कर उनका पुनरुद्धार किया जाय। इसलिए पूर्व में शेम्बदायन नामक नजी जमीन से १५ मा ३१ गुली, देवदानम् नजी में १२ मा ४० गुली, अगलम्मन कोविलपटम में ९ मा ८० गुली कुल मिलाकर १ वेली १७ मा ५१ गुली शामिल शरीक शिकमी पर सात साल दी जावेंगी और शिकमी किसान का हिस्सा छोडकर बाकी उपज इस तरह दी जावेगी —

दो वर्ष की	आय	रामस्वामी के	मन्दिर को	
,,	,,	कृष्ण स्वामी	,,	१ वेली—६ ६एकड
एक वर्ष	,,	ईश्वरन्	,,	१ मा— ३३गुली
,,	,,	अय्यनार	,,	१ गुली— ००३३
,,	,,	पिल्लैयार	,,	

"उपर्युक्त पद्धति से सात साल उक्त मदिरो को आय दी जानी चाहिए। इनका सरकारी लगान ६४।। अष्टमाश हिस्सो पर हिस्सेरसी से लग जायेगा। इसके वाद प्रजोत्पत्ति वर्ष से यह जमीन उपर्युक्त मदिरो की सेवा में लगेगी और उचित तथा न्याय्य वितरण के अनुसार वर्तमान करैयिड की अवधि तक भिन्न व्यक्तियो के उपभोग में रहेगी जिनके सुपुर्द वह होगी। उपर्युक्त जमीन की उपज उपर्युक्त मदिरो की दुरस्ती के अतिरिक्त अन्य किसी तरह खर्च न की जा सकेगी। चूँकि १८० गुली जमीन उक्त कृष्णप्पा नायक के अष्टमाश हिस्से में आती है जो कि कनगस के चेट्टि के कब्जे में है, कृष्णप्पा नायक के हिस्से से उतनी जमीन घटा दी जावेगी। वह कनगसमै पर दावा कर जमीन प्राप्त करे। अन्य हिस्सेदारो को उसमें कोई दिलचस्पी नही है।

पुजई (जरायत खुश्क) जमीनें पहले आचन्द्राकंम् अर्थात् स्थायी तौर

पर वितरित की गयी थी और पूर्वोक्त ६४।। अष्टमाश हिस्सेवाले मिरास-दारो ने उनमें से कुछ जमीनो मे आवपाशी का प्रवध कर लिया है। इस तरह का प्रवन्ध जिन लोगो ने किया उनके उपभोग में ही ये नयी आवपाशी जमीनें, आवपाशी का लगान देते जाने पर रहेंगी। वची हुई खुश्क जमीनो मे से नदी के किनारे की तथा कवली नहर के इस और उस तरफ की जमीनो को नापा जायेगा और विपमताओ का निराकरण वाहरी जमीनो के वितरण में ही किया जायगा तव उस जमीन का उपभोग पुरानी करैयोलै के मुताविक लिया जा सकेगा।

किलवेली (नाम से परिचित) जमीन, कवली नहरकिनारे की नम (मर्द, पनाली) जमीन, पुडुचेरी वेली खुश्क जमीन, स्थायी तौर पर वितरित खुश्क जमीन नापकर उनकी विपमताएँ दूर करनी होगी। जिसे कम जमीन है वह, जिसके पास (हिस्से से) ज्यादा जमीन होगी, उससे लेगा।

किलवेली नदी किनारा, नदी के पात्र मे स्थित जमीनें, खुश्क और अन्य जमीनें नापकर पूर्वोक्त इकरारनामा में दर्ज की जायें और अखड टुकडो (Compact blocks) में इस वर्ष "तै" मास मे पुर्नविभाजित की जायें। उन जमीनो मे जो 'आदि' (मौजूदा) फसलें हो उन पर लगान वैठाया जाय और उसे हिस्से के मुताविक मिरासदारो में वाँट दिया जाय। उसी तरह खुश्क, नदीपात्र की, ऊसर परती या अन्य जमीनो पर जिन पर अवतक लगान तय न हुआ हो वढनेवाले वृक्षो का लगान तय करके हिस्से के अनुसार दाखिल किया जाय।

कान्त करनेवाले और अन्य व्यक्तियो के लिए जैसा उचित हो, पारिया रास्ता, चक्लर्स रास्ता, पुत्तार (नदी) के उस पार की आवादी पुरानी स्थायी वदोवस्त प्रथा के अनुसार नापकर जो अवतक विपमता पैदा हो गयी हो उसे मिटाया जाय। किलवेली जमीनो तथा कवली नहर के दोनो ओर की जमीनो में जिनके पास ज्यादा हो वह उसको देगा जिसके पास कम है।

आवपाशी जमीनो की शामिल शरीक मेडें, कवली नहर के दोनो किनारे, अन्य सव जमीनो की सम्मिलित सीमाएँ तथा आवपाशी और जलनिकास

नालियाँ, सम्मिलित सबके खर्च से साफ, मजबूत और सुव्यवस्थित रखी जावेंगी।

और चूंकि अब पूर्वोक्त पद्धति से जमीनो का वितरण हो चुका है, अपने-अपने हिस्से के अनुसार सरकारी लगान देना चाहिए। परती खुश्क जमीनो तथा आवपाशी के योग्य जमीनो का सरकारी लगान, जोकि अब व्यक्तिगत तौर पर मिरासदारो पर लगाया है, अपने-अपने हिस्से के अनुसार देना होगा।

वितरित जमीनो को अब उपभोग के अनुसार सरकारी कागजो मे दर्ज किया जाय।

जो जमीनें व्यापारी तथा कारीगरो को रखी गयी हैं, उपर्युक्त हिस्सो के अनुसार उपभोग के लिए तकसीम कर दी जावें, और उसी तरह उनका सरकारी लगान अदा किया जावे।

और सारी जमीनो के लिए प्रथा के अनुसार आबपाशी और जलनिकास का प्रबध रहेगा।

यदि पानी की कमी हुई तो एक इकरारनामा लिखा जावे जिसके अनुसार कौन कब कितना पानी नहर से बारी-बारी से लेगा यह बताया जावे और उसके अनुसार पानी दिया जावे। किदरन कोडन उप-नहर के पूर्व की ओर एक दोहरा बाँध बनाया जावे और बिगडे कदम्बन क्षेत्र में पानी ले जाया जावे।

मुलैमगलम नहर से एक उपनहर खोदी जावे और उपरोक्त कदम्बन जमीन को पानी पहुँचाया जाय। अन्य सब जगह इकरार के मुताबिक आवपाशी की जावे। कवली नहर पर एक बाँध डाला जावे और वहाँ से मन्दिरो की जमीन को पानी पहुँचाया जावे।

उपर्युक्त जमीनो में से कुछ भी हिस्सेदार द्वारा सीधा बेचा न जा सकेगा। और यदि वेचा गया तो वह बिक्रीनामा बेकार नाजायज होगा। ग्राम में चलनेवाले अन्य सारे मामलो में पूर्व इकरारनामो मे दर्ज प्रणाली चलायी जावेगी। इसलिए हमने एकमत से अपनी स्वीकृति दे दी है।"

उबानेवाला होते हुए भी यह आलेख पूरा का पूरा देना उचित जँचा, क्योंकि यह जमीनवितरण की प्रथा पूरी तौर से समझा देता है। इस प्रथा

को धीरे-धीरे छोड़ने के जो कारण हुए है उनकी ओर भी वह अगुलि-निर्देश करता है। नदी के किनारे नहर, तया अन्य दुरुस्तियाँ और सुधारो की उपेक्षा ही इसका कारण है। इसके अलावा जमीन का अस्थिर और जल्द होनेवाला वदोवस्त तथा वाहरवालो का इस प्रथा मे प्रवेश भी एक कारण है। उन नामो से यह समझ में आ जायेगा कि जिन तीन लोगो ने जमीन के पुनर्वितरण से इन्कार किया, वे चेट्टी अर्थात् व्यापारी थे और पैसे के कर्ज के वल पर उन्होने जमीन पर या हिस्से पर कब्जा किया था। इन वाहरी लोगो को गाँव की प्रथाओ के लिए कोई आदर न था, और न जिस छोटे समाज में वे घुस गये उसके लिए सहानुभूति। इसीलिए इकरारनामा के अन्त में किसी भी प्रकार की जमीन या उसके हक की विक्री के लिए मुमानियत।

—मैन्युअल ऑव तजोर डिस्ट्रिक्ट, बाई
टी वेंकास्वामी राव से साभार प्राप्त।

सर्वोदय और भूदान-साहित्य

(विनोबा)

	रु० पैसा
ाविचन	१— ०
-विचार	१—५०
र्ता-पाथेय	०—५०
ा	०—५०
ा-प्रवचन (सकलन)	०—७५
न् के दरबार में	०—१३
यको से	०—५०
ांव में स्वराज्य	०—१३
य के आवार	०—२५
नो और नेक बनो	०—१३
े लिए आरोग्य-योजना	०—१३
रियों का आवाहन	०—१३
का मुकाबला	०—१९
व-चिन्तनिका	०—७५
-गरगा (पाँच खण्डों में)	१—५०
ाति की दिशा में	०—२५
ा	०—१३

(धीरेन्द्र मजूमदार)

ामुक्त समाज की ओर	०—५०
तालीम	०—५०
ाज	०—२५
दी का खतरा	०—५०

(श्रीकृष्णदास जाजू)

ादान-यज्ञ	०—५०
ार-शुद्धि	०—३८

(दादा धर्माधिकारी)

य-दर्शन	३— ०
ीय क्रान्ति	०—२५
योग की राह पर	०—२५
ा का अगला कदम	०—२५

(अन्य लेखक)

	रु० पैसा
गाँव-आदोलन क्यो ?	२—५०
छात्रो के बीच	०—३२
सर्वोदय का इतिहास और शास्त्र	०—२५
श्रम-दान	०—२५
विनोबा के साथ	१— ०
पावन-प्रसग	०—५०
भूदान-आरोहण	०—५०
भूदान-यज्ञ क्या और क्यो ?	१— ०
भूदान-गगोत्री	२—५०
सफाई विज्ञान और कला	०—७५
क्रान्ति की पुकार	०—१९
पावन-प्रकाश (नाटक)	०—२५
ो-सेवा की विचारधारा	०—५०
गाधी एक राजनैतिक अध्ययन	०—५०
सामाजिक क्रान्ति और भूदान	०—३२
गाँव का गोकुल	०—२५
ब्याज-बट्टा	०—२५
भूदान-दीपिका	०—१३
साम्ययोग का रेखाचित्र	०—१३
पूर्व-बुनियादी	०—५०
सन्त विनोवा की आनन्द-यात्रा	०—५
सुन्दरपुर की पाठशाला	०—७५
सर्वोदय-भजनावलि	०—२५
सत्सग (विनोबा की मुलाकातें)	०—५०
सर्वोदय-पदयात्रा	१— ०
भूदान का लेखा (आँकडो में)	०—२५
राजनीति से लोकनीति की ओर	०—५०
जीवन-परिवर्तन (नाटक)	०—२५
आज का धर्म	०—५०
विनोबा-सवाद	०—३८